TEXT CROSS WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY
OU_178935
UNIVERSAL LIBRARY

प्रस्तावना

यह बात निर्विवादरूप से मानी जा चुकी है कि कथा-साहित्य के क्षेत्र में रूसी लेखक संसार के अन्य सब देशों के लेखकों से बढ़े-चढ़े रहे हैं, और रूसी लेखकों में भी डास्टाएव्सकी, टाल्सटाय और टुर्गनिव का स्थान सबसे आगे है। प्रस्तुत रचना टाल्सटाय की सर्वश्रेष्ठ कृति 'आना केरेनिना' का संक्षिप्त छायानुवाद है। कुछ विद्वानों की सम्मति में 'आना केरेनिना' कला की दृष्टि से संसार का सर्वोत्तम उपन्यास है। आना के समान आदरणीय, रहस्यमयी नारी का जो मार्मिक, रोमाञ्चकर, मनोवैज्ञानिक और साथ ही जीवन की गहन वास्तविकता से ओत-प्रोत चरित्र-चित्रण टाल्सटाय ने किया है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है।

१

आब्लान्सकी-परिवार में बड़ी गड़बड़ी मची हुई थी। पत्नी को इस बात का पता लग गया था कि उन लोगों की भूतपूर्व फ्रेंच गवर्नेस के साथ उसके पति का अवैध सम्बन्ध स्थापित है। उसने अत्यन्त क्रुद्ध होकर स्पष्ट शब्दों में इस बात की घोषणा कर दी थी कि जिस मकान में उसका पति रहेगा, उस मकान में वह कदापि नहीं रहेगी। तीन दिन से यही परिस्थिति चली आ रही थी, जिसके कारण केवल पति-पत्नी ही नहीं, बल्कि घर के सब लोग कष्ट पा रहे थे। परिवार में रहनेवाले सभी व्यक्ति यह अनुभव कर रहे थे कि वे लोग किसी घर में नहीं, बल्कि एक मुसाफ़िरख़ाने में हैं। घर की मालकिन (आब्लान्सकी की पत्नी) सब समय अपने कमरे में बन्द पड़ी रहती थी; उसका पति दिन भर घर से बाहर रहता था; अँगरेज़ गवर्नेस घर के प्रबन्ध-कर्त्ता से उलझती रहती थी, और उसने अपनी एक परिचित स्त्री को एक पत्र लिखकर उससे यह पूछा था कि किसी दूसरे स्थान में उसकी नौकरी का प्रबन्ध हो सकता है या नहीं। रसोइया दो दिन पहले ठीक रात्रि-भोजन के समय घर छोड़कर चला गया था, और अभी तक लौटा नहीं था। रसोई करनेवाली नौकरानी और कोचमैन ने नौकरी छोड़ने की नोटिस दे दी थी।

पत्नी से मनमुटाव होने के तीसरे दिन प्रिन्स स्टीफ़ेन आर्काडेविच आब्लान्सकी उर्फ़ स्टीवा प्रातःकाल अपने नियमित समय पर—आठ बजे—सोकर उठा। आज वह अपनी पत्नी के पास सोया हुआ नहीं था, बल्कि अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में एक चमड़े से बँधी हुई स्प्रिंगदार आरामचौकी पर लेटा हुआ था। उसने करवट बदलकर, एक तकिये को बग़ल से दबाकर फिर एक बार सोने की चेष्टा की। पर सहसा उसने आँखें खोलीं और उठ बैठा।

उसने एक बड़ा 'मधुर' स्वप्न देखा था और उसकी अस्पष्ट स्मृति उसके मन में एक मीठी मादकता का सञ्चार कर रही थी। स्वप्न की

प्रत्येक घटना को ठीक तरह से याद करने की चेष्टा करता हुआ वह मन ही मन कहने लगा—"हाँ, तो वह स्वप्न क्या था, जो मैंने देखा? हाँ, हाँ, ठीक है, याद आगया—अलाबिन डार्मस्टाड में एक भोज दे रहा था—नहीं, अमेरिका में दे रहा था। हाँ, हाँ, ठीक है, डार्मस्टाड स्वप्न में अमेरिका के ही अन्तर्गत आगया था। शीशे के टेबिलों पर बढ़िया-बढ़िया व्यञ्जनों की तश्तरियाँ क़रीने से लगाई जा रही थीं। टेबिल सजीव प्राणियों के समान एक बड़ा सुन्दर प्रेम-रस-पूर्ण गीत गा रहे थे। शराब से चमकते हुए स्फटिक-पात्र भी सजाकर रक्खे गये थे। वे स्फटिक-पात्र छोटी-छोटी सुन्दरी कुमारियों के समान सजीव बनकर नाचने लगे थे और उनके विभ्रम-विलास और हाव-भाव से उपस्थित जनता प्रेमाकुल हो रही थी। और भी बहुत-सी सुन्दर-सुन्दर चीज़ें मैंने स्वप्न में देखी थीं, जो अब याद नहीं आतीं।"

स्वप्न की स्मृति से उसकी आँखें एक पुलक-भरे हर्ष के कारण चमकने लगीं। इतने में पर्दे के भीतर से होकर प्रकाश की एक किरण-रेखा उसके मुख पर आ लगी। पाँव नीचे लटकाकर उसने स्लीपर पहने—वे स्लीपर जिन पर उसकी स्त्री ने अपने हाथ से काम किया था—और नौ वर्ष के नियमित अभ्यास के अनुसार उसने ड्रेसिंग-गाउन के लिए हाथ बढ़ाया, जिसे उसकी स्त्री उसके पलँग के पास ही टाँगकर रख दिया करती थी। पर जब उसे ड्रेसिंग-गाउन न मिला, तो अकस्मात् उसे याद आया कि वह अपनी पत्नी के कमरे में नहीं, बल्कि अपने लिखने-पढ़ने के कमरे में सोया हुआ था। स्वप्न की शेष स्मृति के कारण जो मुसकान उसके ओंठों में खेल रही थी, वह तत्काल लुप्त हो गई, और उसे याद आया कि अपनी पत्नी से उसका मनमुटाव हो गया है।

वह व्याकुल वेदना से कराह उठा—"उफ़! उफ़! उफ़!" अपनी तत्कालीन जटिल परिस्थिति-सम्बन्धी सब बातें उसके मन में एक-एक करके जग उठीं, और अपने अपराध की कल्पना से वह अत्यन्त दुःखित हो उठा। वह सोचने लगा—"नहीं, वह मुझे अब किसी प्रकार भी क्षमा नहीं करेगी। मेरा अपराध स्पष्ट प्रमाणित हो चुका है। फिर भी—फिर भी मैं दोषी नहीं हूँ! उफ़! उफ़!" उसे झगड़े से सम्बन्ध रखनेवाली छोटी से छोटी बात भी स्पष्ट रूप से स्मरण होने लगी। वह थियेटर देखकर अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक जब घर लौटकर आया, तब साथ में अपनी पत्नी के लिए एक बहुत बड़ी नाशपाती लेता आया था। पर उसके आश्चर्य की सीमा न रही जब उसने

न तो ड्राइंग-रूम में और न लिखने-पढ़ने के कमरे में ही उसे देखा। इधर-उधर खोजने के बाद अन्त में वह सोने के कमरे में बैठी मिली। उसके हाथ में वह मनहूस पत्र था जिसने उसके गुप्त प्रेम का सारा भेद उसकी पत्नी के आगे खोल दिया था।

सदा चिन्ता के भार से ग्रस्त और पारिवारिक काम-धंधों में व्यस्त रहनेवाली उसकी वह सरला पत्नी—डाली—उस पत्र को हाथ में लेकर स्तब्धभाव से बैठी थी। उसके हताश मुख से भय और क्रोध के चिह्न एक साथ प्रकट हो रहे थे। पति को देखते ही वह नरम पड़ी। उसने पत्र की ओर संकेत करके उससे पूछा—"यह क्या है, यह? बताओ?"

आब्लान्सकी ने उस संगीन प्रश्न का उत्तर जिस ढंग से दिया था उसकी ग्लानि अभी तक उसके मन में वैसी ही बनी हुई थी। पत्नी के उस प्रश्न पर न तो उसने किसी प्रकार की आपत्ति का भाव प्रकट किया, न उस अपराध को उसने अस्वीकार किया जो उस पर संकेत-द्वारा आरोपित किया जा रहा था। किसी बहानेबाजी से वह उस बात को टाल भी न सका। पश्चात्ताप प्रकट करके उसने क्षमा-याचना भी नहीं की। वह केवल अपनी स्वाभाविक, सरस और सदय मुसकान मुख में झलकाकर चुप हो रहा। उस मूर्खतापूर्ण मुसकान के कारण वह अत्यन्त दुःखित और लज्जित हो रहा था। डाली उस मुसकान में अपराध की स्वीकृति का स्पष्ट चिह्न देखकर आतंक से काँप उठी और तीव्र वेदना से विह्वल हो उठी। भयंकर, निष्ठुर शब्दों में पति का तिरस्कार करके वह कमरे से बाहर निकल गई। तब से उसने अपने पति से मिलना एकदम छोड़ दिया था।

आब्लान्सकी सोचने लगा—"सारा दोष मेरी उस मूर्खतापूर्ण मुसकान का था। पर अब मुझे क्या करना चाहिए? मैं क्या कर सकता हूँ?" पर उसके अन्तःकरण ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया।

२

आब्लान्सकी में कम से कम इतनी सचाई अवश्य थी कि वह अपने आपको धोखा नहीं दे सकता था। पारिवारिक परिस्थिति की जटिलता के कारण उसे दुःख भले ही हो रहा हो, पर अपने आचरण के लिए उसके मन में किसी प्रकार का पश्चात्ताप नहीं हो रहा था। इस बात के लिए उसे तनिक भी ग्लानि नहीं हो रही थी कि उसके समान सुन्दर, स्वस्थ और रसिक व्यक्ति अपनी पत्नी से प्रेम नहीं करता—अपनी उस पत्नी से, जो आयु में उससे केवल एक वर्ष छोटी थी (अर्थात् तैंतीस वर्ष पार कर चुकी थी), और जो दो मृत तथा पाँच जीवित बच्चों की मा बन चुकी थी। उसे दुःख केवल इस बात का था कि वह अपने आचरण को अपनी स्त्री से छिपाने में असमर्थ रहा। यह होने पर भी, अपनी स्त्री और बाल-बच्चों के प्रति उसके मन में बड़ी करुणा जग रही थी, और स्वयं अपने ऊपर उसे तरस आ रहा था। उसे यदि यह मालूम होता कि उसकी पत्नी उसके पर-स्त्री-प्रेम का भेद खुल जाने से इतनी दुखी होगी, तो वह पहले से ही इस सम्बन्ध में विशेष सावधानता से काम लेता। पर उसकी यह धारणा थी कि डाली उसके गुप्त-प्रेम से अपरिचित नहीं है, और बीच-बीच में इस सम्बन्ध में परोक्ष रूप से कटाक्ष भी करती जाती है। किन्तु यह उसका भ्रम निकला; डाली को पहले अपने पति के प्रति तनिक भी सन्देह नहीं था। इसी कारण प्रथम बार जब उसके आगे भेद खुला, तब उसे बड़ा भयंकर धक्का पहुँचा। आब्लान्सकी अपनी पत्नी को केवल अपने बच्चों की आदर्श माता, और अपने परिवार की आदर्श गृहकर्त्री के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझता था। वह सोचता था कि डाली अब एक प्रकार से बुड्ढी हो चली है, उसका स्वास्थ्य और सौन्दर्य नष्ट हो गया है, और घर के काम-धन्धों के अतिरिक्त और किसी विषय का ज्ञान उसे नहीं है; इसलिए उसे स्वभावतः अपने पति के प्रति उदार होना चाहिए, और उसका कोई भी आचरण चाहे नैतिक दृष्टि से कैसा ही निन्दनीय क्यों न हो, उसे चुपचाप सहन कर लेना चाहिए। पर आज उसने जाना कि डाली का मनोभाव इससे बिलकुल उलटा है।

हताश होकर वह मन ही मन कहने लगा—"उफ़, कैसी भयंकर परिस्थिति है ! आज तक कैसे सुख और शान्ति से हमारा पारिवारिक जीवन बीत रहा था ! वह अपने बाल-बच्चों को लेकर प्रसन्न और सन्तुष्ट थी, और घर के काम-धन्धों में व्यस्त रहकर अपने जीवन को सफल समझती थी; मैं उसके किसी भी काम में बाधा नहीं डालता था, और घर की ओर से निश्चिन्त होकर रंग-रसपूर्ण सामाजिक जीवन बिताया करता था। इसमें सन्देह नहीं कि उस फ्रेंच सुन्दरी का हमारे घर में बच्चों की गवर्नेस बनकर आना अच्छा नहीं हुआ। अपने यहाँ की गवर्नेस के साथ प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करना किसी भी सम्मानित व्यक्ति के लिए लज्जा की बात है। पर यदि उसकी अनुपम सुन्दर कटीली आँखों ने मेरा मन मोह लिया, तो इसमें क्या मेरा अपराध है ? इसके अतिरिक्त जब तक वह हमारे घर में रही तब तक मैंने उसके साथ किसी प्रकार का भी अनुचित सम्बन्ध स्थापित नहीं किया। पर जो होना था सो हुआ; प्रश्न यह है कि अब क्या किया जाय ? उफ़ !" वह जितना ही सोचता था उतना ही चक्कर में पड़ जाता था, और अपनी रूठी पत्नी को मनाने का कोई भी उपाय उसे नहीं सूझता था।

वह उठ खड़ा हुआ और कमरे के एक कोने में टँगे हुए ड्रेसिंग-गाउन को उठाकर पहनने लगा। उसके बाद उसने बड़े ज़ोर से घंटी बजाई, जिसे सुनकर उसका पुराना सेवक मैथ्यू उसके कपड़े, जूते और एक तार लेकर तत्काल आ पहुँचा। उसके पीछे घर का नाई भी दाढ़ी बनाने का सामान हाथ में लिये चला आया।

आब्लान्सकी तार हाथ में लेकर बड़े शीशे के सामने बैठ गया। मैथ्यू से उसने पूछा—"आफ़िस से कुछ काग़ज़ात भी आये हैं ?"

"वे आपकी मेज़ पर रख दिये गये हैं।"

आब्लान्सकी ने तार खोलकर पढ़ा। पढ़ते ही उसके मुख पर प्रसन्नता की झलक दिखाई दी। उसने कहा—"मैथ्यू, मेरी बहन आना आर्काडेवना कल यहाँ आ रही है।"

मैथ्यू बोला—"ईश्वर को धन्यवाद है !" इस उत्तर से उसने स्पष्ट ही यह सूचित किया कि वर्तमान परिस्थिति में आना का आगमन कितना महत्त्वपूर्ण है, इस बात को वह भी आब्लान्सकी की तरह ही भली भाँति जानता है। उसने कुछ देर ठहरकर फिर पूछा—"क्या वे अकेली आ रही हैं, या अपने पति के साथ ?"

आब्लान्सकी उस समय उत्तर न दे सका, क्योंकि नाई ने उस समय उसका ऊपरी ओंठ हाथ से दबा रखा था। उसने केवल एक उँगली उठाकर यह जताया कि आना अकेली आ रही है। जब नाई ने अपना हाथ उसके ओंठ पर से हटा लिया तब मैथ्यू ने कहा—"क्या ऊपर की मंज़िल में एक कमरा आना के लिए ठीक कर दिया जाय?"

"डार्या अलेग्ज़ेन्ड्रोवना (डाली) से पूछो।"

मैथ्यू को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सन्देह के स्वर में कहा—"डार्या अलेग्ज़ेन्ड्रोवना से पूछने को आप कह रहे हैं?"

"हाँ। उसके हाथ में तार देकर उससे पूछो।"

मैथ्यू शङ्कित पगों से चला गया। आब्लान्सकी की दाढ़ी जब बन चुकी तब उसने हाथ-मुँह धोकर कपड़े पहनने की तैयारी की। इतने में मैथ्यू ने वापस आकर कहा—"डार्या अलेग्ज़ेन्ड्रोवना ने मुझसे यह कहा है कि वे कहीं बाहर जा रही हैं। उनका यह भी कहना है कि "मुझसे पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है, जिसका जैसा जी चाहे वैसा करे!" मैथ्यू की आँखों में एक व्यंग्यपूर्ण मुसकान झलक उठी। पर आब्लान्सकी के मुख पर एक सकरुण निराशा छा गई, यद्यपि उसने एक नीरस मुसकान मुख पर झलकाने की चेष्टा की। उसने क्षीण स्वर में केवल इतना कहा—"मैथ्यू, उफ़!"

"कुछ चिन्ता न करें, अपने आप सब ठीक हो जायगा!"

"अपने आप ठीक हो जायगा? तुम्हारा क्या यह पक्का विश्वास है, मैथ्यू? कौन है?"

एक नौकरानी ने दरवाज़े पर से क्षीण स्वर में कहा—"मैं हूँ, सरकार!"

आब्लान्सकी उसके पास जाकर बोला—"माट्रेना, क्या बात है?"

"एक बार आप डार्या अलेग्ज़ेन्ड्रोवना के पास नहीं जावेंगे सरकार? आपके जाने से, भगवान् ने चाहा तो, सब बातें फिर से सुधर सकती हैं। वे बेचारी बहुत व्याकुल हैं। उनके मुख पर ऐसी भयंकर उदासी छाई हुई है कि उनकी ओर मुझसे देखा तक नहीं जाता; देखने से रुलाई आ जाती है। इसके अलावा, घर का सारा कारोबार चौपट हो गया है। आपको कम से कम बच्चों का ध्यान तो रखना चाहिए! एक बार चलकर डार्या अलेग्ज़ेन्ड्रोवना से मिल लीजिए!"

"पर जब मुझे मिलने की आज्ञा दे, तब तो!"

"आप अपना कर्तव्य कीजिए, सरकार! फिर ईश्वर मालिक है। ईश्वर का नाम लेकर चले जाइए।"

"अच्छी बात है, मैं एक बार अवश्य प्रयत्न करूँगा।" यह कहकर आब्लान्सकी मैथ्यू की सहायता से कपड़े पहनने लगा।

कपड़े पहनकर, एसेन्स की सुगन्धि से तर होकर जब आब्लान्सकी बन-ठनकर तैयार हुआ, तो अपनी तत्कालीन संकट-पूर्ण स्थिति में भी वह सुन्दर, स्वस्थ और प्रसन्न दिखाई देने लगा। भोजन के कमरे में 'काफ़ी' तैयार रक्खी थी। उसी टेबिल पर आफ़िस के काग़ज़ात, चिट्ठियाँ और संवाद-पत्र आदि भी रक्खे हुए थे। उसने पहले चिट्ठियाँ खोलकर पढ़ीं। फिर आफ़िस की 'फ़ाइलों' को खोलकर, विशेष-विशेष काग़ज़ों में स्थान-स्थान पर पेन्सिल से कुछ नोट लिखकर, उन्हें फिर से बन्द करके रख दिया। इसके बाद वह एक संवाद-पत्र को उठाकर पढ़ने लगा।

आब्लान्सकी एक लिबरल-पत्र का ग्राहक था। वह अपने निजी अनुभवों और स्वतन्त्र विचारों के कारण लिबरल-दल का पक्षपाती नहीं बना था, बल्कि इसलिए बना था कि बहुसंख्यक जनता उक्त दल के प्रति श्रद्धा रखती थी। वह अपने समाज के प्रत्येक फ़ैशन को अपनाना अपना कर्त्तव्य समझता था और लिबरल-दल का पक्षपाती बनना भी वह एक फ़ैशन ही मानता था। इसके अतिरिक्त, संयोगवश लिबरल-दल के विचार उसकी जीवन-धारा के साथ अच्छा मेल खाते थे। उदाहरण के लिए, लिबरल-दल का यह कहना था कि रूस की प्रत्येक बात बुरी है, आब्लान्सकी इस बात को अपनी आर्थिक स्थिति की कसौटी पर कसकर सत्य पाता था। वास्तव में उसे बहुत क़र्ज़ हो गया था, और उसकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। लिबरल-दल की यह सम्मति थी कि विवाह-प्रथा बहुत पुरानी और प्रक्षिप्त हो चली है, और उसमें मूलतः सुधार करने की आवश्यकता है; और यह बात सच थी कि आब्लान्सकी को पारिवारिक जीवन के बन्धन से कुछ भी सुख प्राप्त नहीं होता था। लिबरल-दल का यह विचार था कि धर्म मूर्खों और अनपढ़ लोगों को दासता की शृंखला से जकड़े रहने का एक साधन-मात्र है; और आब्लान्सकी को गिर्जे में जाकर खड़े रहने में बड़ा कष्ट होता था, और यह बात उसकी समझ में न आती थी कि लोग परलोक में सुख प्राप्त करने की अनिश्चित आशा से इस जीवन के प्रत्यक्ष रागरंगों से क्यों वञ्चित रहना चाहते हैं।

इन्हीं सब कारणों से आब्लान्सकी ने 'लिबरलिज़्म' को अपना लिया था, और प्रतिदिन प्रातःकाल एक लिबरल-पत्र को पढ़ना वह अपना कर्त्तव्य समझता था।

पत्र पढ़कर वह उठा। उस समय उसके मुख में सुख और सन्तोष की एक झलक दिखाई दे रही थी। पर ज्यों ही उसे यह स्मरण हो आया कि उसे अपनी पत्नी से जाकर मिलना है, त्यों ही वह फिर चिन्ता में पड़ गया। दरवाज़े के बाहर दो बच्चों के खेलने का शब्द सुनाई दे रहा था। उनमें से एक आब्लान्सकी की लड़की टान्या थी, दूसरा उसका लड़का ग्रीशा। दोनों किसी चीज़ को घसीटकर ले जा रहे थे और बड़ा ऊधम मचा रहे थे। आब्लान्सकी को यह सोचकर दुःख हुआ कि डाली की देख-रेख के बिना केवल तीन ही दिन के भीतर बच्चे निर्द्वन्द्व हो उठे हैं। उसने टान्या को अपने पास बुलाकर पूछा—"अम्मा का क्या हाल है?"

"वह ऊपर बैठी है।"

"पर मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या वह प्रसन्न है या उदास बैठी है?"

लड़की से यह बात छिपी नहीं थी कि उसके मा-बाप के बीच में किसी कारण से मनमुटाव हो गया है, और स्वभावतः वह प्रसन्न नहीं हो सकती। वह यह भी जानती थी कि उसके पिता जान-बूझकर बनना चाहते हैं। उसने सिर नीचा करके उत्तर दिया—"मैं कुछ नहीं जानती। उसने हमसे यह कहा है कि हमें मिस हल (अँगरेज़ गवर्नेस) के साथ नानी के यहाँ जाना होगा।"

आब्लान्सकी ने एक लम्बी साँस ली। लड़की के हाथ में कुछ मिठाई देकर उसने उसे जाने की आज्ञा दी। टान्या के चले जाने पर वह सोचने लगा—"डाली के पास जाऊँ या क्या करूँ?" कुछ देर तक उसके भीतर अन्तर्द्वन्द्व चलता रहा। अन्त में उसने जाने का ही निश्चय किया, और ड्राइंग-रूम को पार करके अपनी स्त्री के सोने के कमरे का दरवाज़ा खोलकर उसने धीरे से भीतर प्रवेश किया।

*

३

दार्या अलेग्ज़ेन्ड्रोवना का मुख एकदम सूखा हुआ था। कमरे में सब चीज़ें अस्त-व्यस्त अवस्था में इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। नीचे नये और पुराने कपड़ों का ढेर लगा हुआ था। वह उन्हीं के ऊपर खड़ी थी और एक आलमारी से बच्चों के पहनने के कपड़े चुन-चुनकर बाहर निकाल रही थी। बच्चों को अपने साथ मायके ले चलने के उद्देश्य से वह ऐसा कर रही थी। पर यही काम इधर तीन दिनों के भीतर वह प्रायः दस बार कर चुकी थी। वह एक बार आवेश में आकर कपड़े बाहर निकालती थी और फिर कुछ ही देर बाद जब वास्तविकता की ओर दृष्टि डालती, तो हताश होकर रह जाती, और फिर कपड़ों को भीतर सँभालने लगती। अपने अन्तस्तल में वह जानती थी कि बच्चों को मायके ले जाना बड़े झंझट का काम है। पर साथ ही पति के साथ रहना भी घोर अपमानजनक और अनुचित है! इस अव्यवस्थित और अनिश्चित मानसिक अवस्था में वह कोई भी बात ठीक तौर से सोच नहीं पाती थी।

उसके निश्चय में जो बात सबसे अधिक रुकावट डाल रही थी वह यह थी कि इतने वर्षों से जिस व्यक्ति को पति-रूप में जानने और अपने हृदय का पूर्ण प्रेम न्योछावर करने का अभ्यास उसे हो गया था, उसे सदा के लिए छोड़ने की कल्पना उसे असम्भव-सी लग रही थी। उसका भीतरी मन जानता था कि उसके पति ने चाहे कैसा ही भयंकर धोखा क्यों न दिया हो, उससे अलग होकर वह रह नहीं सकेगी। फिर भी वह अपने आपको ठग रही थी, और यह भाव दिखा रही थी कि वह वास्तव में पति का घर छोड़-कर चली जायगी।

अपने पति को ज्यों ही उसने भीतर प्रवेश करते देखा, त्यों ही उसने उसकी ओर पीठ फेर ली और एक दराज़ के भीतर हाथ डालकर यह भाव दिखाने लगी कि वह कुछ चीज़ निकालना चाहती है। पर जब आब्लान्स्की उसके एकदम निकट आ खड़ा हुआ, तो उसने उसकी ओर मुँह करके देखा। उसने यह निश्चय कर

रक्खा था कि पति के आने पर वह कठोर दृढ़ता का भाव प्रकट करेगी; पर लाख चेष्टा करने पर भी वह अपने मुख पर विकल, विह्वल वेदना के अतिरिक्त और कोई दूसरा भाव व्यक्त न कर सकी।

आब्लान्सकी ने धीर, कम्पित स्वर में कहा—"डाली।" उसने अपना सिर नीचा कर लिया था, और वह अत्यन्त सकरुण और विनम्र-भाव अपने मुख पर झलकाने की चेष्टा कर रहा था। पर इस प्रयत्न का कोई फल नहीं हो रहा था, क्योंकि वह उस समय भी सदा के समान स्वस्थ और सुन्दर दिखाई देता था। डाली ने एक सरसरी दृष्टि से उसे देखते हुए अपने मन में कहा—"यह निश्चित है कि वह आत्म-सन्तुष्ट और सुखी है, और उसके मन में अपने किये कर्म के लिए किसी प्रकार का दुःख नहीं हो रहा है। उसका यह सौजन्य, जिसकी लोग इतनी प्रशंसा करते हैं मुझे अत्यन्त घृणित मालूम होता है। हाँ, मैं उससे घृणा करती हूँ, घृणा!"

"तुम क्या चाहते हो?"—झिड़ककर डाली ने कहा।

"डाली, आज आना आ रही है।"

"तो मैं क्या करूँ? मैं उसका स्वागत नहीं कर सकती!"

"पर डाली, फिर भी तुम्हें उसका स्वागत करना ही चाहिए!"

"जाओ! जाओ! मेरे सामने से हट जाओ!"

डाली के कण्ठस्वर से ऐसा जान पड़ता था, जैसे वह किसी भयंकर पीड़ा से कराह रही हो। आब्लान्सकी उसके शीर्ण और वेदना-क्लान्त मुख का निपट हताशभाव देखकर स्वयं भी बहुत विकल हो उठा। उसका गला रुँध आया, और उसकी आँखों के कोनों में आँसू चमकने लगे।

"हे भगवान्! मैंने क्या किया! डाली, देखो—उफ़! मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ! मुझे क्षमा कर दो, डाली! हमारे नौ वर्षों का विवाहित जीवन क्या मेरी एक क्षणिक मूर्खता के कारण नष्ट-भ्रष्ट हो जावेगा?"

आब्लान्सकी और भी बहुत कुछ कहना चाहता था, पर उसका रुँधा हुआ गला उसका साथ नहीं दे रहा था।

डाली ने प्रायः चीख मारकर कहा—"जाओ! जाओ! अपनी 'क्षणिक मूर्खता' के सम्बन्ध की बीभत्स बातें मेरे आगे न करो!" वह स्वयं बाहर चली जाना चाहती थी, पर उसके पाँव क्रोध, भय

और भ्रान्ति के कारण लड़खड़ा रहे थे। एक कुर्सी का सहारा लेकर वह खड़ी रही।

आब्लान्सकी के दबे हुए आँसू फूट पड़े। वह प्रायः सिसकियाँ भरते हुए कहने लगा—"डाली, ईश्वर के लिए तनिक बच्चों की बात तो सोचो! उन्होंने क्या अपराध किया है? मुझे जैसा जी चाहे, दण्ड दो। अपने पाप का फल भोगने को मैं तैयार हूँ। मैं दोषी हूँ, मुझसे निस्सन्देह भयंकर अपराध हुआ है। पर डाली, मुझे यदि तुम क्षमा न करोगी, तो कौन करेगा? और बच्चे!—"

डाली की साँस बड़ी तेज़ी से चल रही थी और खड़े रहने की शक्ति उसमें नहीं रह गई थी। वह कुर्सी पर बैठ गई और बार-बार तीखे शब्दों में अपने पति की बात का उत्तर देने का प्रयत्न करने लगी, पर दम फलने के कारण वह कुछ बोल नहीं पाती थी। जब कुछ सुस्ता चुकी, तब उसने कहा—"तुम बच्चों की बात तब सोचते हो जब तुम उनसे हँसना-खेलना और अपना जी बहलाना चाहते हो, पर मैं सब समय उनकी चिन्ता करती रहती हूँ। मैं जानती हूँ कि अब उनका कहीं कोई ठिकाना न रहा। मैं हर हालत में उन्हें विनाश से बचाना चाहती हूँ। पर कैसे बचाऊँ? या तो उन्हें उनके बाप से सदा के लिए छुड़ा देना होगा, या उस दुश्चरित्र—हाँ, घोर दुश्चरित्र पिता की देख-रेख में छोड़ देना पड़ेगा। तुमने जो कुछ किया है, उसका पता लग जाने पर मैं कैसे तुम्हारे साथ रह सकती हूँ! यह कैसे सम्भव हो सकता है, बताओ! बताओ!" उसका कण्ठस्वर तीव्र से तीव्रतर होता चला जाता था।

आब्लान्सकी अपना सिर झुकाकर अत्यन्त करुण स्वर में केवल यही कहता चला गया—"पर अब इसका क्या उपाय है! क्या उपाय है!"

डाली प्रायः चिल्लाती हुई बोली—"तुम अत्यन्त घृणित और भ्रष्ट हो! तुम्हारे ये आँसू केवल पानी की बूँदें हैं, इनका कोई मूल्य नहीं है। तुमने कभी मुझे नहीं चाहा; तुम्हारे हृदय है ही नहीं, न तुम्हें प्रतिष्ठा की कुछ परवा है। तुम अत्यन्त हीन और नीच हो; मेरे लिए तुम अब एक अपरिचित पुरुष के समान हो!" उसके एक-एक शब्द में भयंकर कटुता भरी थी।

आब्लान्सकी ने एक बार सिर उठाकर अपनी पत्नी की ओर देखा। उसके मुख पर घृणा और क्रोध की प्रगाढ़ छाया देखकर वह वास्तव में घबरा उठा। डाली इस हद तक उससे घृणा कर सकती है, इस बात की कल्पना उसने पहले नहीं की थी। वह मन ही मन कहने

लगा--"नहीं, डाली अब मुझे किसी तरह भी क्षमा करने को तैयार नहीं है। उफ़! यह कैसी भयंकर बात है!"

इतने में बग़लवाले कमरे से एक बच्चे के रोने का शब्द सुनाई दिया। बच्चा शायद नीचे गिर पड़ा था। डार्या अलेग्ज़ेन्ड्रोवना का ध्यान तत्काल उस ओर चला गया। कुछ देर तक वह भ्रान्त होकर सुनती रही, जैसे उसकी समझ ही में न आ रहा हो कि वह उस कमरे में अपने पति के साथ क्यों खड़ी है। जब वह कुछ स्थिर हुई, तब अत्यन्त शीघ्रता से उठकर उस कमरे में चली गई, जिसमें बच्चा रो रहा था।

आब्लान्सकी ने सोचा--"कुछ भी हो, यह निश्चित है कि वह मेरे बच्चों से अभी तक वैसा ही प्रेम करती है। पर मेरे बच्चों को चाहने पर भी मुझसे इतनी घृणा क्यों करती है?"

वह अपनी पत्नी के पीछे-पीछे हो लिया और कहने लगा--"डाली, मेरी एक बात तो सुन लो!"

"यदि तुम इस प्रकार मेरा पीछा करोगे, तो मैं चिल्लाकर सब नौकरों और बच्चों को यहाँ बुलाऊँगी! मैं सबको यह जता दूँगी कि तुम बदमाश और नीच हो! मैं आज ही यह घर छोड़कर चली जा रही हूँ, मेरे जाने के बाद तुम सुखपूर्वक अपनी प्रेमिका के साथ रहना!" यह कहकर डार्या अलेग्ज़ेन्ड्रोवना ने ज़ोर से धक्का देकर भीतर से किवाड़ बन्द कर दिया। आब्लान्सकी बाहर ही खड़ा रह गया। एक लम्बी साँस लेकर और रूमाल से अपनी आँखें और मुँह पोंछकर वह धीरे-धीरे कमरा छोड़कर चला गया।

बाहर गाड़ी तैयार थी। आब्लान्सकी मैथ्यू को आना के लिए किसी एक कमरे का प्रबन्ध कर रखने का आदेश देकर और उसके हाथ में घर के खर्च के लिए कुछ रुपये देकर गाड़ी में चढ़ बैठा।

डार्या अलेग्ज़ेन्ड्रोवना ने गाड़ी के पहियों के शब्द से जब यह जान लिया कि उसका पति चला गया है, तब बच्चे को मनाकर वह फिर अपने सोने के कमरे में वापस चली आई। यही एक स्थान था जहाँ घर की चिन्ताओं से वह अपने को थोड़ा-बहुत मुक्त पाती थी।

वह उस कमरे में अकेली बैठी हुई सोचने लगी--"क्या अभी तक उस फ़्रेञ्च स्त्री के साथ इसका (आब्लान्सकी का) सम्बन्ध है? क्या अब भी वह उससे मिलता है? असम्भव है! उससे अब मेरा

मेल किसी भी दशा में नहीं हो सकता। यदि अब हम दोनों एक ही घर में रहें भी, तो भी एक-दूसरे से चिर-अपरिचित के समान हमें जीवन बिताना होगा। पर इसके पहले मैं उसे कितना चाहती थी! और--और—सच बात तो यह है कि इस समय भी मैं उसे चाहती हूँ। मैं उससे घृणा करना चाहती हूँ, पर कर नहीं पाती हूँ। उफ़! मैं कैसी विकट परिस्थिति के फेर में पड़ गई हूँ!"

इतने में एक नौकरानी भीतर घुस आई, और डार्या अलेग्ज़ेन्ड्रोवना घर की जिन रात-दिन की चिन्ताओं से कुछ समय के लिए मुक्ति पाना चाहती थी, उन्हें एक-एक करके याद दिलाने लगी। बच्चों के लिए दूध नहीं है, रसोइया चला गया है, दूसरे रसोइये का क्या प्रबन्ध होगा, आदि प्रश्नों को सुलझाने में कुछ समय के लिए वह अपने पति की बात भी भूल गई।

४

आब्लान्सकी यद्यपि स्वभावतः एक योग्य व्यक्ति था, तथापि वह बड़ा आलसी और विलासी था। इस कारण उच्च कक्षाओं की परीक्षाओं में वह विशेषता नहीं प्राप्त कर सका था। फिर भी उसका भाग्य अच्छा निकला। मास्को के एक सरकारी विभाग के प्रधान कर्मचारी का पद उसे प्राप्त हो गया था। यह पद उसे अपनी बहन आना के पति अलेक्सिस अलेग्ज़ेन्ड्रोविच केरेनिन की चेष्टा से मिला था। केरेनिन पीट्र्सबर्ग के मन्त्रिमण्डल का एक विशेष प्रतिष्ठित व्यक्ति था। पर स्टीवा (आब्लान्सकी) को यदि केरेनिन की सहायता न मिलती, तो भी वह अपने असंख्य बन्धु-बान्धवों में से किसी न किसी की कृपा प्राप्त करके अवश्य अपना काम निकाल लेता। वह बहुत ही मधुर स्वभाव का, मिलनसार और व्यवहार-कुशल व्यक्ति था। उसके प्रायः सभी सगे-सम्बन्धी और मित्र उससे प्रसन्न रहते थे, और अपने समाज में वह बहुत लोक-प्रिय हो उठा था। उसके आफ़िस के सब कर्मचारी उसका बड़ा आदर करते थे।

आफ़िस का काम समाप्त करके जब वह अपने दो-एक सहकर्मियों के साथ तत्कालीन राजनीतिक विषयों पर बातें करते हुए एक सिगरेट फूँक रहा था, तब चौकीदार ने आकर उसे सूचना दी कि एक व्यक्ति बहुत देर से उसकी प्रतीक्षा में खड़ा है।

"वह शायद हॉल में चला गया होगा, सरकार! अभी तक वह उसी के आस-पास चक्कर लगा रहा था। वह देखिए, वह आ रहा है।"

वास्तव में एक चौड़े कन्धेवाला व्यक्ति, जिसकी दाढ़ी के बाल घुँघराले थे, भेड़ की खाल की टोपी बिना उतारे ही, सीढ़ियों से होकर ऊपर को चला आ रहा था। आब्लान्सकी सीढ़ियों की चोटी पर खड़ा था। नवागत व्यक्ति को पहचानते ही उसका मुख अकृत्रिम प्रसन्नता से चमक उठा।

उसने एक मधुर व्यंग्य की मुसकान मुख से झलकाते हुए कहा—"क्यों लेविन, आख़िर तुम फिर यहाँ आ ही गये! आज तुमने हमारे इस गन्दे 'अड्डे' में पधारने की कृपा कैसे की?" यह कहकर उसने

केवल उससे हाथ ही नहीं मिलाया, बल्कि स्नेहपूर्वक उसके गले मिला। फिर बोला—"यहाँ कब आये?"

लेविन ने संकोच-भरी दृष्टि से एक बार चारों ओर देखकर कहा—"मैं अभी आ रहा हूँ। तुमसे मिलने के लिए मैं विशेष उत्सुक था।"

"अच्छी बात है, मेरे 'प्राइवेट' कमरे में चलो।" यह कहकर वह अपने संकोचशील मित्र का हाथ पकड़कर ले गया।

लेविन तथा आब्लान्सकी प्रायः समवयस्क थे। यों तो आब्लान्सकी जिस व्यक्ति के साथ एक बार 'शैम्पेन' पी लेता था, उसी को अपना घनिष्ठ मित्र बना लेता था; पर लेविन के साथ केवल 'हम-प्याला' होने के कारण ही उसकी मित्रता नहीं हुई थी, बल्कि दोनों लड़कपन के साथी थे और प्रारम्भ से ही एक दूसरे को पसन्द करने लगे थे। तब से दोनों की घनिष्ठता बढ़ती चली गई; और यद्यपि दोनों के स्वभाव और विचारों में बड़ा अन्तर था, तथापि उनकी मित्रता में इस कारण से कभी किसी प्रकार की कमी नहीं आने पाई थी। इसमें सन्देह नहीं कि दोनों एक-दूसरे की रहन-सहन को घृणा की दृष्टि से देखते थे। लेविन उस विलासितामय नागरिक जीवन से बहुत चिढ़ता था, जिसके बिना आब्लान्सकी एक क्षण जी नहीं सकता था; और आब्लान्सकी लेविन के 'आदर्श देहाती जीवन' को अत्यन्त हास्यास्पद समझता था। फिर भी दोनों में पारस्परिक अटूट स्नेह था।

अपने 'प्राइवेट' कमरे में पहुँचकर आब्लान्सकी ने कहा—"तुम्हें देखकर मुझे जो प्रसन्नता हुई है, उसका वर्णन नहीं हो सकता। हम लोग बहुत दिनों से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे थे।"

आब्लान्सकी के उस कमरे में उसके दो साथी पहले से ही बैठे हुए थे। उन अपरिचित व्यक्तियों को देखकर लेविन संकोच में पड़ा हुआ था। आब्लान्सकी ने उन दोनों से लेविन का परिचय कराते हुए उसके सम्बन्ध में कहा कि वह ज़िला कौंसिल का एक योग्य सदस्य है। लेविन ने इस बात का खण्डन किया और कहा कि उसने ज़िला कौंसिल से सब प्रकार का सम्बन्ध त्याग दिया है। इसका कारण उसने यह बताया कि ज़िला कौंसिलों के अधिकांश सदस्य जनता का वास्तविक हित ध्यान में रखकर वहाँ नहीं जाते, बल्कि इसलिए जाते हैं कि वहाँ उनका मनोविनोद होता है, और वाद-विवाद में उनका समय कट जाता है।

आब्लान्सकी ने उसकी इस बात पर एक व्यंग्यपूर्ण छींटा कसते हुए कहा—"तुम अब 'कंज़र्वेटिव' दल के पक्षपाती बनने लगे हो! खैर, इस सम्बन्ध में फिर बातें होंगी।"

"हाँ, फिर कभी! पर इस समय मैं तुमसे दो-एक विशेष बातें करना चाहता हूँ।" यह कहकर उसने दोनों नवपरिचित व्यक्तियों की ओर तीखी दृष्टि से देखा।

आब्लान्सकी अपने मित्र की भड़कीली पोशाक की ओर दृष्टि डालकर बोला—"तुम तो कहा करते थे कि तुम पश्चिम योरप के किसी दर्ज़ी की सिली हुई पोशाक़ कभी नहीं पहनोगे, पर आज तो तुमने निश्चय ही यह पोशाक़ किसी फ़्रेंच दर्ज़ी से सिलवाई है! आज ऐसा कौन-सा नया कारण आ पड़ा है?"

लेविन एक स्कूली लड़के की तरह लज्जित हो उठा और उसका मुँह लाल हो गया। उसने उस बात को टालते हुए कहा—"मैं तुमसे बहुत आवश्यक बातें करना चाहता हूँ। यह बताओ कि किस स्थान में हम दोनों का मिलना ठीक रहेगा?"

आब्लान्सकी ने कुछ सोचकर कहा—"अच्छा, एक काम क्यों न किया जाय—हम दोनों इसी समय गुरिन के होटल में मध्याह्न-भोजन के लिए चलें। वहीं एकान्त में बातें करेंगे।"

लेविन बोला—"नहीं, मुझे कहीं दूसरी जगह जाना है।"

"अच्छी बात है, तब संध्या को हम दोनों एक साथ भोजन करेंगे, क्यों?"

"पर कुछ लम्बी-चौड़ी बातें तो करनी नहीं हैं! केवल दो-एक बातें तुमसे पूछनी हैं।"

"अच्छी बात है। दो-एक बातें तुम अभी कर सकते हो; शेष बातें संध्या को भोजन के समय होती रहेंगी।"

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि—पर वह कोई आवश्यक बात नहीं है, जाने दो!" स्पष्ट ही वह अत्यन्त संकोच के कारण अपनी बात कह नहीं पाता। कुछ समय अपना संकोच दूर करने का भरपूर प्रयत्न करते हुए कहा—"मैं पूछना चाहता था कि श्चरबैट्सकी-परिवार का क्या हाल है। वे लोग सब मज़े में तो हैं?"

आब्लान्सकी बहुत पहले से इस बात से परिचित था कि लेविन उसकी साली—प्रिन्स श्चरबैट्सकी की छोटी लड़की किटी—से प्रेम करता है। इसलिए लेविन का पूर्वोक्त प्रश्न सुनकर एक मीठी मुसकान उसके ओंठों पर खेल गई। उसने कहा—"तुमने तो 'दो शब्दों' में अपनी

बात कह डाली, पर मैं दो शब्दों में इसका उत्तर नहीं दे सकता।—एक मिनट के लिए क्षमा करना।"

आब्लान्सकी का सेक्रेटरी कुछ काग़ज़-पत्र लेकर आया हुआ था। उसे समझा-बुझाकर आब्लान्सकी ने उसे बिदा किया। लेविन इस बीच में अपना संकोच बहुत कुछ दूर करने में समर्थ हो चुका था। उसने सहज स्वर में कहा—"हाँ, तो तुमने मेरे प्रश्न का कुछ उत्तर अभी तक नहीं दिया!"

आब्लान्सकी ने कुछ गम्भीर होकर कहा—"जब से तुम गये थे, तब से कोई विशेष परिवर्तन मेरे ससुर के परिवार में नहीं हुआ। पर यह दुःख की बात अवश्य है कि इतने दिनों तक तुम छिपे रहे।"

"दुःख की बात क्यों कहते हो?" यह प्रश्न करते समय लेविन का गला कुछ काँप उठा था।

"यों ही। इस सम्बन्ध में फिर बातें करेंगे। कुछ भी हो, मैं तुमसे अपने यहाँ आने के लिए प्रार्थना करता; पर बात यह हो गई है कि मेरी स्त्री का जी ठीक नहीं है। यदि तुम मेरी ससुरालवालों से मिलना चाहो, तो ज़ुओलाजिकल गार्डन्स में चार और पाँच के बीच में मिल सकते हो। किटी वहाँ नित्य स्केटिंग करने जाती है। वहाँ जाओ, और फिर संध्या को तुम हम दोनों कहीं साथ ही भोजन करेंगे।"

"अच्छी बात है। अच्छा, तो इस समय मैं जाता हूँ।" यह कहकर लेविन चला गया।

लेविन के चले जाने पर आब्लान्सकी के एक साथी ने कहा—"आपका मित्र बड़ा स्वस्थ और चुस्त दिखाई देता है।"

आब्लान्सकी बोला—"इसमें क्या सन्देह है! वह बड़ा भाग्यशाली है। काराज़िन ज़िले में वह प्रायः आठ हज़ार एकड़ ज़मीन का मालिक है! इसके अतिरिक्त वह अभी पूर्ण युवक है, और अधिकतर देहात में जीवन बिताने के कारण बड़ा हृष्ट-पुष्ट भी है।"

५

लेविन आब्लान्सकी को अपने आने का स्पष्ट कारण नहीं बता सका था। बात यह थी कि वह आब्लान्सकी की साली किटी से विवाह का प्रस्ताव करने आया हुआ था, और संकोच के कारण अपने उद्देश्य को किसी के आगे प्रकट करने में वह अपने को असमर्थ पा रहा था।

लेविन और श्चरबैट्सकी-परिवारों में पुश्तों से घनिष्ठ मित्रता चली आती थी। दोनों परिवार प्राचीन, सम्भ्रान्त और प्रतिष्ठित थे। लेविन जब मास्को-विश्वविद्यालय में पढ़ा करता था, तब बूढ़े प्रिन्स श्चरबैट्सकी का लड़का उसका सहपाठी होने के कारण उसका प्रधान साथी बन गया था। धीरे-धीरे श्चरबैट्सकी-परिवार के सब लोगों से लेविन की घनिष्ठता हो गई। उस समय डाली (आब्लान्सकी की स्त्री) भी अविवाहित थी। तीनों बहनें—डाली, नाटाली और किटी—लेविन को अत्यन्त सुन्दर लगती थीं और एक अवर्णनीय काव्यमय रहस्य से घिरी हुई जान पड़ती थीं। उनके यहाँ का सारा पारिवारिक वातावरण उसे अत्यन्त सम्मोहक और सुखकर लगता था। लेविन जब बहुत छोटा था तभी उसकी मा मर चुकी थी, और उसके पिता का भी देहान्त हो चुका था। इसलिए माता-पिता के स्नेह से वञ्चित होने के कारण पारिवारिक शान्ति, शृंखला और सुख से वह अपरिचित था। श्चरबैट्सकी-परिवार के घनिष्ठ सम्पर्क में आने पर प्रथम बार उसने यह जाना कि पारिवारिक जीवन की विशेषता क्या है।

इस सुशिक्षित और सुसंस्कृत परिवार की सभी बातें लेविन को अपूर्व सुन्दर जान पड़ती थीं। अपने विद्यार्थी-जीवन में वह प्रिन्स श्चरबैट्सकी की सबसे बड़ी लड़की डाली पर मुग्ध था। पर चूँकि शीघ्र ही आब्लान्सकी के साथ डाली का विवाह हो गया, इसलिए वह मँझली लड़की नाटाली को चाहने लगा। पर नाटाली का विवाह भी कुछ ही समय बाद किसी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से हो गया। लेविन ने जिस समय विश्वविद्यालय की पढ़ाई समाप्त की, उस समय किटी बहुत छोटी थी। उसके कुछ ही समय बाद उसका सहपाठी कुमार श्चरबैट्सकी नौसेना में भर्ती होने के बाद बाल्टिक

सागर में डूबकर मर गया। तब से श्चरबैट्सकी-परिवार में लेविन का आना-जाना कम हो गया। पर जब इस बार जाड़ों के प्रारम्भ में वह मास्को आया, तब किटी को देखकर और उससे मिलकर वह समझ गया कि वास्तव में वही एक ऐसी लड़की है जिसे वह सच्चे हृदय से प्यार कर सकता है।

लेविन के समान संभ्रान्तवंशीय, धनी और स्वस्थ युवक (३२ वर्ष की अवस्था होने पर भी वह अभी पूर्ण युवा था) यदि कुछ भी प्रयत्न करता, तो किटी से उसका विवाह होने में सम्भवतः कोई कठिनाई न पड़ती। पर चूँकि वह अपनी सम्पूर्ण आत्मा से किटी के प्रेम में निमग्न हो गया था, इसलिए वह उसे एक स्वर्गीय स्वप्नमयी कल्पना-सी लग रही थी, जो उसके समान मर्त्यवासी पुरुष के लिए एकदम दुष्प्राप्य थी! दो महीने तक किटी से प्रायः प्रतिदिन मिलते रहने पर भी उससे विवाह का प्रस्ताव करने का साहस उसे न हुआ। अन्त में अकारण ही यह सोचकर कि उसकी आकांक्षा सफल नहीं हो सकती, वह एक दिन सहसा भाग खड़ा हुआ और देहात में, अपने घर, वापस चला गया।

लेविन की यह धारणा थी कि चूँकि समाज में उसे कोई विशेष पद प्राप्त नहीं है, और उसके व्यक्तित्व में भी कोई विशेषता नहीं है, इसलिए किटी के माता-पिता स्वभावतः उसे अपनी लड़की के योग्य नहीं समझेंगे। उसके प्रायः सभी साथी महत्त्वपूर्ण सरकारी विभागों में एक से एक उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हो चुके थे, पर वह एक धनी जमींदार होने पर भी केवल एक साधारण देहाती के अतिरिक्त और कुछ नहीं बन पाया था। इसलिए वह सोचा करता था कि न तो किटी उसके प्रति आकर्षित हो सकती है, न उसके मा-बाप ही उसे पसन्द कर सकते हैं।

पर इस बार जब वह घर में दो महीने अकेला पड़ा रहा, तब उसके मन में यह निश्चित धारणा जम गई कि किटी के प्रति उसका प्रेम उसके छात्र-जीवन की-सी भावुकता नहीं है; वह अत्यन्त तीव्र और गहन है, और दिन पर दिन उसे अधिकाधिक विकल करता चला जाता है। इसलिए आज वह यह निश्चय करके मास्को आया हुआ था कि किटी से एक बार विवाह का प्रस्ताव करके ही छोड़ेगा—चाहे उसका कैसा ही परिणाम क्यों न हो!

लेविन मास्को में अपने सौतेले भाई सर्जियस काज़नीशेव के यहाँ ठहरा हुआ था। काज़नीशेव मास्को की विद्वन्मण्डली में जैसा मान्य

समझा जाता था वैसा ही राजनीतिक समाज में भी। लेविन आयु में उससे छोटा था। काज़नीशेव लेविन को एक साधारण स्कूली लड़के के समान कच्चीबुद्धि और अपरिपक्व विचारवाला व्यक्ति समझकर उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखता था। इसलिए लेविन उसके आगे अपने हृदय की कोई गुप्त बात कहना पसन्द नहीं करता था। उसने उसे यह नहीं जताया कि वह किस उद्देश्य से मास्को आया है।

चार बजे के समय लेविन ज़ुओलाजिकल गार्डन्स पहुँचा। वहाँ किराये की गाड़ी पर से उतरकर वह बर्फ़ीली पहाड़ी के नीचे एक तालाब के पास पहुँचा, जहाँ का पानी जमकर बर्फ़ के समान कड़ा हो गया था। तालाब के चारों ओर प्रतिष्ठित दर्शकों की भीड़ लगी हुई थी, और बीच में लोग 'स्केटिंग' कर रहे थे। लेविन ने दूर ही से किटी को स्केटिंग करते हुए देख लिया था, और उसका चिर-परिचित तथापि चिर-नूतन सौन्दर्य देखकर उसका हृदय धड़कने लगा था। लेविन को ऐसा जान पड़ता कि सारी भीड़ किटी की मधुर मुसकान से आलोकित और पुलकित हो रही है। उसके लिए सारी जनता काँटेदार झाड़ी के समान थी, जिसके बीच में किटी एक उत्फुल्ल गुलाब के समान शोभित हो रही थी। जितने भी लोग किटी के आस-पास 'स्केटिंग' कर रहे थे, वे लेविन को बड़े सौभाग्यशाली जान पड़ते थे। जब कोई 'स्केटर' किटी का पाँव विछलते देख उसे बचाने के उद्देश्य से उसका हाथ पकड़ता, तो लेविन के कलेजे पर साँप लोटने लगते। किटी को स्पर्श करना उसके लिए सप्तम स्वर्ग में पहुँचने के सुख से भी बढ़कर था।

लेविन सोचने लगा कि उसे भी 'स्केट्स' पहनकर मैदान में उतर पड़ना चाहिए या नहीं? इतने में किटी के चचेरे भाई निकोलस श्चरबैट्सकी ने, जो स्वयं 'स्केट्स' पहने था, उसे पुकारते हुए कहा—"हल्लो, रूस के चैम्पियन स्केटर! तुम कब आये? चलो, बर्फ़ बहुत चिकनी है, 'स्केट्स' पहन लो!"

लेविन ने सकुचाते हुए उत्तर दिया—"मेरे पास 'स्केट्स' नहीं हैं।" वह यद्यपि किटी की ओर आँखें किये हुए नहीं था, तथापि कनखियों से वह सब समय उसे देख रहा था। अकस्मात् उसे ऐसा जान पड़ा कि किटी 'स्केटिंग' करती हुई उसी की ओर चली आ रही है। वह अनिश्चित और लड़खड़ाते हुए पगों से आगे को बढ़ती चली आती थी।

किनारे पर पहुँचकर किटी अपने चचेरे भाई के पास आकर उसके हाथ का सहारा पकड़कर खड़ी हो गई और लेविन की ओर देखकर

मुसकराई। लेविन ने इस बार उसे जब निकट से देखा तब वह और अधिक सुन्दर जान पड़ी। उसके मुख पर सदा की भाँति बच्चों की-सी वही सहज, सरल प्रफुल्लता और सुमधुर तथा स्निग्ध भाव वर्त्तमान था। उसकी तरल आँखों में जो शान्त निश्छलता छलक रही थी, वह लेविन को सबसे अधिक आकर्षक जान पड़ती थी। उसकी मृदु-मन्द मुसकान लेविन को एक अपूर्व रहस्यमय परी-लोक में पहुँचा देती थी।

लेविन से हाथ मिलाते हुए किटी ने अपनी उसी चिर-परिचित सहज, समद मुसकान के साथ कहा—"क्या आपको यहाँ आये कुछ दिन हो गये हैं ?"

"मैं ? जी नहीं, मैं कल—नहीं, आज ही पहुँचा हूँ। मैं आपसे मिलना चाहता था। मुझे पता नहीं था कि आप भी 'स्केटिंग' करती हैं, और इतने अच्छे ढंग से !"

किटी बहुत ही ध्यानपूर्वक उसकी ओर देख रही थी। सम्भवतः वह उसकी घबराहट का यथार्थ कारण मालूम करने की चेष्टा कर रही थी।

"धन्यवाद ! आपकी प्रशंसा का महत्त्व मैं मानती हूँ, क्योंकि यहाँ के लोगों का विश्वास है कि आप सबसे अच्छे 'स्केटर' हैं।" यह कहकर किटी अपने एक काले दस्ताने से लगे हुए हिमकणों को हटाने लगी।

"जी हाँ, 'स्केटिंग' से मेरा विशेष प्रेम रहता था। मेरी बड़ी इच्छा रही है कि मैं इसमें पूर्णता प्राप्त करूँ।"

"आप प्रत्येक काम को प्रेमपूर्वक और पूर्णता के साथ करना चाहते हैं।" यह कहकर किटी मुसकराई। फिर बोली—"चलिए, 'स्केट्स' पहनिए, हम दोनों साथ ही 'स्केटिंग' करेंगे।"

लेविन उसकी ओर भ्रान्तभाव से देखकर सोचने लगा—"साथ ही स्केटिंग करेंगे ! क्या यह मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ ?"

तत्काल एक जोड़ा 'स्केट्स' किराये पर लेकर वह पहनने लगा। जो व्यक्ति उसे 'स्केट्स' पहनने में सहायता कर रहा था, उसने कहा—"आप आज बहुत दिनों बाद आ रहे हैं, सरकार ! जब से आप गये, तब से कोई दूसरा व्यक्ति आपके समान 'स्केटिंग' कर सकनेवाला यहाँ नहीं आया !"

तैयार होकर वह किटी के पास आया। वह अभी तक घबरा रहा था, पर किटी की मन्द-मधुर मुसकान ने उसे बहुत-कुछ सान्त्वना

दी। किटी ने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया, और लेविन ने उसे पकड़ लिया। दोनों एक साथ 'स्केटिंग' करने लगे। लेविन धीरे-धीरे चाल बढ़ाता चला जाता था, और ज्यों-ज्यों चाल तेज़ होती जाती थी, त्यों-त्यों किटी अधिक ज़ोर से उसका हाथ दबाती थी—इस डर से कि कहीं गिर न पड़े।

किटी ने कहा—"आपके साथ 'स्केटिंग' करने से मैं भी इस कला में निपुण हो जाऊँगी। आपके साथ मैं विश्वासपूर्वक चल पाती हूँ।"

"और जब आप मेरे साथ रहती हैं, तो मेरा आत्म-विश्वास भी जग जाता है।" यह कहते ही लेविन अपनी बात से स्वयं घबरा उठा, और उसका मुँह लज्जा से कुछ लाल हो आया। वास्तव में उसकी इस तरह की बात सुनकर किटी के मुख का भाव भी कुछ रूखा हो गया था, उसके चिकने मस्तक पर बल पड़ने लगा था।

लेविन ने पूछा—"क्या आपको कुछ कष्ट हो रहा है? पर मुझे यह पूछने का अधिकार भी तो नहीं है!"

"क्यों? नहीं, कष्ट की कोई बात नहीं हुई है। क्या आप मादमाज़ेल लिनों से मिल चुके हैं?" उसके स्वर में विशेष रुखाई थी।

लेविन ने सोचा—"निश्चय ही मेरी बात से उसका जी दुख गया। ओ भगवान्! मेरी रक्षा करो!"

किटी की बुढ़िया फ्रेंच गवर्नेस किनारे के एक बेंच पर बैठी हुई थी। लेविन उसी की ओर आगे बढ़ा। उससे मिलकर दो-एक बातें करके वह फिर किटी के पास वापस चला आया। तब किटी के मुख से रूखापन चला गया था, और वह पहले की ही तरह मन्द-मधुर भाव से मुसकराने लगी थी।

कुछ देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद किटी ने पूछा—"क्या आप इस बार यहाँ काफ़ी समय के लिए ठहरेंगे?"

लेविन ने उत्तर दिया—"मैं स्वयं नहीं जानता।"

"आप नहीं जानते! यह क्यों?"

"मेरा यहाँ अधिक ठहरना या न ठहरना आप पर निर्भर करता है।" यह कहते ही वह फिर अपनी बात से स्वयं भीत हो उठा।

किटी ने ऐसा भाव दिखाया जैसे उसने लेविन की बात सुनी ही न हो, और वह लेविन का हाथ छोड़कर धीरे-धीरे मादमाज़ेल लिनों की ओर 'स्केटिंग' करती हुई चली गई।

"हे भगवान्! मैंने न ज़ाने इस बार कैसी भयंकर भूल की! हे प्रभो! मेरी सहायता करो और मेरी बुद्धि ठिकाने लगाओ!"

अपने मन की दुश्चिन्ता को दूर करने के उद्देश्य से वह अकेले 'स्केटिंग' करता हुआ बर्फ़ पर गोल वृत्ताकार घेरे बनाने लगा। इतने में एक 'स्केटर' ऊपर पहाड़ी की ढलवाँ ज़मीन पर से 'स्केटिंग' करता हुआ इस सहज गति से नीचे उतरा कि न तो उसने कमर झुकाई और न हाथ हिलाये।

लेविन ने देखा कि यह नये ढंग की कलाबाज़ी है। वह तत्काल ऊपर चढ़ा और पूर्वोक्त विधि से नीचे उतरने की चेष्टा करने लगा। पर इस नई कला का अभ्यास न होने से उसके पाँव फिसल पड़े और वह मुँह के बल गिरा ही चाहता था कि प्रबल चेष्टा से उसने अपने को सँभाल लिया और फिर बड़े ज़ोर से हँसता हुआ नीचे आकर बर्फ़ पर रपटने लगा।

किटी दूर ही से बड़ी घबराहट के साथ उसे देख रही थी। ज्यों ही लेविन ने अपने को सँभाला, त्यों ही उसने मन ही मन कहा—"शाबाश! खूब बचाया!" इसके बाद किटी सोचने लगी—"न जाने क्यों उसे देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। मैं जानती हूँ कि मैं उससे प्रेम नहीं करती, फिर भी उसका संग मुझे इतना क्यों भाता है?"

कुछ देर बाद लेविन 'स्केट्स' उतारकर वापस जाने लगा। किटी अपनी मा के साथ चली जा रही थी। 'गार्डन्स' के फाटक पर लेविन उनसे मिला। किटी की मा ने उसे देखकर कहा—"तुम्हें देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। हम लोग बृहस्पतिवार को मिला करते हैं।"

"आज ही बृहस्पतिवार है।"

"तुमसे मिलकर हमें बड़ी प्रसन्नता होगी।" पर उसके कहने का ढंग बड़ा रूखा था। किटी ने अपनी मा की इस रुखाई का भाव किसी हद तक मिटाने के उद्देश्य से लेविन की ओर देखकर स्निग्ध मुसकान के साथ कहा—"फिर मिलेंगे?"

इतने में आब्लान्सकी वहाँ आ पहुँचा। उसकी सास ने जब डाली के स्वास्थ्य का हाल पूछा तब उसने अत्यन्त खिन्नभाव से एक अपराधी की तरह उस प्रश्न का उत्तर दिया। इसके बाद लेविन का हाथ पकड़कर वह उसे अपने साथ ले गया। दोनों 'आँग्लतेर' (इँगलैंड) नामक होटल में भोजन करने चले गये।

*

६

'आँग्लतेर' होटल में आब्लान्सकी जी भर कर खाने-पीने लगा। वहाँ वह अत्यन्त मुक्त और प्रसन्न दिखाई देता था। यहाँ तक कि जो फ्रेंच स्त्री ग्राहकों का जी बहलाने के लिए नियुक्त की गई थी, उसके साथ भी वह हँसी-खुशी की बातें करने लगा। वह भी खिल-खिलाकर हँसने लगी। लेविन कुछ विशेष खा-पी नहीं रहा था, और उस बनी-ठनी हुई फ्रेंच स्त्री को देखकर उसका जी मतलाने लगा था। किटी की पवित्र स्मृति से उसका सारा मन भरा हुआ था, और उस स्वर्ग की देवी की तुलना में होटल की उस नारी को वह नरक-कीट समझ रहा था।

आब्लान्सकी ने धीरे-धीरे बातों का ऐसा सिलसिला जमाया कि लेविन को अपने मन की सच्ची बात उसके आगे प्रकट करनी ही पड़ी। उसने कहा—"इस समय मैं असाधारण प्रेम के चक्कर में पड़ा हूँ, बल्कि प्रेमोन्माद से ग्रस्त हो उठा हूँ। मैं चाहता हूँ कि किटी मेरा प्रेम स्वीकृत करना चाहती है या नहीं, इस बात का फ़ैसला शीघ्र से शीघ्र हो जाय। मुझे तनिक भी विश्वास नहीं है कि वह मेरा प्रस्ताव स्वीकार करेगी, फिर भी...."

आब्लान्सकी ने बीच ही में उसकी बात काटते हुए कहा—"तुम ऐसा क्यों सोचते हो? मैं तो इस सम्बन्ध में अपनी पत्नी की बात पर विश्वास करना चाहता हूँ। इन विषयों में उसकी भविष्यवाणी कभी विफल नहीं होती। उसका कहना है कि किटी के साथ निश्चय ही तुम्हारा विवाह होगा।"

यह बात सुनते ही लेविन का मुख प्रसन्नता के कारण खिल उठा। उसने गद्‌गद होकर कहा—"तुम्हारी स्त्री वास्तव में एक देवी हैं!"

दोनों बातें करते जाते थे और बीच-बीच में एक-एक घूँट मदिरा भी पीते जाते थे। कुछ समय के लिए दोनों चुप रहे। इसके बाद आब्लान्सकी ने कहा—"पर मैं एक बात की सूचना तुम्हें देना आवश्यक समझता हूँ। व्रान्सकी से तुम्हारा परिचय है?"

"नहीं तो! क्यों?"

"बात यह है कि वह तुम्हारा प्रतिद्वन्द्वी है। वह एक प्रतिष्ठित और अत्यन्त धनी 'कौन्ट' का लड़का है। उसकी रहन-सहन, शील-स्वभाव, आकृति-प्रकृति वास्तव में सराहनीय हैं। ऐसा सुन्दर युवक मैंने दूसरा नहीं देखा। सबसे बड़ी बात यह है कि वह स्वयं सम्राट् का एक 'एडीकांग' है। पिछली बार जब तुम मास्को से चले गये थे, तब उसके कुछ ही समय बाद वह पीटर्सबर्ग से यहाँ आया, और शीघ्र ही किटी के प्रेम

में पड़ गया। किटी की मा उसे बहुत पसन्द करती है। फिर भी मेरा विश्वास है कि तुम्हारे प्रस्ताव के स्वीकृत होने की पूरी सम्भावना है। पर अब तुम्हें इस सम्बन्ध में अधिक देर न करनी चाहिए।"

जब वे लोग खा-पी चुके, तब एक तातारी नौकर ने बिल पेश किया। कुल मिलाकर अट्ठारह रूबल (प्रायः छप्पन रुपये) का बिल था। दोनों ने मिलकर उसे चुकाया। इसके बाद दोनों एक दूसरे से बिदा हुए।

लेविन ने डेरे पर पहुँचकर किटी के यहाँ जाने की तैयारी की। प्रायः साढ़े सात बजे वह प्रिन्स श्चरबैट्सकी के मकान में पहुँचा। किटी संध्या से ही बड़ी घबराहट में पड़ी हुई थी। वह 'स्केटिंग' के समय ही भाँप गई थी कि लेविन उससे विवाह का प्रस्ताव करने आया हुआ है। उस प्रस्ताव को अस्वीकार करने से लेविन के मर्म में अत्यन्त निष्ठुर आघात पहुँचेगा, यह बात वह निश्चित रूप से जानती थी। वह वास्तव में लेविन को चाहती थी, पर इस हद तक नहीं चाहती थी कि वह उसके साथ विवाह करने को राज़ी हो जाय। साथ ही वह यह भी नहीं चाहती थी कि उसके कारण लेविन को मर्मपीड़ा पहुँचे। वह इसी कारण घबरा रही थी और असमंजस में पड़ी हुई थी।

किटी का सौन्दर्य दिन पर दिन चन्द्र-कला के समान बढ़ता चला जा रहा था। मास्को के प्रायः सभी सम्भ्रान्तवंशीय युवकों की आँखें उसकी ओर लगी हुई थीं। नाच-पार्टियों में उसके साथ नाचने की इच्छा रखनेवाले व्यक्तियों की संख्या बहुत अधिक थी। पर उसके माता-पिता का ध्यान विशेष करके दो युवकों की ओर आकर्षित हुआ था—एक लेविन और दूसरा कौन्ट व्रान्सकी। लेविन जब जाड़ों के प्रारम्भ में किटी से घनिष्ठता बढ़ाने की चेष्टा कर रहा था, उस समय किटी के माता और पिता के बीच इस सम्बन्ध में वाद-विवाद चलने लगा था कि लेविन किटी के योग्य पात्र है या नहीं। बूढ़ा प्रिन्स लेविन का पक्षपाती था, पर उसकी पत्नी ने किटी के योग्य जिस प्रकार के वर की कल्पना कर रक्खी थी, लेविन उस आदर्श से बहुत नीचे उतरता था। इसलिए वह अपने पति की बात को टालती चली जाती थी। लेविन के चले जाने के कुछ ही समय बाद जब कौन्ट व्रान्सकी पीटर्सबर्ग से आया और किटी के प्रति अपना प्रेमभाव प्रदर्शित करने लगा, तब किटी की मा प्रिन्सेस श्चरबैट्सकाया, बहुत प्रसन्न हो उठी और अपने पति से कहने लगी—"देखा! मैं ऐसा ही वर किटी के लिए चाहती थी।" वास्तव में कौन्ट व्रान्स्की में वे सब गुण वर्त्तमान थे जिन्हें किटी की मा चाहती थी। वह बहुत धनी, चतुर, प्रतिष्ठित, सभ्य और रूपवान् था; स्वयं ज़ार

की सभा में उसे एक विशिष्ट पद प्राप्त था, और सैनिक विभाग में वह उत्तरोत्तर उन्नति करता जा रहा था।

पर सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि उसके सुन्दर व्यक्तित्व ने किटी का हृदय जीत लिया था। व्रान्सकी मास्को में आते ही किटी के प्रति आकर्षित हो उठा था; और नाच-पार्टियों में उसके साथ नाचकर, प्रिन्स श्चरबैट्सकी के यहाँ आना-जाना जारी रखकर, उसने किटी के साथ यथेष्ट हेल-मेल बढ़ा लिया था। बूढ़ी प्रिन्सेस श्चरबैट्सकाया को इस सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं रह गया था कि व्रान्सकी उसकी लड़की से विवाह करने को उत्सुक है। किटी का भी यही विश्वास था, और वह इस बात से बहुत प्रसन्न थी। पर बूढ़ा प्रिन्स (किटी का पिता) प्रारम्भ से ही व्रान्सकी को घृणा की दृष्टि से देखने लगा था। उसका यह विश्वास था कि वह किटी के प्रति प्रेम प्रदर्शित करके केवल अपना मनोविनोद करना चाहता है, वास्तव में उससे विवाह करने का विचार वह नहीं रखता। पर अपनी पत्नी की किसी बात में दखल देकर झगड़ा खड़ा करना वह नहीं चाहता था, इसलिए वह केवल कुढ़कर रह जाता था। लेविन से वह बहुत प्रसन्न था। उसका विश्वास था कि लेविन प्रेम को एक अत्यन्त गम्भीर विषय समझता है, जिसकी परिणति केवल विवाह में ही हो सकती है।

पर किटी की मा लेविन से बहुत चिढ़ती थी। इसलिए आज जब लेविन को उसने देखा, तब उसके मन में तनिक भी प्रसन्नता नहीं हुई, बल्कि वह आशंकित हो उठी। उसकी आशंका का कारण यह था कि किटी लेविन से बहुत प्रसन्न रहती थी; बुढ़िया यह बात भली भाँति जानती थी। वह इस बात से डर रही थी कि लेविन अपने प्रति किटी की प्रसन्नता के भाव को कहीं प्रेम में परिणत न कर डाले! कहीं किटी भावुकता के फेर में पड़कर उसके विवाह के प्रस्ताव को स्वीकृत न कर बैठे! इस चिन्ता से ग्रस्त होकर उसने किटी के पास जाकर संकेत से लेविन के सम्बन्ध में उसे सावधान कर दिया।

लेविन नियमित समय से पहले ही किटी के यहाँ पहुँच गया। जब नौकर ने किटी को लेविन के आने की सूचना दी, तब वह आशंका से थरथराने लगी। इस बात की कल्पना उसे सबसे अधिक वेदना पहुँचा रही थी कि लेविन के मुँह पर उसे कहना पड़ेगा कि वह उससे विवाह करना नहीं चाहती! किरानी उत्सुकता से वह बेचारा आया होगा—वह बहुत भोला और भला आदमी! जैसा सच्चा उसका हृदय है, वैसा

ही गहरा उसका प्रेम है!—यह बात 'स्केटिंग' के समय उसकी आँखों का भाव देखकर किटी भली भाँति जान गई थी। फिर तत्काल उसे व्रान्सकी का स्मरण हो आया। कैसा सुन्दर, सुघड़ उसका व्यक्तित्व है! उसकी प्रत्येक बात में, प्रत्येक व्यवहार में क्या जादू है! नहीं, लेविन से स्पष्ट कह देना होगा कि वह उसे नहीं, किसी दूसरे को चाहती है। पर यह भी कैसे सम्भव हो सकता है! इसी प्रकार के विचारों की उलझन में वह पड़ी हुई थी, इतने में लेविन ने भीतर प्रवेश किया।

आते ही उसने कहा—"मैं नियमित समय से पहले आ पहुँचा हूँ, ऐसा जान पड़ता है। अच्छा ही हुआ, क्योंकि मैं आपसे एकान्त में एक बहुत आवश्यक बात कहना चाहता था।"

उसने देखा कि किटी की आँखों में और मुख पर लज्जा और संकोच की प्रगाढ़ छाया अंकित हो गई है। पर चूँकि वह यह निश्चय करके आया हुआ था कि वह हर हालत में अपने मन की बात कहकर ही रहेगा, इसलिए उसने कहा—"मैंने आपसे कहा है कि मैं यहाँ कब तक ठहरूँगा, यह बात आप पर निर्भर करती है।"

किटी का सिर नीचे को झुकता चला जा रहा था, क्योंकि वह जानती थी कि लेविन क्या प्रश्न करेगा और उसे क्या उत्तर देना होगा।

लेविन कहता चला गया—"मैं—मेरा आशय यह था—यह है कि—कि—आप मेरी पत्नी—मैं आपसे विवाह करना चाहता हूँ।" बड़ी कठिनाई से, काँपते हुए गले से, लेविन अन्त में अपने मन की बात कह पाया।

किटी की सारी आत्मा लेविन के इस प्रस्ताव को सुनकर पुलकाकुल हो उठी। वह नहीं जानती थी कि लेविन की बात का ऐसा हर्षोत्पादक प्रभाव उस पर पड़ेगा। पर फिर व्रान्सकी की मूर्ति उसके मन में जाग पड़ी। अपनी स्वच्छ, तरल और निश्छल आँखों से लेविन की ओर देखकर उसने सकरुण स्वर में कहा—"यह असम्भव है—मुझे क्षमा कीजिए!"

एक क्षण पहले किटी लेविन के हृदय-राज्य के कितने निकट थी! कितनी घनिष्ठता से उसके प्राणों से जड़ित थी! और अब? अब वह उससे एकदम विच्छिन्न होकर दूर—बहुत दूर चली गई थी!

"ठीक ही है! मैं जानता था कि होगा यही, जो हुआ है!" यह कहकर लेविन चलने लगा। पर ठीक उसी समय किटी की मा वहाँ आकर खड़ी हो गई, इसलिए उसे रुक जाना पड़ा।

७

लेविन के साथ किटी को एकान्त में देखकर क्षण भर के लिए बूढ़ी प्रिन्सेस के मन में भय का भाव समा गया। पर किटी के मुख का भाव देखकर उसे यह ताड़ने में देर न लगी कि उसने लेविन के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया है। वह मन ही मन भगवान् को धन्यवाद देने लगी। इसके बाद लेविन के पास बैठकर वह उससे उसके देहाती जीवन के सम्बन्ध की बातें पूछने लगी।

कुछ ही समय बाद एक-एक करके अतिथियों का आना आरम्भ हो गया। पहले कौन्टेस नार्ड्सटन आई, जो लेविन से बहुत चिढ़ती थी। उसने आते ही कहा—"ओह मिस्टर लेविन! आखिर आप हम लोगों की 'पापपुरी' में फिर चले आये!"

लेविन मास्को को 'पापपुरी' कहा करता था। कौन्टेस ने फिर कहा—"क्या 'पापपुरी' में अब सुधार हो गया है या तुम्हारा ही पतन हो गया है?" यह कहकर वह एक बार व्यंग्यपूर्ण दृष्टि से किटी की ओर देखकर मुसकराई।

लेविन ने उत्तर दिया—"मुझे इस बात से बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप मेरे शब्दों को भूलती नहीं।"

कुछ देर बाद एक दूसरी महिला ने भीतर प्रवेश किया और उसके पीछे एक रूपवान् और सुडौल सैनिक अफ़सर आ पहुँचा। उसे देखते ही लेविन के मन में यह विश्वास हो गया कि व्रान्सकी वही होगा, जिसकी चर्चा आब्लान्सकी ने की थी। ठीक है, किटी का प्रेमिक यही है! इसी के कारण किटी ने उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। वह किटी की आँखों का अनुसरण कर रहा था। अफ़सर को देखते ही उसके मुख में जो एक दीप्त हर्ष का भाव झलक उठा था, उससे रहा-सहा सन्देह भी लेविन के मन से जाता रहा। लेविन के मन में व्रान्सकी को अच्छी तरह से जानने का कौतूहल जगा, और वह उठकर चुपचाप भाग निकलने का विचार त्यागकर डटकर बैठ गया।

किटी की मा ने व्रान्सकी से लेविन का परिचय कराते हुए दोनों के पूरे-पूरे नाम कह सुनाये—"कान्स्टेन्टिन डिमिट्रिच लेविन, **कौन्ट अलेक्से किरिलोविच व्रान्सकी।**"

परिचय होते ही व्रान्सकी बड़ी शालीनता के साथ उठ खड़ा हुआ और सुमधुर मुसकान से लेविन की ओर देखते हुए बहुत ही प्रेम-पूर्वक उसने उससे हाथ मिलाया और बोला—"मैंने सुना था कि आप जाड़ों के प्रारम्भ में यहाँ आये हुए थे, पर मेरे यहाँ पहुँचने के पहले ही आप अकस्मात् देहात चले गये थे; इस कारण उस समय आपके दर्शनों का सौभाग्य मुझे प्राप्त नहीं हो सका था।"

इस पर कौंटेस नार्ड्सटन ने फिर एक बार 'पापपुरी' से लेविन की घृणा का उल्लेख किया। व्रान्सकी बिना किसी द्वेष-भाव के मन्द-मन्द मुसकराने लगा।

व्रान्सकी के इतने ही परिचय से लेविन को इस बात का पता लग गया कि व्रान्सकी के प्रति किटी क्यों आकर्षित हुई है। उसके प्रत्येक रंग-ढंग, बोल-चाल और पोशाक-पहनावे में एक संभ्रान्त सरलता और साथ ही सुन्दर शालीनता पाई जाती थी। उसका व्यवहार सरल, स्वाभाविक और मधुर था।

व्रान्सकी ने लेविन का पक्ष लेते हुए कहा—"देहाती जीवन मुझे भी बहुत पसन्द है। विशेषकर जब मैं विदेशों में जाता हूँ तब मुझे रूस की ग्रामीण जनता के बीच में जाकर रहने की उत्कट इच्छा हो आती है।" यह बात कहते हुए वह एक बार लेविन की ओर स्नेह-भरी दृष्टि से देखता था और एक बार किटी की ओर।

उपस्थित मंडली में कुछ देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। अन्त में प्रेतात्माओं को टेबिल पर बुलाने की चर्चा चल पड़ी। कौंटेस नार्ड्सटन इस विद्या में विशेषज्ञ समझी जाती थी। व्रान्सकी ने अपनी सहज मुसकान से कौंटेस से यह प्रार्थना की कि वह 'अलौकिक प्राणियों' के साथ उसका भी परिचय करायें।

"अच्छी बात है, शनिवार को प्रयोग किया जायगा।" यह कहकर कौंटेस ने लेविन की ओर मुँह करके पूछा—"आप प्रेतात्माओं के अस्तित्व पर विश्वास करते हैं या नहीं?"

लेविन ने उत्तर दिया—"मेरी यह राय है कि हमारे देश की तथाकथित सुशिक्षित जनता जो टेबिलों पर मृतात्माओं को बुलाने की बात पर विश्वास करती है, उन अपढ़ किसानों से कुछ भी अधिक समझदार नहीं है, जो जादू-टोने में विश्वास करते हैं।"

इस पर कौंटेस ने एक कटु व्यंग्य किया। किटी प्रारम्भ से ही अत्यन्त सदय दृष्टि से लेविन की ओर देख रही थी, और उसकी प्रत्येक बात पर ध्यान दे रही थी। कौंटेस की कड़ी बात सुनकर उसने

तत्काल लेविन का पक्ष लिया और उसकी ओर से स्वयं उत्तर देने लगी।

विवाद जब कुछ ठंडा पड़ा, तो व्रान्सकी ने प्रस्ताव किया कि 'टेबिल-टर्निंग' का प्रयोग उसी समय वहीं पर किया जाय। कौंटेस नार्ड्सटन ने अपने स्वाभाविक व्यंग्य के साथ उपस्थित जनता को यह सुझाया कि लेविन को माध्यम बनाया जाय। व्रान्सकी के कहने पर किटी एक मेज़ लाने गई। ठीक इसी समय लेविन से उसकी आँखें मिलीं। उसकी आँखों में करुणापूर्ण प्रसन्नता का भाव वर्तमान था। सारी उपस्थित मंडली में केवल वही जानती थी कि लेविन के हृदय की क्या दशा हो रही है। उसकी आँखें लेविन से कह रही थीं—"मेरे कारण आपको मार्मिक कष्ट पहुँचा है, इसके लिए मैं आपसे हृदय से क्षमा चाहती हूँ। मैं आज सुखी हूँ—बहुत सुखी! मेरा प्रेमिक मेरे निकट है। अपने इस सुख के कारण मैं लज्जित हूँ—पर इसमें मेरा वश नहीं है!"

लेविन की आँखें जैसे कहती थीं—"मैं तुमको, अपने को—सारे संसार को घृणा की दृष्टि से देखने लगा हूँ।"

लेविन अपना टोप हाथ में लेकर जाने के लिए उठा। पर ठीक उसी समय बूढ़े प्रिंस श्चरबैट्सकी ने कमरे में प्रवेश किया। लेविन को देखकर उसने हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की, पर व्रान्सकी की ओर उसने आँख उठाकर भी न देखा, यद्यपि व्रान्सकी उससे मिलने के लिए उठ खड़ा हुआ था। व्रान्सकी के प्रति पिता के इस व्यवहार से किटी को बहुत दुःख हो रहा था। अन्त में प्रिन्स ने बड़ी रुखाई से व्रान्सकी के अभिवादन का उत्तर दिया। प्रिंस की आँखें बचाकर लेविन चुपचाप वहाँ से चल दिया।

८

व्रान्सकी पारिवारिक जीवन से कभी परिचित नहीं रहा। जब उसके पिता की मृत्यु हुई थी, तब वह बहुत छोटा था। उसकी मा पीटर्स-बर्ग के सम्भ्रान्त समाज में एक प्रसिद्ध महिला थी, और बहुत से विशिष्ट व्यक्तियों के साथ उसका प्रेम-सम्बन्ध रह चुका था।

व्रान्सकी सैनिक शिक्षा प्राप्त करके एक प्रतिष्ठित अफ़सर का पद पाने के बाद पीटर्सबर्ग के धनी सैनिक समाज के उच्छृंखल जीवन-प्रवाह में बहने लगा था। सम्भ्रान्त-समाज की महिलाओं से उसका परिचय होने पर भी उसका प्रेम-सम्बन्ध किसी दूसरे ही समाज में चलता था। इसलिए इस बार मास्को आने पर जब एक कुलीन घराने की लड़की से घनिष्ठता होने का सौभाग्य उसे प्राप्त हुआ था, तब अपने पिछले उच्छृंखल जीवन से इस शान्त स्निग्धतामय जीवन के वातावरण की तुलना करने पर उसे एक निराला ही अनुभव हुआ। ऐसी सुखकर, पवित्र अनुभूति इससे पहले उसे और कभी नहीं हुई थी। पर यह विचार एक क्षण के लिए भी उसके मन में उदित नहीं हुआ कि किटी के समान शुद्ध-हृदय और निष्पाप-प्रवृत्ति लड़की से हेलमेल बढ़ाने और प्रेम प्रदर्शित करने का अर्थ केवल यही समझा जायगा कि वह उससे विवाह करना चाहता है।

वास्तव में अपने समाज के अन्य व्यक्तियों की तरह व्रान्सकी भी विवाहित जीवन से घृणा करता था। वह केवल एक मधुलोभी भ्रमर के समान नये-नये कुसुमों का रस ग्रहण करते रहने में ही जीवन की सार्थकता समझता था, और प्रेम के किसी भी बन्धन में अधिक समय तक बँधना नहीं चाहता था। किटी के पवित्र हृदय का निष्कलुष प्रेम पाकर उसके हृदय में एक नई अनुभूति जगी थी, इसमें सन्देह नहीं; पर उसकी परिणति केवल विवाह के ही रूप में होनी चाहिए, किटी और उसके मा-बाप उससे केवल यही आशा रखते होंगे, इस बात की कल्पना उसके मन में किसी भी रूप में उत्पन्न नहीं हुई।

किटी के पास से परम प्रसन्न होकर जब वह घर लौटा, तब पलँग पर लेटते ही गाढ़ निद्रा में मग्न हो गया। दूसरे दिन प्रातःकाल जब वह जगा, तब चित्त में एक सुन्दर सुखमय शान्ति का अनुभव कर रहा था।

उसकी मा उसी दिन पीटर्सबर्ग से आनेवाली थी। सब कामों से निवृत्त होकर वह जब स्टेशन जाने को तैयार हुआ तब ग्यारह बजे का समय हो चुका था। मास्को स्टेशन में पहुचते ही उसे आब्लान्सकी दिखाई दिया। आब्लान्सकी ने परम प्रसन्नतापूर्वक कहा—"हल्लो, श्रीमान्! आप भी आ पहुँचे! आप किसके लिए आये हैं?"

व्रान्सकी ने मुसकराकर उससे हाथ मिलाते हुए उत्तर दिया—"मैं अपनी मा के लिए आया हूँ। वे पीटर्सबर्ग से आ रही हैं। और आप?"

"मैं? मैं एक युवती महिला को लिवा लाने आया हूँ।"

"अच्छा! यह बात है!"

"कोई बुरी कल्पना मन में न लाइएगा। मेरी बहन आना आ रही है।"

"ओह! श्रीमती केरेनिना!"

"जी हाँ। श्रीमान् शायद उसे जानते हैं?"

"सम्भव है, जानता होऊँ। उनके पति को तो मैं अवश्य जानता हूँ। केवल मैं ही नहीं, सारा पीटर्सबर्ग उन्हें जानता है। वे बहुत विद्वान्, कुशल राजनीतिज्ञ और धार्मिक हैं। पर आप जानते हैं, इन सब बातों से मेरा कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रहता।"

वे लोग बातें कर ही रहे थे कि इतने में एक कुली ने आकर सूचना दी कि 'सिगनल डाउन' हो चुका है। जितने भी लोग प्लेटफ़ार्म पर खड़े थे, सब बड़ी उत्सुकता से गाड़ी के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। इस बीच आब्लान्सकी ने लेविन की चर्चा छेड़ दी थी। व्रान्सकी ने उसके स्वभाव की विचित्रता के सम्बन्ध में संकेत किया। आब्लान्सकी ने लेविन की प्रशंसा के पुल बाँध दिये और साथ ही यह भी कह दिया कि किटी ने सम्भवतः उसके विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया है, इसी कारण कल रात उसकी बातों में रूखापन आगया होगा।

इतने में इंजन की सीटी सुनाई दी, और एक भयंकर दैत्य की तरह हाँफती हुई गाड़ी प्लेटफ़ार्म पर आ लगी। व्रान्सकी किटी की बात सोच रहा था। लेविन का प्रेम अस्वीकृत करने का अर्थ स्पष्ट ही व्रान्सकी की विजय थी। अपनी इस विजय से वह अपने आपको विशेष गौरवान्वित समझ रहा था। इतने में गार्ड ने आकर उसे सूचना दी कि उसकी मा पासवाले कम्पार्टमेंट में बैठी हैं। गार्ड के साथ जब वह उस विशेष कम्पार्टमेंट में पहुँचा, तब दरवाज़े पर उसे रुक जाना पड़ा। एक महिला बाहर निकलना चाहती थी।

उस महिला के देखते ही व्रान्सकी की अनुभवी आँखें यह जान गईं कि वह एक प्रतिष्ठित और कुलीन घराने की है। जब वह बाहर निकल गई, तब व्रान्सकी ने भीतर प्रवेश करने के पहले फिर एक बार लौटकर बड़े ध्यानपूर्वक उसकी ओर देखा। वह केवल अपूर्व सुन्दरी ही नहीं थी, परन्तु उसकी प्रत्येक गति से एक आश्चर्यजनक शालीनता व्यक्त हो रही थी, जैसी व्रान्सकी ने इसके पहले कभी किसी महिला में नहीं देखी थी। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात व्रान्सकी को यह मालूम हुई कि उस महिला ने अपनी मार्मिक आँखों के स्निग्ध और सहृदय कटाक्ष से एक बार उसकी ओर देखा था, जैसे वह उसे पहचान रही हो। बाद को भीड़ में वह किसी की खोज में चली गई।

व्रान्सकी भीतर अपनी मा से जाकर मिला और दोनों एक-दूसरे से कुशल-समाचार पूछने लगे। पर व्रान्सकी अन्यमनस्क हो रहा था, और उसके कान दरवाज़े के बाहर एक सुमधुर कण्ठस्वर की ओर लगे हुए थे। वह जान गया था कि वह कण्ठस्वर उसी महिला का है, जो अभी उस डिब्बे से बाहर निकली है। वह किसी एक व्यक्ति को सम्बोधित करके कह रही थी—"ईवान पेट्रोविच, यदि आप कहीं मेरे भाई को देख पावें, तो उसे यहाँ भेज देने की कृपा कीजिएगा।" यह कहकर वह फिर डिब्बे के भीतर चली आई।

व्रान्सकी की मा ने उससे पूछा—"क्या आपके भाई से आपकी भेंट हो गई?"

व्रान्सकी तत्काल समझ गया कि वह महिला आब्लान्सकी की बहन—श्रीमती केरेनिना है। उसने कहा—"आपका भाई यहीं है। क्षमा कीजिएगा, मैंने आपको पहले नहीं पहचाना। पीटर्सबर्ग में हम लोगों का परिचय इतना क्षणिक रहा है कि मुझे पूरा विश्वास है, आप भी मुझे पहचान न पाई होंगी।"

"मैं आपको कैसे न पहचानती जब कि रास्ते भर आपकी मा मुझसे केवल आपके विषय की ही बातें करती रहीं!" यह कहते हुए महिला के मुख में उमंग और उत्साह का भाव मधुर मुसकान के रूप में झलक उठा। इस समय तक वह उस भाव को छिपाने का प्रबल प्रयत्न कर रही थी जो व्रान्सकी को प्रथम बार देखने से उसके मन में जगने लगा था। फिर उसने कहा—"पर मेरा भाई यहाँ नहीं दिखता!" व्रान्सकी तत्काल बाहर प्लेटफ़ार्म पर चला गया और पुकार-कर कहने लगा—"आब्लान्सकी, यहाँ!"

आब्लान्सकी के आने पर श्रीमती केरेनिना स्वयं बाहर उतरकर उससे अत्यन्त आवेग के साथ गले मिलीं। व्रान्सकी की दृष्टि एक क्षण के लिए भी उससे अलग नहीं हो रही थी। पर सहसा उसे याद आया कि उसकी मा उसके लिए ठहरी हुई है। वह भीतर गया। कौन्टेस व्रान्सकाया (व्रान्सकी की मा) ने उसे देखकर कहा—"मिसेज़ केरेनिना वास्तव में बहुत सुन्दरी है, क्यों ? और मैंने सुना है कि तुम यहाँ किसी लड़की के चक्कर में पड़े हुए हो। चलो, अच्छा ही है!"

"तुम न जाने क्या कहती हो, मा!" कहकर व्रान्सकी ने उस बात को टाल दिया।

इतने में श्रीमती केरेनिना फिर डिब्बे में आकर कौन्टेस से बोलीं—"कौन्टेस, आपको आपका लड़का मिल गया है, और मुझे मेरा भाई। मैंने भी अपने क़िस्से-कहानियों का सारा भाण्डार आपके आगे खाली कर दिया है, अब अधिक मेरे पास कुछ कहने को नहीं रहा है।"

"नहीं, नहीं, आप ऐसा क्यों कहती हैं? मैं आपके साथ एक क्षण के लिए भी न उकताकर सारे संसार की यात्रा कर सकती हूँ। कुछ भी हो, अब आप अपने लड़के के सम्बन्ध में अधिक चिन्ता करना छोड़ दें।" इसके बाद कौन्टेस ने अपने लड़के की ओर देखकर कहा—"श्रीमती केरेनिना अपने एक आठ वर्ष के लड़के को घर पर छोड़कर आई है। आज जीवन में पहली बार वह लड़का अपनी मा के साथ से अलग हुआ है, इसलिए वह उसकी चिन्ता से बहुत विकल हो रही है।"

श्रीमती केरेनिना सुन्दर और सहृदय मुसकान से व्रान्सकी को लक्ष्य करके बोलीं—"जी हाँ, हम दोनों रास्ते-भर अपने-अपने लड़कों के सम्बन्ध में बातें करती आ रही हैं।"

व्रान्सकी ने बातचीत के इस सिलसिले का लाभ उठाते हुए कहा—"पर आपको निश्चय ही किसी दूसरे के लड़के की चर्चा नहीं भाई होगी!" पर श्रीमती केरेनिना स्पष्ट ही इस सिलसिले को जारी रखना नहीं चाहती थी। बात वहीं पर समाप्त करते हुए कौन्टेस को उसके साथ के लिए धन्यवाद देकर वह नीचे उतरने की तैयारी करने लगी। कौन्टेस ने उसका हाथ पकड़कर बड़े आवेग के साथ कहा—"मैं यद्यपि एक बूढ़ी स्त्री हूँ, तथापि मैं स्पष्ट शब्दों में यह कहना चाहती हूँ कि आपने मेरा हृदय चुरा लिया है।"

श्रीमती केरेनिना यह सुनकर मुख पर सलज्ज मुसकान झलकाकर चुप हो रहीं; और फिर व्रान्सकी की ओर हाथ बढ़ाकर वह अत्यन्त मार्मिक मधुरिमा के साथ उसकी ओर देखने लगीं। उसने दृढ़ता-

पूर्वक व्रान्सकी का हाथ पकड़कर हिलाया। व्रान्सकी का रोयाँ-रोयाँ उस झटके से विकल हो उठा। इसके बाद वह आश्चर्यमयी महिला अत्यन्त शालीनता के साथ, सहज-सुन्दर गति से बाहर चली गई। व्रान्सकी की आँखें उसी का अनुसरण करती रहीं।

जब व्रान्सकी अपनी मा का हाथ पकड़कर गाड़ी से नीचे उतरा, तब उसने देखा कि प्लेटफ़ार्म पर बड़ी हड़बड़ी मची हुई है और लोग घबराये हुए-से चले जा रहे हैं। स्पष्ट ही कहीं कोई दुर्घटना घट गई थी। आब्लान्सकी अपनी बहन का हाथ पकड़े पीछे को लौट आया। महिलायें फिर से गाड़ी के भीतर चली गईं। व्रान्सकी और आब्लान्सकी लोगों की घबराहट का कारण जानने के लिए चले गये। उनके लौटने से पहले ही महिलाओं को दुर्घटना का हाल मालूम हो गया था। एक व्यक्ति गाड़ी से कटकर मर गया था। आब्लान्सकी बहुत ही दुःखित हो रहा था। वह कहने लगा--"उफ़! आना, यदि तुम उसे देख पातीं! बड़ा ही भयंकर दृश्य है! उफ़ कौन्टेस! आप यदि देखतीं तो आपका हृदय दहल उठता! उसकी स्त्री अपना सिर पीट-पीटकर रो रही है। कहते हैं कि वह अपने कुटुम्ब का एकमात्र आधार था! उफ़, कैसी भयानक दुर्घटना है!"

व्रान्सकी अत्यन्त गम्भीरभाव से मौन खड़ा था। श्रीमती केरेनिना बड़ी घबराहट-भरे शब्दों से प्रायः फुसफुसाती हुई बोलीं--"क्या उसकी स्त्री की सहायता का कोई प्रबन्ध नहीं किया जा सकता?"

व्रान्सकी ने एक बार सुगम्भीर, मौन दृष्टि से उसकी ओर देखा, और "मैं अभी आया, मा!" कहकर बाहर चला गया। थोड़ी देर बाद जब वह लौटकर आया, तब आब्लान्सकी उस समय कौन्टेस के आगे एक नई अभिनेत्री के गुणों का बखान कर रहा था। व्रान्सकी ने कहा--"मा, अब चलना चाहिए!"

चारों व्यक्ति प्रायः साथ-साथ चले। व्रान्सकी अपनी मा का हाथ पकड़े था और आब्लान्सकी अपनी बहन का। फाटक के पास स्टेशन-मास्टर ने उन लोगों को रोका और व्रान्सकी से कहा--"आपने मेरे सहकारी को दो सौ रूबल (प्रायः चार सौ रुपये) दिये हैं। कृपा करके यह बता दीजिए कि वे रुपये आपने किसके लिए दिये हैं।"

व्रान्सकी ने कुछ रुखाई के साथ उत्तर दिया--"विधवा के लिए। मेरी समझ में नहीं आता कि इस प्रश्न की आवश्यकता ही क्यों आ पड़ी!"

आब्लान्सकी को जब मालूम हुआ कि व्रान्सकी सद्यः-पीड़िता विधवा की सहायता के लिए चुपचाप दो सौ रूबल दे आया है, तब वह गद्‌गद हो उठा––"वाह, आपने यह बहुत ही अच्छा काम किया ! आप बहुत ही सदय हैं ! कौन्टेस, आपके लड़के के हृदय की इस उदारता के लिए मैं आपको बधाई देता हूँ।"

व्रान्सकी स्टेशन से बाहर आकर अपनी माता के साथ एक गाड़ी में बैठकर अपने डेरे की ओर चला गया। आना भी अपने भाई के साथ एक गाड़ी में सवार हुईं। लोग अभी तक उसी दुर्घटना की चर्चा कर रहे थे। कोई कहता था––"सुनते हैं, उसके शरीर के दो टुकड़े हो गये, बड़ी भयानक मृत्यु हुई है !" कोई कहता था––"नहीं, तत्काल मृत्यु हो जाने से बेचारे उस ग़रीब को कोई कष्ट न हुआ।"

श्रीमती केरेनिना के ओंठ काँप रहे थे और उसकी आँखों में आँसू चमकने लगे थे। आब्लान्सकी ने आश्चर्य से पूछा––"तुम्हें क्या हो गया, आना ?"

"ये सब लक्षण मुझे बुरे जान पड़ते हैं।"

"क्या बात करती हो ! तुम यहाँ आगई हो, यह इतनी बड़ी बात है कि कोई भी बुरा लक्षण इसके महत्त्व को नष्ट नहीं कर सकता। तुम कल्पना नहीं कर सकतीं कि मैं तुम पर कितनी आशा बाँधे बैठा हूँ।"

"तुम क्या व्रान्सकी से बहुत पहले से परिचित हो ?" यह प्रश्न पूछते समय आना का गला काँप रहा था।

"हाँ। तुम जानती हो, वह सम्भवतः किटी से विवाह करेगा ?"

"अच्छा ?"––धीरे से आना ने कहा––"पर इन सब बातों को छोड़ो। अपना हाल सुनाओ। मैं तुम्हारा पत्र पाकर आई हूँ।" ऐसा जान पड़ता था कि वह व्रान्सकी की चर्चा को जान-बूझकर आगे बढ़ाना नहीं चाहती थी।

आब्लान्सकी ने कहा––"मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मेरी जटिल परिस्थिति को सुलझाना तुम्हारे ही हाथ की बात है।"

६

जब आना आब्लान्सकी के मकान में पहुँची, उस समय डाली अपने लड़के ग्रीशा को ड्राइंग-रूम में फ्रेंच पढ़ा रही थी। पर उसके म्लान मुख से यह बात स्पष्ट प्रकट हो जाती थी कि यद्यपि वह फ्रेंच सिखाने में व्यस्त है, तथापि एक क्षण के लिए भी अपने दुःख को नहीं भूल पा रही है। घर के काम-धंधों के प्रति उपेक्षा का भाव दिखाने पर भी वास्तव में वह वैसा नहीं कर पा रही थी। नौ वर्षों से घर-गृहस्थी के सब कामों का भार अपने ऊपर लेने की जो आदत उसकी पड़ी हुई थी, उसे एकदम छोड़ देना उसके लिए असम्भव हो रहा था। उसने यद्यपि अपने पति से यह कहा था कि आना चाहे आवे चाहे न आवे, उसे तनिक भी परवा नहीं है; तथापि पीछे ही पीछे उसने उसके स्वागत की सब तैयारियाँ कर रक्खी थीं। वास्तव में आना से वह बहुत प्रेम करती थी। आना के सकरुण और सहृदय स्वभाव से वह भली भाँति परिचित थी। इसलिए ज्यों ही आना ने भीतर प्रवेश किया, त्यों ही डाली हर्ष से पुलकित होकर उठ बैठी और उसे गले से लगाकर उसने उसका मुँह चूमा।

आना ने कहा—"डाली, तुमसे मिलने पर मुझे जो प्रसन्नता हुई है, मैं उसका वर्णन नहीं कर सकती।"

"मुझे भी बड़ी प्रसन्नता हुई है।" यह कहकर डाली आना के मुख के भाव से यह जानने की चेष्टा करने लगी कि उसे सब बातें मालूम हैं या नहीं। इसके बाद वह आना को अपने कमरे में ले गई। आना ने ग्रीशा का मुँह चूमते हुए विस्मय और आनन्द के साथ कहा—"यह ग्रीशा है! अरे, यह तो काफ़ी बड़ा हो गया है! और यह टान्या है! यह मेरे लड़के सेरेज़ा की समवयस्क जान पड़ती है।" यह कहकर उसने टान्या का मुँह भी प्रेमपूर्वक चूमा; और फिर बोली—"मुझे एक-एक करके अपने सब बच्चों को दिखाओ डाली!" आना डाली के सब बच्चों के केवल नाम ही नहीं जानती थी, बल्कि प्रत्येक की जन्म-तिथि और प्रत्येक के शील-स्वभाव की विशेषताओं से भी परिचित थी। उसने उन सब बातों का उल्लेख किया। डाली पर आना की इस सहृदयता का प्रभाव नये सिरे से पड़ा। वह गद्गद हो उठी।

अन्त में आना ने सकरुण स्वर में कहा—"प्यारी डाली, मुझे सब बातें मालूम हैं!" डाली ने रुखाई के साथ एक बार उसकी ओर देखकर आँखें नीची कर लीं।

आना कहती चली गई—"डाली, मैं तुम्हारे दुःख की गहराई का अनुभव भली भाँति कर रही हूँ और अपने भाई का पक्ष लेकर तुम्हें झूठी सान्त्वना देने का ढोंग नहीं रचना चाहती। मैं हृदय से तुम्हारे लिए दुःखित हूँ, प्यारी डाली!" यह कहकर वह वास्तव में रोने लगी।

पर डाली की रुखाई में इस बात से कोई अन्तर न पड़ा। उसने कहा—"मुझे कोई सान्त्वना नहीं दे सकता। बिगड़ी हुई बात अब किसी प्रकार बन नहीं सकती। सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो चुका है!"

"पर डाली, कोई ऐसा उपाय अवश्य सोच निकालना होगा, जिससे इस भयानक स्थिति से तुम्हारी भी रक्षा हो और घर की भी।"

"अब कोई उपाय नहीं हो सकता, सब कुछ समाप्त हो गया है!"

"अच्छा डाली, मैं तुम्हारे मुंह से सारा हाल सुनना और समझना चाहती हूँ। उसे जो कुछ कहना था वह कह चुका, अब तुम कह सुनाओ।"

"तो सुनो। तुम्हें मालूम है, मेरा विवाह हुए प्रायः नौ वर्ष हो गये, और इतने वर्षों तक मेरा यह विश्वास बना रहा कि स्टीवा—स्टीफ़ेन आर्केडेविच मुझे छोड़कर और किसी दूसरी स्त्री से सम्बन्ध नहीं रखता। पर अकस्मात् मुझे जब उसके एक पत्र से पता लगा कि वह हमारे घर की भूतपूर्व फ़्रेंच गवर्नेस से—ओ भगवान्! यह कैसी भयंकर बात है, तनिक तुम्हीं अपने मन में सोचो! उफ़!" यह कहकर वह सिसक-सिसककर रोने लगी।

आना ने भी प्रायः सिसकते हुए कहा—"मैं खूब समझती हूँ, प्यारी डाली, तुम्हारे मर्म की पीड़ा का अनुभव मैं भली भाँति कर रही हूँ।"

"पर उसके हृदय में अपने घृणित कर्म के लिए तनिक भी पछतावा नहीं हो रहा है!"

आना ने इस बात का उत्तर तत्काल देते हुए कहा—"नहीं डाली, ऐसा न कहो! उसके पछतावे का अन्त नहीं है। उसके हृदय की दशा बहुत दयनीय हो रही है। तुम जानती हो, वह चाहे कैसी ही भयंकर भूल क्यों न करे, पर उसका हृदय बहुत ही कोमल है। वह सचमुच तुम्हें हृदय से चाहता है, डाली! मेरी यह बात तुम्हें बना-

वटी मालूम होगी, पर मैं बिलकुल सच कह रही हूँ। तुम विश्वास करो, वह सदा तुम्हें अपने अन्तःकरण से चाहता रहा है, और तुम्हारा आदर करता आया है। वह अत्यन्त करुणा के साथ मुझसे कहता था—"डाली स्त्री नहीं, एक देवी है; पर वह अब मुझे किसी प्रकार क्षमा नहीं करेगी !"

डाली का हृदय आना की इस तरह की बातों से बहुत-कुछ पिघल गया। पर फिर कुछ सोचकर वह आवेग के साथ कहने लगी—"फ्रेंच गवर्नेस बहुत स्वस्थ और सुन्दर है, और मेरा रूप और यौवन एकदम नष्ट हो चुका है। पर किसकी खातिर मेरी यह दशा हुई है ? केवल उसके (डाली के पति के) और उसके बच्चों के लिए ! क्या उसने कभी इस बात पर भी विचार किया है ? घर का सारा जमा-जमाया कारोबार उखड़ने जा रहा है, पर मैं क्या करूँ ! इसमें मेरा क्या अपराध है ! बेचारे बच्चों की क्या दशा होगी ! उफ़, आना ! मुझसे अब रहा नहीं जाता; तुम्हीं कोई उपाय बताओ !" यह कहकर वह फिर बिलख-बिलखकर रोने लगी।

"डाली, तुम्हें संसार का अनुभव नहीं है, पर मैं जानती हूँ कि स्टीवा (आब्लान्सकी) के स्वभाव के व्यक्तियों का आचरण बाहर चाहे कैसा ही क्यों न हो, पर घर की स्त्री के प्रति उनके हृदय में श्रद्धा और आदर का भाव रहता है। यदि तुम्हारे हृदय में स्टीवा के प्रति प्रेम का एक कण भी शेष रह गया हो, तो मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम पिछली बातों को एकदम भूल जाओ और उसे क्षमा—हाँ, क्षमा कर दो !"

डाली आना की बातों पर कुछ देर तक मौनभाव से विचार करती रही। इसके बाद आँखें पोंछकर बोली—"चलो, तुम्हें तुम्हारा कमरा दिखा दिया जाय।"

१०

आना उस दिन किसी से मिलने नहीं गई; दिन भर डेरे पर ही रही। अपने भाई को एक पत्र लिखकर उसने यह सूचित कर दिया कि लक्षण अच्छे दिखते हैं और वह संध्या को भोजन घर पर ही करे।

आब्लान्सकी ने वैसा ही किया। डाली के भाव में यद्यपि अभी तक उसके प्रति रुखाई वर्त्तमान थी, तथापि पिछले कुछ दिनों की अपेक्षा उसके व्यवहार में आज आब्लान्सकी को विशेष अन्तर दिखाई दिया। उसका हृदय आशान्वित हो उठा।

भोजन के बाद जब डाली अपने कमरे में चली गई, तब आना ने अपने भाई से कहा—"स्टीवा, ईश्वर का नाम लेकर तुम भी भीतर चले जाओ!" आब्लान्सकी आना का संकेत समझ गया और अपने हाथ की अधजली सिगार फेंककर वह भीतर चला गया।

किटी आना से मिलने के लिए आई हुई थी। वह उससे परिचित थी, पर घनिष्ठ रूप से नहीं। आना के मुख पर स्वास्थ्य, सौन्दर्य और शालीनता का जो एक दीप्त भाव झलक रहा था, वह ऐसा अपूर्व था कि किटी देखकर चकित रह गई और मुग्ध हो गई। बीच-बीच में विषाद की एक म्लान छाया आना के मुख की उस दीप्ति को ढक लेती थी, पर उससे उसका आकर्षण घटने के बदले और बढ़ जाता था।

आना एक सोफ़ा पर अधलेटी अवस्था में बैठी थी, और डाली के बच्चे उसे चारों ओर से घेरकर कूद-फाँद मचा रहे थे। मास्को के एक प्रसिद्ध स्थान में शीघ्र ही एक विराट् नृत्योत्सव होनेवाला था। उसी की चर्चा चल रही थी। आना ने पूछा—"कब होगा वह नाच?"

"अगले सप्ताह। बहुत बड़ा आयोजन हो रहा है। बड़ी चहल-पहल रहेगी।"

आना ने कुछ उदास स्वर में कहा—"हो सकता है। पर मुझे तो किसी भी नाच-पार्टी में चहल-पहल की कोई बात नहीं दिखाई देती! कोई उल्लास मेरे मन में नहीं रहता!"

"पर तुम उस नाच में जाओगी तो अवश्य ही; क्यों?"

"हाँ, सम्भव है मुझे जाना पड़े।"

"मुझे तुम्हारे जाने से बहुत प्रसन्नता होगी। मैं तुम्हें नाच-रंग के बीच में देखना चाहती हूँ। तुम बहुत ही सुन्दरी हो!"

आना के मुख पर लज्जा की एक क्षीण आभा दिखाई दी। पर उसने अपने को सँभालकर कहा—"अच्छी बात है; यदि मैं नाच में जाऊँगी तो केवल तुम्हारी ही खातिर!"

कुछ देर के बाद आना ने फिर कहा—"स्टीवा ने एक बात मुझसे कही है—मैं तुम्हें उसके लिए बधाई देती हूँ। व्रान्सकी तुम्हारे ही उपयुक्त है। मैंने स्टेशन में उसे देखा था।"

किटी के मुख पर एक सलज्ज मुसकान झलक गई। वह बोली—"ओह, वह क्या स्टेशन में आया था? स्टीवा ने तुमसे क्या कहा?"

"उसने प्रायः सभी कुछ कहा है। व्रान्सकी की मा से भी मुझे मालूम हुआ है कि वह बड़ा उदार-हृदय है। उसने अपनी सारी सम्पत्ति अपने भाई के नाम कर दी है।" यह कहते हुए आना को व्रान्सकी के आज के उस दान का स्मरण हो आया जो उसने स्टेशन में दुःखिनी विधवा को दिया था। पर उस बात का उल्लेख उसने किटी से जान-बूझकर नहीं किया। उसे ऐसा लग रहा था कि व्रान्सकी का वह दान उससे (आना से) व्यक्तिगत सम्बन्ध रखता है। वह उस बात को भूल जाना चाहती थी।

कुछ समय बाद डाली अपने कमरे से बाहर निकल आई। आब्लान्सकी दूसरे दरवाजे से निकला। आना अत्यन्त उत्सुकता से दोनों के मुखों के भावों पर ध्यान दे रही थी। वह यह जानना चाहती थी कि दोनों के बीच समझौता हुआ या नहीं। पर दोनों की बातों के ढंग से उसे विश्वास हो गया कि दोनों में पूर्णरूप से समझौता हो गया है। उसने मन ही मन भगवान् को आन्तरिक धन्यवाद दिया। डाली नीचे की मंज़िल में एक कमरा आना के लिए अपने हाथ से सजाने की बात कह रही थी। उसका यह कहना था कि किसी नौकर से वह काम न हो सकेगा। इस पर आब्लान्सकी मुसकराकर बोला—"बस डाली, तुम प्रत्येक छोटी-सी बात को लेकर एक बावैला खड़ा कर देती हो। चलो, मैं अपने हाथ से सारा काम ठीक किये देता हूँ।"

डाली बोली—"बड़े आये हैं करनेवाले! तुम जो कुछ करोगे, मैं बखूबी जानती हूँ। मैथ्यू को साथ ले जाकर तुम उससे कोई असम्भव काम करने को कहोगे, इसके बाद स्वयं चुपके-से खिसक जाओगे, और मैथ्यू सब काम चौपट कर देगा!", यह कहकर वह व्यंग्यपूर्वक मुसकराने लगी।

दोनों पति-पत्नी के बीच इस तरह की बातें होती देखकर आना समझ गई कि अब खतरे की कोई बात नहीं रही।

प्रायः साढ़े नौ बजे के समय अचानक व्रान्सकी आ पहुँचा। उसे देखकर आना के मन में हर्ष, विस्मय और भय के भाव एक साथ उत्पन्न हुए। व्रान्सकी के अभिवादन के उत्तर में आना केवल सिर हिलाकर भीतर चली गई। व्रान्सकी भीतर नहीं आया। आब्लान्सकी के साथ थोड़ी देर तक खड़े-खड़े बातें करके और उसे एक भोज का निमंत्रण देकर वह चला गया। किटी उस समय वहीं थी। उसने सोचा कि व्रान्सकी निश्चय ही उससे मिलने आया था और आना को देखकर संकोच के कारण नहीं मिला। पर आना का हृदय कुछ दूसरी ही बात उसके कानों में कह रहा था।

११

जिस विराट् नृत्योत्सव का उल्लेख किटी ने आना से किया था, उसकी प्रतीक्षा वह (किटी) प्रतिदिन, प्रतिपल बड़ी उत्सुकता से कर रही थी। उसे पूरा विश्वास था कि उसी नाच में उसके भाग्य का निर्णय होगा।

अन्त में वह दीर्घ-प्रत्याशित दिन आ ही पहुँचा। किटी ने उस दिन कई घंटे अपने सजाव-शृंगार में व्यतीत किये थे। जब वह बन-ठनकर अपनी मा के साथ नृत्य-भवन में पहुँची, तब नाच को आरम्भ हुए थोड़ी ही देर हुई थी। अभी तक बहुत-से प्रतिष्ठित व्यक्ति नहीं आ पाये थे।

उस दिन किटी के स्वच्छ और स्वस्थ सौन्दर्य के साथ उसकी मनोहर वेशभूषा का ऐसा अच्छा मेल हो रहा था कि जो नृत्य-कला-विशेषज्ञ पुरुष वहाँ आये हुए थे, वे सब उसे मुग्ध दृष्टि से देख रहे थे। प्रधान सञ्चालक जार्ज कोर्सुन्सकी अभी एक कौन्टेस के साथ नाच चुका था। किटी को देखते ही वह उसके पास गया और उससे नाचने का प्रस्ताव करके उसकी पतली कमर में हाथ डालकर सहज स्वाभाविक गति से नाचते हुए झाड़-फ़ानूसों से आलोकित उस विशाल हॉल का चक्कर लगाने लगा। कोर्सुन्सकी बीच-बीच में किटी के रूप-गुण और नृत्य-कला की प्रशंसा करता जाता था। किटी का मन आज यों ही उल्लसित हो रहा था, इसलिए वह कोर्सुन्सकी की बातें सुनकर प्रसन्नतापूर्वक मुसकरा रही थी।

जब दोनों काफ़ी नाच चुके, तब कोर्सुन्सकी किटी के अनुरोध से उसे उस स्थान पर ले गया, जहाँ रंग-बिरंगे वस्त्र पहने हुई स्त्रियों और सुसज्जित पुरुषों की भीड़ लगी हुई थी। आना भी वहाँ खड़ी थी, और उसके पास ही व्रान्सकी भी खड़ा था। जिस दिन उसने लेविन के प्रेम-प्रस्ताव को अस्वीकृत किया था, उस दिन से व्रान्सकी को उसने नहीं देखा था। आज के उत्सव की भीड़ में उसे देखते ही उसका सारा शरीर प्रेम के हर्ष से पुलकित हो उठा।

पर आना को देखकर किटी चकित हो रही थी। आना एक काले रंग की बढ़िया मखमली पोशाक पहनकर आई हुई थी। किटी की

धारणा थी कि आना का सौन्दर्य लाल रंग की पोशाक में अधिक खिलेगा, और उसे यह पूरा विश्वास था कि वह निश्चय ही उसी रंग के वस्त्रों से सुसज्जित होकर नाच में आवेगी। पर आज उसके पहनावे की सादगी देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हो रहा था। आश्चर्य का सबसे बड़ा कारण यह था कि उस सादी पोशाक में आना की स्वाभाविक सुन्दरता कई गुना अधिक खिल उठी थी! किटी ने आना को इसके पहले कई बार देखा था, और उसके सौन्दर्य पर वह सदा मुग्ध थी। पर आज का-सा निराला आकर्षण उसने कभी उसमें नहीं देखा था। आज पहली बार वह इस सत्य से परिचित हुई कि किसी सुन्दर से सुन्दर पोशाक की तड़क-भड़क से आना के सौन्दर्य में कोई अन्तर नहीं आ सकता—उसके व्यक्तित्व में एक ऐसी निजी विशेषता है कि उसका पहनावा जितना ही सादा होगा, उसका व्यक्तित्व भी उतना ही अधिक खिल उठेगा।

कोर्सुन्सकी ने आना के पास आकर नाचने का प्रस्ताव किया। आना ने अपनी सहज मधुर मुसकान के साथ कहा—"जहाँ तक सम्भव है, मैं नाच से बचना चाहती हूँ।"

"पर आज की आनन्दमयी रात में बचना सम्भव नहीं है!"

इतने में व्रान्सकी वहाँ आ पहुँचा। आना ने उसके प्रति कुछ अवज्ञा का-सा भाव दिखाया। "यदि बचना असम्भव है, तो अच्छी बात है। मैं राजी हूँ।" यह कहकर आना ने अपना हाथ कोर्सुन्सकी की ओर बढ़ा दिया। दोनों नाचने लगे। किटी अभी तक आना के सौन्दर्य पर ही मुग्ध हो रही थी, अब नृत्य-कला में उसकी सुन्दर और सहज गति देखकर वह उसकी ओर देखती रह गई। इतने में व्रान्सकी ने किटी से नाचने का प्रस्ताव किया, और इस बात के लिए खेद प्रकट किया कि इतने दिनों तक वह उससे न मिल सका।

व्रान्सकी और किटी ने नाचते हुए कई बार नृत्यशाला का चक्कर लगाया। किटी प्रति पग में यह आशा कर रही थी कि व्रान्सकी उससे कोई विशेष बात कहेगा। पर व्रान्सकी ने कोई महत्त्वपूर्ण बात नहीं कही। केवल एक बार लेविन की चर्चा चलाते हुए उसने उसके स्वभाव और व्यक्तित्व की बड़ी प्रशंसा की। पर किटी को उस विशेष अवसर पर लेविन के सम्बन्ध में सोचने का अवकाश कहाँ था! वह तो व्रान्सकी के कर-स्पर्श से प्रेम-विभोर हो रही थी और प्रतिपल इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी कि उसके भाग्य का अन्तिम निर्णय किस समय होगा। उसे ऐसा जान पड़ता था कि अन्त में जब वह 'माजुर्का'

नामक उन्मादक नृत्य में व्रान्सकी के साथ नाचेगी, तब निश्चय ही व्रान्सकी उसके प्रति अपना प्रेम प्रकट करके विवाह का प्रस्ताव करेगा।

व्रान्सकी के साथ प्रथम बार नाच चुकने के बाद किटी कुछ और युवकों के साथ भी नाची। नाचती हुई वह एक बार आना के पास तक चली आई। आना के मुख का भाव आज उसे एकदम अपूर्व और निराला लग रहा था। उसकी हर्षोद्दीप्त आँखों से उज्ज्वल प्रकाश की तीखी किरणें बिखरी पड़ती थीं। किटी सोच रही थी कि आना आज इतनी अधिक प्रसन्न क्यों है? उसके मुख का सहज उदास भाव आज कहाँ तिरोहित हो गया? उसके अनुपम सौन्दर्य ने सारे उपस्थित युवक-समाज पर जो एक जादू की-सी मोहनी डाल दी है, क्या अपनी इसी सफलता के कारण उसके मुख पर ऐसा संदीप्त भाव झलक रहा है! अथवा किसी विशेष मनचाहे व्यक्ति पर पूर्ण प्रभाव जमाने के कारण वह इतनी प्रसन्न हो रही है? इस कल्पना से किटी को चैन नहीं मिल रहा था। वह सोच रही थी कि वह विशेष व्यक्ति कौन है, जिसके हृदय को जीतकर आना विजयिनी रानी के समान उल्लसित हो रही है? कहीं 'वह' तो नहीं है?

वास्तव में जब-जब व्रान्सकी आना से बोलता था, तब-तब उसकी पुलकित पुतलियों में हर्षोन्माद छलक उठता था। और व्रान्सकी को किटी बड़े ध्यान से उसे देख रही थी। आना के निकट आते ही उसका मस्तक ऐसे सम्भ्रम और सम्मान से झुक जाता था कि मानो वह उसके चरणों पर लोटना चाहता है। आना की आँखों में उदासीनता का भाव देखते ही वह सहम उठता था और प्रसन्नता की झलक देखते ही स्वयं भी अत्यन्त विनम्रतापूर्वक मुसकराने लगता था—ठीक जैसे कोई कुत्ता अपने मालिक के इशारों पर नाचता है। किटी का हृदय यह सब दृश्य देख-देखकर भयंकर वेग से धड़कने लगा। आज तक वह व्रान्सकी के मुख में जो सहज, शान्त और स्थिर भाव देखती आई थी, उसका लेश भी इस समय वर्त्तमान नहीं था। वह अत्यन्त चञ्चल और अस्थिर दिखाई देता था। आना के साथ जब वह बातें करता था, तब ऐसा जान पड़ता था, जैसे वह इस मृत्युलोक से उठकर किसी रहस्य-लोक में पहुँच गया है। किटी एक भयंकर आशंका से सिहर उठी।

जब 'माजुर्का' नामक नृत्य का समय आया, तब व्रान्सकी को अपने पास आते न देखकर किटी की घबराहट और अधिक बढ़ गई। इस

विशेष नृत्य के लिए पाँच प्रतिष्ठित युवक उससे पहले ही प्रस्ताव कर चुके थे, और उन सबको उसने इसलिए टाल दिया था कि वह व्रान्सकी के प्रस्ताव की पूर्ण आशा किये बैठी थी। आज तक 'माजुर्का' के लिए व्रान्सकी बराबर उसी को अपनी संगिनी चुनता आया था। इसलिए उसे पूरा विश्वास था कि आज के विराट् नृत्योत्सव में इस नियम में कोई उलट-फेर नहीं होगा। पर ऐन मौक़े पर इस बात के लक्षण दिखाई देने लगे कि व्रान्सकी उसे धोखा देने जा रहा है। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा। उसे ऐसा जान पड़ा कि वह चक्कर खाकर गिर पड़ेगी। वह लड़खड़ाते हुए पाँवों से ड्राइंग-रूम में चली गई और एक आराम-चौकी पर लेट गई।

कौन्टेस नार्ड्स्टन दूर ही से उसके ये सब रंग-ढंग देख रही थी। वह चुपके से उसके पास गई और बोली—"किटी, बात क्या है ? क्या तुम 'माजुर्का' में नहीं नाचोगी ?"

"नहीं, नहीं !" किटी की आवाज़ भर्राई हुई थी।

"उसने मेरे सामने मिसेज़ केरेनिना से 'माजुर्का' के लिए प्रस्ताव किया।" 'उसने' से उसका आशय किस व्यक्ति से है, यह बात किटी तत्काल समझ गई।

किटी ने मरे हुए स्वर में कहा—"उँह ! मेरे लिए सब समान है !" वह जानती थी कि उसके हृदय की दशा का यथार्थ अनुभव कोई नहीं कर सकेगा, क्योंकि यह बात किसी को मालूम नहीं थी कि केवल कुछ ही दिन पहले उसने एक ऐसे व्यक्ति के प्रेम-प्रस्ताव को ठुकरा दिया जिसे शायद वह चाहती थी, और एक ऐसे व्यक्ति पर उसने विश्वास किया जिसने उसके हृदय पर विजय प्राप्त करके ऐन मौक़े पर उसे धोखा दिया।

कौन्टेस नार्ड्स्टन को जब यह मालूम हुआ कि किटी 'माजुर्का' के लिए पाँच व्यक्तियों के प्रस्तावों को अस्वीकृत कर चुकी है, और अब किसी के प्रस्ताव की सम्भावना नहीं है, तब उसने कोर्सुन्सकी से यह अनुरोध किया कि वह उसके (कौन्टेस नार्ड्स्टन के) साथ नाचने के बजाय किटी के साथ नाचे।

किटी जब कोर्सुन्सकी के साथ नाच रही थी, तब व्रान्सकी और आना उसे ठीक उसके सामने नाचते हुए दिखाई दिये। वह एकाग्र दृष्टि से देखती हुई दोनों के मुखों के प्रत्येक हाव-भाव पर बड़ी बारीकी से ग़ौर कर रही थी। वह निश्चित रूप से समझ गई कि व्रान्सकी जी-जान से आना पर मर मिटा है। वास्तव में आना के मुख का अद्भुत

आकर्षण प्रतिपल बढ़ता चला जाता था। उसकी सीधी-सादी काले रंग की पोशाक, मोतियों का कण्ठहार और घुँघराले बाल मिलकर उसे एक अवर्णनीय सम्मोहक रूप प्रदान कर रहे थे, पर उसकी उस निराली मोहिनी में किटी को एक निर्मम और आतंककारी इन्द्रजाल की शैतानी माया का आभास दिखाई दे रहा था। किटी स्वयं उसके रूप पर मुग्ध हो रही थी और साथ ही उसका हृदय एक वज्र-कठिन निराशा के भार से दबता चला जाता था।

दोनों प्रेमोन्माद-ग्रस्त व्यक्ति——आना और व्रान्सकी——स्वप्न-विभोर और समाज तथा संसार से बेसुध-से होकर नाच रहे थे। नाचते-नाचते एक बार दोनों किटी और कोर्सुन्सकी की जोड़ी से जा भिड़े। व्रान्सकी ने मुग्ध मुसकान मुख पर झलकाते हुए किटी से कहा——"आज का नाच बहुत अच्छा जमा है!"

मरे मन से किटी बोली——"जी!"

माज़ुर्का समाप्त होने पर गृहस्वामी ने आना को रात्रि-भोजन के लिए अनुरोधपूर्वक विवश किया। कोर्सुन्सकी ने उससे फिर एक बार नाचने का प्रस्ताव किया, पर आना बोली——"बस, अब अधिक नहीं! आपके मास्को में मैं एक दिन में जितना नाच चुकी हूँ, पीटर्सबर्ग में उतना वर्ष भर में भी नहीं नाच पाती। अब मैं थक गई हूँ। यात्रा के पहले मैं थोड़ा-सा आराम चाहती हूँ।"

व्रान्सकी बोला——"तो क्या आप कल निश्चितरूप से चली जावेंगी।"

उसके इस प्रश्न की ढिठाई से चकित होकर आना बोली——"जी हाँ, विचार तो यही है।"

१२

नाच के दूसरे दिन प्रातःकाल ही आना ने अपने पति को तार भेज दिया कि वह उसी दिन संध्या को मास्को से रवाना हो जायगी।

उस दिन संध्या को आब्लान्सकी भोजन के समय घर नहीं आया। किटी को डाली ने निमंत्रित किया था, पर उसने लिख भेजा कि सिरदर्द के कारण वह नहीं आ सकती। आना डाली के साथ अकेली रह गई। बच्चों को साथ बिठाकर उन दोनों ने भोजन किया।

आना को बहुत अन्यमनस्क देखकर डाली बोली—"आज तुम्हारे मुख का भाव बहुत बदला हुआ दिखाई दे रहा है!"

"कभी-कभी मेरे मन की दशा कुछ विचित्र-सी हो जाती है। मुझे अकारण ही रोने की इच्छा होने लगती है। आज भी वैसे ही लक्षण देख रही हूँ।" वास्तव में आना की आँखें डबडबा रही थीं। उसने फिर कहा—"जानती हो डाली, मुझे यहाँ आते समय पीटर्सबर्ग छोड़ना बहुत बुरा मालूम हो रहा था, और अब मास्को छोड़ने की इच्छा नहीं होती!"

"तुमने यहाँ आकर मेरा बड़ा उपकार किया, आना! तुम्हारी इस कृपा को मैं जीवन में कभी नहीं भूलूँगी।"

"ऐसा न कहो, डाली! मैं एक निकम्मी स्त्री हूँ; न जाने क्यों लोग मेरी प्रशंसा करके मेरे अहंकार को बढ़ाना पसन्द करते हैं? तुम्हारे हृदय की उदारता के कारण ही स्थिति सँभल पाई है। मैंने कुछ नहीं किया, मैं कुछ कर ही नहीं सकती! लोग केवल मेरा बाहरी रूप देखते हैं; यह कोई नहीं जानता कि भीतर से मैं कितनी ओछी हूँ।"

डाली ने ध्यानपूर्वक उसके मन का असली भाव ताड़ने की चेष्टा करते हुए कहा—"मैं तुम्हारी बात ठीक से समझी नहीं!"

"तुम जानती हो, मैं आज ही क्यों लौट जाना चाहती हूँ? तुम्हें मालूम है, किटी आज भोजन के लिए यहाँ क्यों नहीं आई? वह मुझसे ईर्ष्या करने लगी है। वास्तव में मैंने नाच में सम्मिलित होकर उसकी सारी बातें बिगाड़ दी हैं, उसके हृदय को मार्मिक कष्ट पहुँचाया है। पर फिर भी मैं दोषी नहीं हूँ!"

"स्टीवा ने मुझसे कहा है कि तुम 'उसके' साथ नाची थीं।"

"मैं स्वयं नहीं जानती कि यह सब कैसे सम्भव हो गया! वास्तव में मैं किटी के और उसके बीच सब बातें पक्की करा देने का प्रयत्न करना चाहती थी, पर..."

लज्जा से उसका मुख रँग गया और वह बीच ही में चुप हो गई। कुछ देर बाद फिर बोली--"मुझे विश्वास है कि अभी बात नहीं बिगड़ी, फिर से सब बातें ठीक रास्ते पर आ जावेंगी। किटी भी अवश्य ही मुझसे घृणा करना छोड़ देगी।"

डाली ने कहा--"आना, मैं अपने हृदय की बात तुमसे कहूँ? मेरी कभी यह इच्छा नहीं रही है कि मेरी बहन (किटी) का विवाह व्रान्सकी से हो। जो व्यक्ति एक ही दिन में तुम पर मर मिटने को तैयार हो सकता है, उससे किटी का दूर ही रहना अच्छा है।"

"तुम भी न जाने कैसी बात करती हो, डाली!"

पर डाली देख रही थी कि उसके प्रति व्रान्सकी के प्रेम की चर्चा चलने से आना के मुख पर बरबस प्रसन्नता की मधुर आभा झलक उठी। डाली जानती थी कि आज तक आना का हृदय पूर्णतया शुद्ध और निष्कलंक रहा है। आज उस बेदाग़ शीशे में एक गहरा धब्बा पड़ते देखकर वह मन ही मन मुसकराई।

शीघ्र ही आना का भावावेग फिर एक बार उमड़ पड़ा। उसने छलकती हुई आँखों से कहा--"डाली, तुम जानती हो, मैं तुम्हें हृदय से चाहती हूँ, और अब और भी अधिक चाहने लगी हूँ।" यह कहकर वह रूमाल से आँसू पोंछने लगी।

डाली की भी आँखें डबडबा आई थीं। उसने उसे अन्तिम बार गले से लगाते हुए कहा--"यह कभी न भूलना कि मैं भी तुम्हें उतना ही चाहती हूँ, और संसार में तुमसे बढ़कर अपना हितैषी और किसी को नहीं समझती।"

अपने आँसुओं को दबाने की चेष्टा करते हुए आना ने उसका मुँह चूमा और विदा हुई।

आब्लान्सकी आना से मिलने के लिए रेलवे स्टेशन पर गया था। जब गाड़ी चलने लगी, और आना अपने भाई से विदा हुई, तो वह आराम से बैठकर सिगार पीने लगा। तरह-तरह की बातें उसके मस्तिष्क में उत्पन्न होने लगीं। जिस डिब्बे में वह बैठी थी वह केवल सोनेवालों के लिए सुरक्षित था। उसके साथ बैठे हुए कुछ यात्री सोने की तैयारी करने जा रहे थे, कुछ आपस में गपशप कर रहे थे। आना एक अँगरेज़ी उपन्यास पढ़ने की चेष्टा करने लगी।

बाहर बड़े वेग से बर्फ़ गिर रही थी और खिड़कियों के शीशों पर भी जमने लगी थी। आना का जी उपन्यास में तनिक भी नहीं लग रहा था। कुछ देर बाद उसने उपन्यास बन्द करके रख दिया और मास्को में उसे जो-जो अनुभव हुए थे उन पर वह विचार करने लगी। व्रान्सकी की स्मृति, जो उसके अन्तस्तल को बहुत देर से मथित कर रही थी, अब स्पष्ट रूप से जाग पड़ी। उसके साथ नाचने की सारी घटना उसे याद हो आई। व्रान्सकी की प्रेम-पागल आँखों की मुग्ध झलक बार-बार उसके मन में उदित होकर उसे अस्थिर और अशान्त कर रही थी। वह उसे भूलने की चेष्टा करती थी, पर किसी प्रकार भी भूल नहीं पाती थी। धीरे-धीरे उसका मस्तिष्क, मन और शरीर, एक साथ गरम हो उठे। उस भयङ्कर शीत के समय भी उसे गर्मी मालूम होने लगी।

जब गाड़ी किसी एक स्टेशन पर खड़ी हुई थी, तब आना गाड़ी का दरवाज़ा खोलकर बाहर बर्फ़ से भी ठण्डी हवा का स्वागत करने के उद्देश्य से प्लेटफ़ार्म पर चली गई। शीतकाल का उस भयङ्कर तूफ़ानी रात में भी प्लेटफ़ार्म पर काफ़ी चहल-पहल मची हुई थी। आना को तलवार की धार से भी तीखी और तेज़ सर्द हवा में लम्बी-लम्बी साँसें लेते हुए सुख प्राप्त हो रहा था। कुछ देर बाद ज्यों ही उसने गाड़ी के भीतर प्रवेश करने के लिए रेलिंग पकड़ा, त्यों ही उसके और प्लेटफ़ार्म के लैम्प के बीच मिलिटरी ओवरकोट पहने एक व्यक्ति खड़ा हो गया। घूमकर उसने जो उस व्यक्ति की ओर देखा तो व्रान्सकी को खड़ा पाया। कुछ देर तक वह उसके मुख की ओर देखती रह गई। उसकी आँखों में वह रोमाञ्चपूर्ण प्रेम और सम्मान का भाव वर्तमान था, जिसने पिछले दिन नृत्य-भवन में उसके (आना के) हृदय पर गहरा प्रभाव डाल दिया था। इसके पहले वह अपने मन को इस कल्पना से समझा रही थी कि व्रान्सकी में और उसके परिचित दूसरे युवकों में कोई विशेष अन्तर नहीं है; जैसे वह दूसरे युवकों के साथ किसी नृत्योत्सव में नाचकर तत्काल उन्हें भूल जाती है उसी प्रकार व्रान्सकी को भी वह शीघ्र ही भूल जायगी। पर ज्यों ही उसने व्रान्सकी को रात की इतनी जोर की सर्दी में अपने सामने प्लेटफ़ार्म पर खड़े देखा, त्यों ही उसका हृदय आनन्द और गर्व की मिश्रित अनुभूति से उछलने लगा।

वह बोली—"मुझे पता नहीं था कि आप भी पीटर्सबर्ग जा रहे हैं। आप किस काम से जा रहे हैं?"

व्रान्सकी की ढिठाई इस बार कुछ बढ़ गई थी। उसने सीधे उसकी आँखों की ओर देखते हुए कहा--"आप अब भी यह पूछना चाहती हैं कि मैं किस काम से जा रहा हूँ? आपको जानना चाहिए कि अब छाया की तरह आपके पीछे लगे रहने के अतिरिक्त मेरे लिए और कोई चारा नहीं है।"

तूफ़ानी हवा का वेग बढ़ता चला जाता था और बर्फ़ चारों ओर से उड़कर दोनों के कपड़ों और मुखों पर पड़ रही थी। इञ्जिन ने हृदय-विदारक शब्द से सीटी बजाई। सीटी का वह शब्द रात के उस भयङ्कर तूफ़ान के स्वर से ठीक मेल खा रहा था। आना के भीतर भी ठीक उसी प्रकार का तूफ़ान मच रहा था। इसलिए सारा वातावरण उसे बहुत सुन्दर जान पड़ता था। व्रान्सकी आना की भीतरी दशा का थोड़ा-बहुत अनुभव कर रहा था। उसने कहा--"यदि मेरी बात से आपको कष्ट हुआ हो, तो क्षमा करें।"

आना से कुछ उत्तर देते नहीं बन रहा था। अन्त में अपने को किसी कदर सँभालकर उसने कहा--"आप यदि वास्तव में एक सच्चे और भले आदमी हैं, तो मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप इन सब बातों को भूल जावें।"

"आपका एक-एक शब्द, आपकी एक-एक अदा मेरे मन में बस चुकी है। अब भूलना मेरे लिए असम्भव है।"

"बस! बस! आप मेरे ऊपर बड़ा अन्याय कर रहे हैं।"

पर आना के शब्द चाहे कुछ भी कहते हों, उसके मुख का पुलकित भाव व्रान्सकी से कुछ दूसरी ही बात कह रहा था।

रात भर आना ठीक तरह से सो नहीं पाई। वह इसी उधेड़-बुन में रही कि व्रान्सकी जो उसके पीछे पड़ गया है, उसका परिणाम क्या होगा। दूसरे दिन जब गाड़ी पीटर्सबर्ग स्टेशन पर ठहरी, तब सबसे पहले आना की आँखें जिस व्यक्ति पर पड़ीं वह था उसका पति। उसे देखते ही वह मन ही मन कहने लगी--"हे भगवान्! उसके कान इतने लम्बे क्यों हैं!" वास्तव में उसे देखकर उसका मन प्रसन्न होने के बदले अत्यन्त खिन्न हो उठा। इसका कारण उस समय कुछ सोच नहीं पाई। उसने पूछा--"सेरेज़ा, कुशल से तो है?"

उसके पति ने कहा--"बस, तुम केवल अपने लड़के की कुशल पूछकर ही रह गई? मेरे बारे में कुछ पूछना तुमने उचित नहीं समझा? खैर! सेरेजा अच्छी तरह से है, चिन्ता की कोई बात नहीं है।" वह अपने प्रत्येक शब्द के पीछे मुसकरा रहा था, पर उसकी मुसकान

में आफ़िस के एक प्रधान कर्मचारी की स्वाभाविक रुखाई, घमण्ड और व्यंग्य का भाव वर्त्तमान था।

व्रान्सकी अभी तक जैसे यह बात भूला हुआ था कि आना का कोई पति भी है! पर ज्यों ही उसने केरेनिन को देखा, त्यों ही उसके हृदय में एक निर्मम आघात-सा पहुँचा। साथ ही यह बात समझने में भी उसे देर न लगी कि आना उस रूखे, अरसिक व्यक्ति से, चाहे वह कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो, कभी प्रेम नहीं कर सकती।

आना ने व्रान्सकी का परिचय अपने पति से कराया। केरेनिन ने अपनी स्वाभाविक रूखी और व्यंग्य-भरी मुसकान के साथ कहा—"अच्छा! शायद मैंने इन महाशय को पहले देखा है। तुम मा के साथ गइ और बेटे के साथ आईं, यह अच्छा ही हुआ।"

व्रान्सकी अपने प्रति इस अवज्ञा से बहुत पीड़ित हुआ, पर फिर भी उसने कहा—"मैं आपसे कभी घर पर मिलने की आशा रखता हूँ।"

केरेनिन ने उसी उदासीनता से उत्तर दिया—"मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। हम लोग सोमवार को घर पर मित्रों से मिला करते हैं।"

व्रान्सकी चला गया। आना उसके प्रत्येक पद-शब्द को बड़े ध्यान से सुनती रही। इसके बाद वह अपने पति के साथ एक गाड़ी में बैठकर घर की ओर चली गई।

१३

घर पहुँचने पर सबसे पहले जो व्यक्ति आना से मिला, वह था उसका लड़का सेरेज़ा। अपनी मा को देखते ही वह दौड़ता हुआ सीढ़ियों से नीचे उतरा और आनन्द तथा उल्लास से प्रायः नाचते हुए पुकारने लगा--"अम्मा! अम्मा!" इसके बाद वह आना के गले से लिपट गया और अपनी 'गवर्नेस' से बोला--"मैंने कहा था न कि वह निश्चय ही अम्मा है!"

अपने प्यारे लड़के को देखते ही आना के हृदय में आज एक ऐसी नई वेदना जागने लगी, जिसके यथार्थ रूप को वह स्वयं नहीं समझ पाती थी। उसने प्यार से उसका मुँह चूमा और डाली के बच्चों ने उसके लिए जो खिलौने भेजे थे उनको उसके सामने रखती हुई वह बोली--"मास्को में एक बड़ी अच्छी लड़की है, जिसका नाम है टान्या। वह पढ़ने-लिखने में बहुत तेज़ है, और दूसरे बच्चों को भी सिखा सकती है।"

सेरेज़ा ने अपनी प्यारी-प्यारी आँखों में विस्मय और जिज्ञासा का भाव प्रकट करते हुए पूछा--"क्या मैं उससे बुरा और कमसमझ हूँ?"

"नहीं बेटा, मेरे लिए तुम संसार के सब बच्चों से अच्छे हो!" यह कहकर आना ने फिर एक बार उसका मुँह चूमा।

केरेनिन दिन में आफ़िस चला गया। आफ़िस से लौटकर आना से उसने मास्को का समाचार पूछा। केरेनिन ने सब सुनकर इस बात पर अपनी प्रसन्नता प्रकट की कि आब्लान्सकी और उसकी पत्नी के बीच समझौता कराने में आना सफल रही। पर साथ ही आब्लान्सकी के सम्बन्ध में उसने अपनी बड़ी कड़ी राय प्रकट की। उसने कहा--"ऐसा व्यक्ति, चाहे वह तुम्हारा भाई क्यों न हो, कभी क्षमा के योग्य नहीं समझा जा सकता।"

आना जानती थी कि नैतिक विषयों में उसका पति बहुत स्पष्टवक्ता और कठोर-स्वभाव है। इसे वह एक बड़ा गुण समझती थी, और इस बात के लिए मन ही मन उसकी प्रशंसा करती थी।

इसके बाद केरेनिन ने उस नये 'बिल' की चर्चा चलाई जो उसके उद्योग से हाल ही में कौंसिल में पास हुआ था। उस पर मास्को की प्रतिष्ठित जनता की क्या राय है, इस प्रश्न के उत्तर में आना कुछ न कह सकी। वह मन-ही-मन इस बात के लिए अत्यन्त लज्जित हुई कि जो विषय उसके पति को सबसे अधिक प्रिय है, उसके सम्बन्ध में वह इस बार इतनी उदासीन रही। इसके पहले वह जब कभी कहीं बाहर जाती थी, तब अपने पति की कौंसिल-सम्बन्धी कार्रवाइयों के सम्बन्ध में लोगों की राय जाने बिना न रहती।

आना से कोई स्पष्ट उत्तर न पाकर केरेनिन ने कहा—"यहाँ तो उसकी बड़ी गहरी चर्चा हो रही है और काफ़ी सनसनी फैली हुई है।" इसके बाद वह आना को समझाने लगा कि उस नये 'बिल' की क्या-क्या विशेषतायें हैं और उसका क्या महत्त्व है। आना ध्यानपूर्वक सुनने की चेष्टा करती रही, यद्यपि उन सब बातों में उसे तनिक भी दिलचस्पी नहीं हो रही थी। पर इसी कारण से वह अपने मन को बरबस यह विश्वास दिलाने की चेष्टा कर रही थी कि उसका पति एक उच्च-कोटि का व्यक्ति है, और अपने क्षेत्र में वह जितना ही योग्य और प्रतिष्ठित है, उतना ही सच्चा और सहृदय है। "पर इस बार उसके कान ऊपर को इतने अधिक क्यों उठे हुए हैं!"—यह सोचते ही आना की भीतरी आँखों के आगे तत्काल व्रान्सकी की सुन्दर, सुगठित, प्रेम-पुलकित मूर्ति खड़ी हो गई। वह अपनी आँखों को बन्द करके उसे भूलने की चेष्टा करने लगी, पर वह जितनी ही चेष्टा करती थी, उतनी ही व्रान्सकी की मूर्ति उज्ज्वल से उज्ज्वलतर होकर उसके भीतर विभासित होती जाती थी। वह अत्यन्त विकल हो उठी। सोने का समय हो चुका था। वह अपने पति से बिदा होकर अपने कमरे में जाकर पलँग पर लेट गई और आकाश-पाताल की बातें सोचने लगी।

व्रान्सकी वास्तव में छाया की तरह उसके पीछे लग गया था। प्रिन्सेस बेट्सी नाम की एक सम्भ्रान्त महिला के यहाँ आना अक्सर आया-जाया करती थी। व्रान्सकी भी नियमित रूप से वहाँ आने-जाने लगा। आना ने व्रान्सकी को यह जता दिया कि इस प्रकार उसका पीछा करना ठीक नहीं है। पर नारी के अन्तस्तल की ठीक-ठीक बात जानना बहुत कठिन है। जब-जब वह व्रान्सकी को देखती तब-तब उसका हृदय पुलकाकुल हो उठता। कुछ दिनों तक वह अपने मन को यह विश्वास दिलाती रही कि वह वास्तव में व्रान्सकी से अप्रसन्न है। पर एक दिन जब वह एक 'पार्टी' में निमंत्रित होकर गई, तब व्रान्सकी से वहाँ मिलने

की पूरी आशा उसके मन में थी। संयोगवश उस दिन व्रान्सकी किसी कारण न आ सका। इस बात से आना को ऐसी निराशा हुई कि वह स्वयं अपने मन के उस भाव से चकित रह गई। तब से वह निश्चित रूप से समझ गई कि इतने दिनों तक वह अपने आपको धोखा दे रही थी, और वास्तव में उसका अन्तःकरण इस बात से प्रसन्न है कि व्रान्सकी उसका पीछा कर रहा है, यदि वह उसका पीछा न करे, तो उसके (आना के) लिए जीवन का कोई अर्थ ही नहीं रह जायगा।

जिस दिन अपने मन की इस वास्तविक भावना का पता आना को लगा, उस दिन वह आतंक से सिहर उठी। उसने सोचा कि उसके समान एक प्रतिष्ठित और सम्भ्रान्त कुल की विवाहिता महिला, जिसके लड़के की आयु आठ वर्ष की हो चुकी है, अपने सर्वमान्य और सुयोग्य पति को धोखा देकर एक युवक प्रेमिक के मोह-जाल में फँसने लगे, इससे बढ़-कर अनर्थ की बात और क्या हो सकती है! पर बीच-बीच में शैतान उसके कानों में यह बात भरता रहता—"तुम्हारा पति चाहे कैसा ही मान्य और योग्य राजनीतिज्ञ क्यों न हो, वह प्रेम करना नहीं जानता। वह बहुत रूखा और अरसिक है, और तुम्हारे समान अपूर्व सुन्दरी और रसमयी नारी की प्रेम-तृष्णा वह कभी नहीं बुझा सकता। इसलिए जो सुन्दर, प्रेम-कला-प्रवीण युवक तुम्हारे पीछे लगा हुआ है, उसे अपना लो और सुखी बनो!"

इस तरह की बातें सोचते-सोचते आना असह्य मानसिक वेदना से कराह उठती और करुण प्रार्थनापूर्वक मन ही मन कहती—"ओ भगवान्! मुझे बचाओ!"

१४

किटी ने जब लेविन के प्रेम को स्पष्ट शब्दों में तिरस्कृत कर दिया, तब लेविन को मास्को का राग-रंगमय वातावरण जैसे काट खाने लगा। वह भग्न हृदय लेकर देहात को वापस चला गया। अपनी बहुत बड़ी ज़मींदारी की देख-भाल करने में उसे एक विशेष प्रकार का सुख मिलता था। वह कृषि-सुधार-सम्बन्धी ऐसे प्रयोगों-द्वारा अपना जी बहलाता रहता, जिनसे ज़मींदारी की आय बढ़ने के अतिरिक्त किसानों के लाभ की भी सम्भावना रहती।

घर में उसकी बुढ़िया धाय आगाथा मिखेलोवना के अतिरिक्त उसका अपना कहने को और कोई न था। अवश्य लास्का नाम की उसकी एक कुतिया भी थी, जो सहृदयता में आगाथा मिखेलोवना से किसी क़दर कम नहीं थी। जब लेविन घर के दरवाज़े पर पहुँचा, तब सबसे पहले लास्का ने ही अपनी पूँछ हिलाते हुए और अपनी अगली टाँगों को ऊपर उठाकर उसकी छाती पर रखने की चेष्टा करते हुए उसका स्वागत किया। आगाथा मिखेलोवना ने लास्का के सम्बन्ध में लेविन से कहा—"वह केवल बोल नहीं सकती, पर समझती सब कुछ है। वह जान गई है कि उसका मालिक मास्को से उदासचित्त होकर लौटा है!"

लेविन ने कुछ लज्जित होकर कहा—"उदासचित्त कैसे?"

"मैं सब जानती हूँ, बेटा! बचपन से तुम्हें देखती आ रही हूँ। फिर भी चिन्ता की कोई बात नहीं है। मनुष्य का हृदय सच्चा और शुद्ध होना चाहिए, फिर भगवान् मालिक है।"

लेविन को वास्तव में इस बात पर आश्चर्य हुआ कि देहात की वह सीधी-सादी बुढ़िया केवल अपनी अन्तरात्मा के संस्कार-वश उसके मन के यथार्थ भाव को ताड़ गई है। किटी-द्वारा तिरस्कृत होने से केवल उसकी आशा पर ही पानी नहीं फिरा था, बल्कि उसका घोर अपमान भी हुआ था। उस अपमान की वेदना को उसके समान भावुक व्यक्ति सहज में भूल जाय, यह सम्भव नहीं था। वह तरह-तरह की बातों से अपने मन को समझाता था, पर किसी भी उपाय से एक पल के लिए भी उस कण्टकित वेदना को भूल नहीं पाता था।

फिर भी यह दृढ़ निश्चय करके कि उस बात को स्मृति से उखाड़ फेंकना ही होगा, लेविन खेती-बारी के कामों में पहले से बहुत अधिक

दिलचस्पी लेने लगा और रात-दिन किसानों के बीच में रहकर संसार को एक सहृदय दार्शनिक की दृष्टि से देखने और समझने की चेष्टा करने लगा। उसके आश्चर्य और प्रसन्नता की सीमा न रही जब उसने देखा कि वह किटी को दिन पर दिन अधिकाधिक भूलता जा रहा है। फिर भी उसके हृदय की गहराई में जो काँटा गड़ा हुआ था, वह उखड़ा नहीं। वह बड़ी अधीरता के साथ किटी के विवाह का समाचार सुनने की प्रतीक्षा करने लगा। उसे ऐसा विश्वास हो रहा था कि जब उसे यह बात निश्चित रूप से मालूम हो जायगी कि किटी का विवाह व्रान्सकी से हो चुका है, तब वह ठीक उसी प्रकार आराम का अनुभव करेगा जिस प्रकार फोड़ा फूट जाने पर व्यथा बहुत कम हो जाती है।

इधर किटी का स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता चला जाता था। उसके माता-पिता उसके सम्बन्ध में बहुत चिन्तित हो उठे थे और मास्को के प्रायः सभी नामी डाक्टरों से परीक्षा करा चुके थे। पर दुःख की बात यह थी कि रोग के निदान और उपचार के सम्बन्ध में एक डाक्टर का मत दूसरे से नहीं मिलता था।

वास्तव में प्रिन्स और प्रिन्सेस श्चरबैट्सकी जानते थे कि किटी की बीमारी का मूल कारण क्या है। विशेषकर बूढ़ी प्रिन्सेस व्रान्सकी पर विश्वास करके बहुत पछता रही थी। बूढ़ा प्रिन्स पहले से ही जानता था कि वह धोखा देगा, और उसने अपनी पत्नी को उसके सम्बन्ध में सचेत भी कर दिया था; इसलिए वह सारी दुर्घटना के लिए अपनी पत्नी को ही दोषी ठहरा रहा था और उससे बहुत असन्तुष्ट हो उठा था।

किटी के मन की दशा कुछ और ही हो रही थी। जो कोई भी व्रान्सकी की धोखेबाज़ी के सम्बन्ध में उसके प्रति समवेदना प्रकट करता उससे वह बेतरह बिगड़ बैठती। डाली अपनी बहन की मानसिक दशा से भली भाँति परिचित थी, तथापि उसे सान्त्वना देने की चेष्टा किये बिना उसे चैन नहीं पड़ रहा था।

एक दिन किटी के पास जाकर डाली ने कहा—"बहन किटी, वह व्यक्ति इस योग्य नहीं है कि उसके लिए तुम अपनी मानसिक शान्ति और शारीरिक स्वास्थ्य नष्ट करो!"

किटी अत्यन्त उत्तेजित होकर बोल उठी—"तुम क्या यह समझती हो कि मैं उस व्यक्ति के कारण मरी जा रही हूँ, जिसने अत्यन्त नीचता-पूर्वक मेरे प्रेम को ठुकरा दिया? तुम मेरी बहन होकर ऐसी बात कहती हो! और साथ ही यह ढोंग रचती हो कि तुम मेरे साथ सहानुभूति रखती हो!"

"किटी, तुम मेरे साथ बड़ा अन्याय कर रही हो!"

"तब तुम क्यों मुझे इस प्रकार तंग करती हो?"

"मैं तो तुम्हें सान्त्वना देने आई थी; मैं तुम्हारे मन की दशा से भली भाँति परिचित हूँ, इसलिए—"

"तुम्हें यह जानना चाहिए कि मुझमें अभी यथेष्ट आत्म-सम्मान शेष है, और मैं ऐसे व्यक्ति के प्रेम से कभी विकल नहीं हो सकती जिसने मेरा अपमान किया हो!"

"पर मैंने यह कब कहा कि तुम उसके प्रेम से विकल हो! केवल एक बात मैं अवश्य तुमसे पूछना चाहती हूँ। मुझे बिना किसी संकोच के बताओ कि क्या लेविन तुम्हारे पास आया था?"

लेविन का नाम लेकर डाली ने अनजान में किटी के सबसे अधिक पीड़ित स्थान को छू दिया। उसके संयम का सारा बाँध टूट पड़ा। वह झल्लाकर बोल उठी—"लेविन का इन सब बातों से क्या सम्बन्ध है? तुम सब लोग मुझे पागल करने पर तुले हुए हो! याद रक्खो मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ। तुम्हारे पति ने तुम्हें धोखा दिया, पर तुमने उसके साथ समझौता कर लिया! मैं कदापि ऐसा नहीं कर सकती!"

किस बात के सिलसिले में क्या बात आ पड़ी! डाली अपनी अपमानित अवस्था को भूली नहीं थी, इसलिए जब किटी ने अत्यन्त निर्ममता के साथ उस भावना को कुरेदा तब उसे अत्यन्त मार्मिक पीड़ा का अनुभव हुआ। अतिशय लज्जित और दुःखित होकर उसने सिर नीचे को कर लिया। किटी अपनी अन्तिम बात कहकर कमरे से बाहर चली जाना चाहती थी, पर डाली पर उसकी बात का कैसा भयङ्कर प्रभाव पड़ा है, यह देखकर वह दरवाज़े पर ही ठिठककर खड़ी रह गई। इसके बाद उसने धीरे से पीछे की ओर से डाली का गला अपनी दोनों बाँहों से जकड़ लिया, और अत्यन्त सकरुण तथा गद्‌गद स्वर में बोली—"डाली, बहन, मुझे क्षमा करो, मैं बहुत दुःखी हूँ!" यह कहकर उसने आँसुओं की झड़ी से भीगा हुआ अपना मुख डाली के कपड़ों में छिपा लिया।

वास्तव में दोनों बहनें एक-दूसरे को बहुत चाहती थीं। अपने पीड़ित हृदय का आवेग समाप्त होने पर किटी इस बात के लिए बहुत पछताने लगी कि उसने डाली को मर्मान्तिक पीड़ा पहुँचाई; और डाली को भी यह बात समझने में देर न लगी कि लेविन का प्रेम तिरस्कृत करने के कारण किटी के दुःख का ठिकाना नहीं है। लेविन को वह वास्तव में हृदय से चाहती थी, पर बीच में उसके भाग्य-गगन में एक

अमंगलकारी धूमकेतु की तरह व्रान्सकी न जाने कहाँ से आकर, उसके सरल, सुन्दर और स्वास्थ्यपूर्ण जीवन का सारा क्रम नष्ट-भ्रष्ट करके चला गया! व्रान्सकी को अब वह हृदय से घृणा करने लगी थी, इसलिए उसके चले जाने से उसे कोई दुःख नहीं था। पर लेविन का प्रेम ठुकराकर जो भयङ्कर भूल उसने की थी, उसके प्रायश्चित्त का कोई उपाय न रह जाने से वह एक पल के लिए भी चैन नहीं पा रही थी।

जब डाक्टरों की चिकित्सा से किटी को कुछ भी लाभ होते न दिखाई दिया, तब अन्त में उसके माता-पिता ने उसे हवा बदलने और इलाज के लिए जर्मनी के स्वास्थ्यकर स्थानों में ले जाने का निश्चय किया।

१५

प्रिन्सेस बेट्सी के यहाँ संभ्रान्त-वंशीया महिलाओं की भीड़ लगी हुई थी। विभिन्न विषयों की चर्चा चल रही थी। थियेटर, नाच, राग-रंग, प्रेम आदि कोई भी विषय छूटने नहीं पाता था। कुछ समय बाद आना और उसके पति की चर्चा चल पड़ी। आना की एक संगिनी ने कहा--"जब से आना मास्को से आई है, तब से उसके रंग-ढंग एकदम बदल गये हैं।"

राजदूत की पत्नी ने कहा--"सबसे मुख्य परिवर्तन यह हुआ है कि वह अपने साथ अलेक्ज़ेण्डर ब्रान्सकी की छाया ले आई है।"

एक दूसरी महिला बोली--"तो इससे क्या हुआ ! किसी सुन्दर पुरुष की छाया को अपने साथ लिये रहना तो एक सुन्दरी स्त्री के लिए गौरव की बात समझी जानी चाहिए !"

आना की संगिनी ने उत्तर दिया--"पर इस प्रकार की स्त्री के जीवन का परिणाम बहुत बुरा होता है।"

प्रिन्सेस म्यागकाया नाम की एक अधेड़ महिला इस पर बोल उठी--"आना केरेनिना एक बहुत अच्छी स्त्री है। मैं उसके पति को तनिक भी पसन्द नहीं करती, पर वह स्वयं मुझे बहुत प्यारी लगती है।"

राजदूत की पत्नी ने कहा--"उसके पति से तुम क्यों असन्तुष्ट हो ? मेरे पति का कहना है कि केरेनिन के जोड़ का राजनीतिज्ञ यूरोप में कोई दूसरा नहीं है।"

"मेरा पति भी ठीक यही बात कहता है। पर मैं इस बात पर विश्वास नहीं करती। हम प्रत्येक विषय को अपने पतियों की आँखों से देखने की आदी हो गई हैं, इसी कारण किसी भी बात को हम ठीक तरह से समझ नहीं पातीं ! मेरी राय में केरेनिन निपट मूर्ख है ! यदि ऐसा न होता, तो क्या आना उसे न चाहती ? इसके अतिरिक्त यदि प्रत्येक पुरुष उसकी निराली सुन्दरता पर मोहित होकर उससे प्रेम करने लगे, तो इसमें उसका क्या दोष है ? चूँकि हमारे पीछे कोई व्यक्ति छाया की तरह लगा हुआ नहीं है, इसलिए हम आना को दोष दें, यह बात ठीक नहीं है।"

इतने में व्रान्सकी ने भीतर प्रवेश किया। प्रिन्सेस बेट्सी ने उसे स्वागतपूर्वक बिठाया। व्रान्सकी एक नाटक-घर से आया था, और एक फ्रेंच अभिनेत्री की प्रशंसा करने लगा था; पर किसी ने बीच ही में उसे टोक दिया और किसी दूसरे विषय की चर्चा छेड़ दी।

कुछ ही समय बाद दरवाज़े के बाहर किसी के पाँवों की ताल-लय-युक्त ध्वनि सुनाई दी। प्रिन्सेस बेट्सी यह जानकर कि आना आ रही है, व्रान्सकी की ओर कौतूहल के साथ देखने लगे। व्रान्सकी ने जब आना को देखा, तब उसके मुख का प्रमोदपूर्ण उच्छृंखल भाव एकदम बदल गया, और पुलक-हर्ष का एक संयत, शान्त और साथ ही कातर भाव व्यक्त हो उठा।

आना अपने साथ सौन्दर्य की बहार लाती हुई और अत्यन्त शालीनता के साथ एक-एक पग आगे बढ़ाती हुई ड्राइंग-रूम में आई। उसने अपनी सहज मधुर मुसकान से प्रत्येक परिचित व्यक्ति की ओर देखा। जब उसने व्रान्सकी की ओर देखा, तब व्रान्सकी ने सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया, और एक कुर्सी उसकी ओर बढ़ा दी। आना व्रान्सकी के इस व्यवहार से संकोच का अनुभव करने लगी, और उसकी भौंहों में कुछ बल-से पड़ गये। व्रान्सकी के प्रति अवज्ञा का-सा भाव दिखाकर वह प्रिन्सेस बेट्सी से बातें करने लगी। उसने कहा—"क्षमा करना, मैं कौन्टेस लीडिया के यहाँ चली गई थी, इसलिए जल्दी न आ सकी। सर जान भी वहाँ आये हुए थे। वे बड़े मज़े के आदमी हैं।"

"कौन, वह पादड़ी?"

"हाँ वही। वे भारतीय जीवन की बड़ी विचित्र-विचित्र बातें हमें सुना रहे थे।"

बहुत देर तक उपस्थित महिलायें सर जान के सम्बन्ध में बातें करती रहीं। इसके बाद प्रेम और विवाह-सम्बन्धी सर्वप्रिय विषय चल पड़ा। आना ने इस चर्चा में विशेष भाग नहीं लिया। व्रान्सकी बड़ी उत्सुकता से उसकी ओर देख रहा था कि वह प्रेम के सम्बन्ध में अपनी क्या राय प्रकट करती है। अन्त में आना ने अपना मत व्यक्त किया। उसने अपने दस्तानों से खेलते हुए कहा—"मेरा यह विचार है कि जिस प्रकार जितने सिर होते हैं उतने ही मस्तिष्क भी होते हैं, उसी प्रकार जितने हृदय होते हैं उतने ही प्रकार के प्रेम भी होते हैं।"

व्रान्सकी ने यह सुनकर एक लम्बी साँस ली। सहसा आना ने उसकी ओर मुंह करके कहा—"मेरे पास अभी मास्को से एक पत्र आया है, जिसमें यह लिखा है कि किटी श्चरबेट्स्काया बहुत बीमार है।"

व्रान्सकी ने भौंहों को कुछ सिकोड़ते हुए कहा—"अच्छा!"

आना ने तनिक तीव्र दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए पूछा—"इस समाचार के प्रति आप उदासीन क्यों हैं?"

"मैं उदासीन तो नहीं हूँ! पत्र में इस सम्बन्ध में और क्या-क्या बातें लिखी हैं, ज़रा सुनाने का कष्ट करें, तो बड़ी कृपा हो!"

आना वहाँ से तत्काल उठ खड़ी हुई और बेट्सी की कुर्सी के पास बैठकर उसने एक प्याला चाय का माँगा। बेट्सी जब प्याले में चाय ढाल रही थी, तब व्रान्सकी उठकर आना के पास ही चला आया और बोला—"आपने बताया नहीं कि पत्र में और क्या लिखा है?"

आना ने अत्यन्त गम्भीर स्वर में कहा—"मैं बहुत दिनों से यह अनुभव करती हूँ कि पुरुषों को मान-मर्यादा का तनिक भी बोध नहीं होता, यद्यपि वे सदा उसकी चर्चा करते रहते हैं। मैं आपसे एक बात स्पष्ट शब्दों में कहना चाहती हूँ।" यह कहकर वह वहाँ से उठकर दो-एक पग आगे बढ़ी और एक छोटे-से टेबिल के पास बैठ गई, जिस पर कुछ 'अलबम' रक्खे हुए थे।

व्रान्सकी ने उसके हाथ में चाय का प्याला देते हुए कहा—"मैं आपकी बातों का अर्थ कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ।"

आना बोली—"मैं आपसे कहना चाहती थी कि किटी के साथ आपका व्यवहार घोर अन्यायपूर्ण रहा है!"

"मैं मानता हूँ। पर इसका मूल कारण कौन है, कभी इस बात पर भी आपने सोचा है?"

"यह मैं क्या जानूँ और मुझे जानने की आवश्यकता ही क्या है?"

"आवश्यकता क्या है, यह आप अपने हृदय से पूछिए!"

व्रान्सकी आना की आँखों से आँखें मिलाकर बड़ी ढिठाई से बातें कर रहा था। आना के मुख पर लज्जा का आवरण-सा छाने लगा। उसने कहा—"इस बात से केवल यही प्रमाणित होता है कि आप हृदयहीन हैं।" पर उसकी दृष्टि कह रही थी—"मैं जानती हूँ कि आपके पास हृदय है और इसी कारण मैं आपसे घबराती हूँ।"

व्रान्सकी बोला--"किटी श्चरबेट्स्काया के प्रति मैंने कभी प्रेम का अनुभव नहीं किया। वह केवल एक भूल थी!"

आना सिहर उठी। उसने कहा--"मैं अनेक बार आपको यह वीभत्स शब्द काम में लाने से मना कर चुकी हूँ!" पर तत्काल वह समझ गई कि मना करने का अर्थ स्पष्ट ही यह है कि वह अभी से व्रान्सकी पर अपना अधिकार-सा समझने लग गई है, जिसके फलस्वरूप वह साहस पाकर प्रेम की चर्चा और अधिक करेगा। पर प्रकट में वह बोली--"मैं बहुत दिनों से यह बात स्पष्ट शब्दों में कह देना चाहती थी कि इस प्रकार की बातों का अब अन्त हो जाना चाहिए। अब बहुत हो चुका। मुझे जीवन में आज तक कभी किसी के आगे लज्जित नहीं होना पड़ा, पर आपको देखते ही मुझे ऐसा जान पड़ने लगता है, जैसे किसी अपराध में मेरा भी भाग है।"

व्रान्सकी ने देखा तो ऐसा कहते हुए उसके मुख पर एक अपूर्व आध्यात्मिक ज्योति-सी झलकने लगी थी। उसके उस अनुपम सौन्दर्य को देखकर उसका हृदय पागलों के समान नाचने लगा। अपने को कुछ सँभालकर उसने कहा--"आप मुझसे चाहती क्या हैं? ठीक-ठीक बताइए!"

"मैं चाहती हूँ कि आप मास्को जाकर किटी से क्षमा माँगें!"

"पर मैं जानता हूँ कि आपकी अन्तरात्मा ऐसा कदापि नहीं चाहती!"

उसने प्रायः फुसफुसाते हुए कहा--"यदि आप मुझसे वास्तव में प्रेम करते हैं, जैसा कि आप कहते हैं, तो ऐसा उपाय कीजिए जिससे मैं शान्ति से रह सकूँ।"

व्रान्सकी का चित्त आशान्वित हो उठा। उसने कहा--"आप क्या यह नहीं देखती हैं कि मेरा सारा जीवन ही आप पर अवलंबित है? मैं अब स्वप्न में भी एक पल के लिए इस बात की कल्पना नहीं कर सकता कि आप मुझसे अलग हैं! अपने और तुम्हारे लिए मैं केवल दो बातों की सम्भावना देखता हूँ--या तो अनन्त निराशा या अनन्त सुख! पर यह सब आप पर निर्भर है।"

आना सोचने लगी कि उसे क्या उत्तर देना चाहिए, पर कोई भी शब्द वह मुँह से न निकाल सकी; केवल अपनी दो प्रेम-भरी आँखों से व्रान्सकी की ओर देखती रह गई। उसकी उस प्रेम-पूर्ण दृष्टि से व्रान्सकी की आशा का दीपक और अधिक जगमगा उठा।

कुछ देर बाद आना जब कुछ सँभली, तब बोली—"मेरे ख़ातिर आप इतनी कृपा अवश्य करें कि इस प्रकार की बातें फिर कभी न कहें। हम दोनों एक-दूसरे के मित्र बने रहें, इतना ही यथेष्ट है।" पर उसकी आँखें कुछ दूसरी ही बात कह रही थीं।

व्रान्सकी ने कहा—"यह असम्भव है। मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि आपका प्रेम पाने की आशा में सदा इसी प्रकार कष्ट पाता और तड़पता रहूँ—इतना अधिकार आप मुझे दीजिए। यदि यह भी असम्भव है, और मेरी उपस्थिति आपको खलती है, तो मुझे देश-निकाले की आज्ञा दीजिए। मैं फिर कभी अपना मुँह आपको नहीं दिखाऊँगा।"

"नहीं, मैं आपको यहाँ से भगाने की इच्छा कदापि नहीं रखती।"

इतने में आना का पति, केरेनिन, वहाँ पहुँच गया। उसने अपनी पत्नी और व्रान्सकी को एक बार सरसरी निगाह से देखा; इसके बाद वह बेट्सी के पास जाकर बैठ गया। बेट्सी ने कुछ देर के बाद उसके साथ सामूहिक सैनिक-सम्बन्धी नव प्रचलित क़ानून-सम्बन्धी विवाद छेड़ दिया। व्रान्सकी और आना उसी छोटे-से टेबिल के पास बैठे रहे। महिलाओं में आपस में यह कानाफूसी होने लगी कि अपने पति की उपस्थिति में भी आना की वह धृष्टता वास्तव में अत्यन्त अनुचित है। ड्राइंग-रूम में जितने भी व्यक्ति बैठे हुए थे वे सब बीच-बीच में उन दोनों की ओर घूरकर जैसे यह भाव प्रकट कर रहे थे कि वे सारी मण्डली से अलग बैठकर सबके लिए विघ्नस्वरूप हो रहे हैं। केवल केरेनिन उस ओर तनिक भी ध्यान देना उचित नहीं समझ रहा था, और जिस विषय की चर्चा चल रही थी उसी में व्यस्त रहने का भाव दिखा रहा था।

बेट्सी ने जब देखा कि बहुत ज़्यादती हो रही है, तो वह अपने स्थान पर किसी दूसरी महिला को बिठाकर चुपके से आना के पास गई, और बोली—"तुम्हारे पति की तर्क-प्रणाली इतनी स्पष्ट और सुन्दर रहती है कि प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता।"

आना ने कहा—"ठीक है!" पर वास्तव में वह बेट्सी का एक शब्द भी नहीं समझ पाई थी, क्योंकि उस समय उसका ध्यान किसी अलौकिक आनन्दमय स्वप्नलोक में था। उसके मुख में एक अनिर्वचनीय सुख का दीप्ताभास झलक रहा था। वहाँ से उठकर वह बेट्सी के साथ गई, और सब लोगों के साथ बड़े टेबिल के पास जाकर बैठ गई। प्रायः आध घंटे बाद केरेनिन उठा, और उसने अपनी

पत्नी से घर चलने का प्रस्ताव किया। पर आना ने कहा कि वह रात्रि-भोजन करके लौटेगी। केरेनिन को अकेले ही जाना पड़ा।

रात में जब आना बेट्सी के यहाँ भोजन कर चुकी, तब उसके लिए बाहर गाड़ी तैयार खड़ी थी। व्रान्सकी उसे नीचे तक पहुँचाने गया और चलते हुए उसने फिर एक बार व्याकुल उत्सुकता से अपना प्रेम निवेदित किया। आना ने कहा--"प्रेम! आप जानते हैं, मैं इस शब्द से क्यों इतना घबराती हूँ? इसलिए कि मेरे लिए उसका अर्थ इतना गहन और गंभीर है कि आप अनुमान नहीं लगा सकते!" यह कहकर उसने एक बार मार्मिक दृष्टि से व्रान्सकी की ओर देखा और फिर तत्काल गाड़ी के भीतर जा बैठी। जाने से पहले उसने अपना हाथ व्रान्सकी की ओर बढ़ाया। व्रान्सकी ने अपनी हथेली से उसकी हथेली का स्पर्श करते हुए ऐसा अनुभव किया, जैसे उसका हाथ प्रेम की जलन से जल रहा हो। आज उसके हृदय में आशा का ज्वार ज़ोर मार रहा था। उसे पूरा विश्वास हो रहा था कि अब सफलता में अधिक देर नहीं है।

१६

केरेनिन ने जब अपनी पत्नी को ब्रान्सकी के साथ उल्लासपूर्वक बातें करते देखा था, तब उसे इसमें कोई बुराई नहीं दिखाई दी थी। पर जब उसने देखा कि ड्राइंग-रूम में बैठे हुए दूसरे व्यक्ति आना के उस व्यवहार को अनुचित समझकर उसकी ओर घूर रहे हैं और आपस में कानाफूसी कर रहे हैं, तब उसने यह निश्चय किया कि आना जब घर लौटकर आवेगी, तो उससे इस सम्बन्ध में बातें करनी होंगी।

केरेनिन ईर्ष्यालु प्रकृति का पति नहीं था। ईर्ष्या को वह पुरुषोचित गुण नहीं समझता था। इसके अतिरिक्त अपनी स्त्री की पति-भक्ति पर उसे पूरा विश्वास था। उसे स्वयं नहीं ज्ञात था कि उसे ऐसा विश्वास क्यों है। उसने कभी इस बात पर विचार नहीं किया कि उसकी पत्नी, जो आयु में उससे बहुत छोटी है और साथ ही बहुत सुन्दरी है, किसी दूसरे व्यक्ति से प्रेम क्यों नहीं कर सकती? केरेनिन का सारा जीवन आफ़ीशियल जगत् में बीता था, और वास्तविक जगत् के सम्बन्ध में उसका अनुभव नहीं के बराबर था। पर आज अकस्मात् उसे ऐसा जान पड़ा कि जिस कृत्रिम जीवन के पुल पर इतने दिनों तक उसका आना-जाना जारी था, वह आज टूटने को है और उसके नीचे वास्तविक जीवन का अतल गह्वर मुँह बाये उसकी ओर देख रहा है।

घर आकर वह बहुत देर तक बड़ी बेचैनी के साथ अपने कमरे में टहलता हुआ इस बात की चिन्ता करता रहा कि किस उपाय से, किन शब्दों-द्वारा वह अपनी पत्नी के आगे अपने मन की भावना को प्रकट करे। वास्तव में उसके मन की ठीक भावना क्या है, इसी बात को वह निश्चित रूप से नहीं समझ पा रहा था। यदि आना उसकी बात को हँसी में उड़ा दे, तो उसे अपना-सा मुँह लेकर रह जाना पड़ेगा, यह भय भी उसके मन में बना हुआ था। अत्यन्त उद्विग्न होकर वह अपनी उँगलियों के पोरों को चटकाने लगा। उसकी यह पुरानी आदत थी। इस उपाय से उसके मन को बहुत-कुछ शान्ति मिलती।

किसी के सीढ़ियों से होकर ऊपर आने का शब्द सुनाई दिया। इसी बीच केरेनिन ने मन ही मन वह व्याख्यान तैयार कर लिया था जो वह आना को सुनाना चाहता था। आना ने द्रुत गति से भीतर प्रवेश किया। केरेनिन ने देखा कि उसके मुख पर एक उज्ज्वल दीप्ति प्रभासित हो रही है। पर वास्तव में वह आनन्द की दीप्ति नहीं थी; एक गहन अन्धकारमयी रात्रि में भयंकर अग्निकाण्ड हो जाने से जो प्रज्वलित प्रकाश चारों ओर व्याप्त हो जाता है, उसका आभास आना के मुख पर झलक रहा था।

अपने पति को देखकर आना बोली—"तुम अभी सोये नहीं? आश्चर्य है!" यह कहकर उसने अपनी टोपी उतारकर फेंक दी। इसके बाद अपने कमरे में प्रवेश करती हुई दरवाज़े पर से वह बोली—"अलेक्से, काफ़ी देर हो चुकी है; जाकर सो रहो!"

पर केरेनिन ने कहा—"आना, मैं तुम्हारे साथ एक आवश्यक बात करना चाहता हूँ।"

"मुझसे? क्या बात करना चाहते हो?" कुछ विस्मय का भाव दिखाती हुई आना एक कुर्सी पर बैठ गई।

"आना, मैं तुम्हें सावधान कर देना अपना कर्तव्य समझता हूँ।"

मुख पर सहज मुसकान का भाव झलकाने की चेष्टा करते हुए आना ने कहा—"क्यों, क्या बात हो गई?"

"मैं तुम्हें इस सम्बन्ध में सावधान करना चाहता हूँ कि अपनी लापरवाही के कारण तुम लोगों की चर्चा का विषय बनने लगी हो, जिसे मैं अनुचित समझता हूँ। आज कौन्ट व्रान्सकी के साथ तुम जो उल्लासपूर्ण बातें कर रही थीं, उसके कारण सबका ध्यान तुम्हारी ओर आकर्षित हो रहा था।"

केरेनिन यद्यपि आन्तरिक गम्भीरता के साथ बोल रहा था, तथापि आना अपनी मुसकराती हुई आँखों से जैसे उसके एक-एक शब्द का परिहास कर रही थी। अपनी पत्नी के इस नये व्यवहार से केरेनिन आतंक से सिहर उठा। इतने दिनों से वह जिस सहृदय और समवेदनाशील आना को जानता आया था, आज जैसे उसका अस्तित्व ही नहीं रह गया था। आज कोई दूसरी ही नारी आना का वेष बनाकर उसके साथ निष्ठुर व्यंग्य करने आई हुई थी। केवल एक ही दिन में ऐसा भयङ्कर परिवर्तन उसमें हो गया था!

आना ने अपने स्वर में स्वाभाविकता लाते हुए कहा—"तुम सदा इसी प्रकार की बातें करते हो! कभी तुम इस बात के लिए असन्तोष

प्रकट करते हो कि मैं उदास रहती हूँ, और कभी तुम्हें मेरी प्रसन्नता खलने लगती है। मेरा आज का दोष केवल यही हो सकता है कि मैं उदास नहीं थी!"

"आना! आज तुम्हारे स्वभाव में कितना बड़ा परिवर्तन हो गया है, यह तुम स्वयं नहीं जानतीं। खैर, कुछ भी हो! फिर भी मैं तुमसे एक बार और कह देना चाहता हूँ कि मैं ईर्ष्यालु प्रकृति का नहीं हूँ, और कौन्ट व्रान्सकी के प्रति मेरे मन में तनिक भी ईर्ष्या का भाव नहीं उत्पन्न हुआ है; पर मुझे समाज का बहुत ध्यान है। मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि समाज को तुम्हारे सम्बन्ध में किसी अनुचित बात का संदेह करने का अवसर न मिले! और यदि वास्तव में मेरे प्रति तुम्हारे मन के भाव में कुछ परिवर्तन आगया हो, यदि लोगों के सन्देह में थोड़ी-सी भी सचाई हो, तो मैं तुमसे ध्यानपूर्वक इस बात पर विचार करने की प्रार्थना करूँगा कि इसका परिणाम तुम्हारे लड़के के लिए कैसा खतरनाक होगा।"

लड़के का उल्लेख होते ही आना का हृदय तलमलाने लगा। वह इस विषय की चर्चा को अधिक बढ़ाना नहीं चाहती थी। उसने कहा—"तुम्हारी इस प्रकार की बातों का कोई उत्तर देना मैं उचित नहीं समझती। इसके अतिरिक्त अब सोने का समय भी हो चला है।"

केरेनिन एक लम्बी साँस लेकर चला गया। आना भी अपने पलँग पर जा लेटी। व्रान्सकी की प्रेमोन्माद-भरी बातों की स्मृति बहुत देर तक उसे हर्षाकुल करती रही, और व्रान्सकी के सुन्दर मुख की प्रेममग्न छवि उसकी आँखों के आगे मँड़राती रही।

× × × ×

तब से केरेनिन के जीवन की गति एकदम बदल गई। व्रान्सकी आना से बेट्सी के यहाँ, थियेटर में, नाच में—सर्वत्र मिलता रहता था। केरेनिन बखूबी जानता था कि समाज के लोग इस सम्बन्ध में कानाफूसी कर रहे हैं, और इस कारण वह व्रान्सकी के साथ अपनी पत्नी की इस घनिष्ठता को अत्यन्त अनुचित समझता था। पर उसे रोकने में अपने को एकदम असमर्थ पाता था। उसकी बुद्धि कुछ काम नहीं करती थी, और किस उपाय से अपनी मान-मर्यादा की रक्षा की जाय, इस सम्बन्ध में वह कुछ सोच नहीं पाता था। यदि पर-पुरुष से आना की घनिष्ठता इस रूप से चलती कि समाज को पता न चलता, तो केरेनिन को उसका व्यवहार उतना न अखरता;

पत्नी का प्रेम खोने की अपेक्षा उसे इस बात का अधिक ध्यान था कि समाज में उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे! पर आना और व्रान्सकी की गतिविधि किसी से छिपने नहीं पाती थी, और न वे उसे छिपाना ही चाहते थे।

प्रारम्भ में आना के मन में जो झिझक वर्त्तमान थी, उसका कारण सामाजिक निन्दा का भय कदापि नहीं था। उसका कारण उसकी आत्मा की गहराई में छिपा हुआ था। उसकी आत्मा उसे अपने पति को धोखा देने से बार-बार रोक रही थी। पर वास्तव में उसने अपने अन्तस्तल से अपने पति को कभी नहीं चाहा था। फिर भी वह आज तक निर्विकार और निर्विचित्र गृहस्थ-जीवन बिताकर वह अपने को सन्तुष्ट समझा करती थी। अपने प्यारे लड़के सेरेज़ा के स्नेह में मग्न रहकर वह अपने नीरस-स्वभाव पति की उदासीनता को बिना किसी शिकायत के सहन करती आ रही थी। पर जिस दिन मास्को स्टेशन में सहसा व्रान्सकी से उसकी भेंट हो गई, उस दिन उसे ऐसा अनुभव हुआ कि संसार का रंग ही कुछ निराला है, जिसे आज तक अपने गृहस्थ-जीवन के क़ैदखाने में बन्द पड़ी रहने के कारण जान ही न पाई थी! तब से किस प्रकार का अन्तर्द्वन्द्व उसके भीतर चलने लगा उससे पाठक परिचित हो चुके हैं।

अन्त में एक दिन आना और व्रान्सकी का प्रेम प्रथम बार वास्तविक मिलन के रूप में परिणत हुआ। जिस चरम आकांक्षा के लिए व्रान्सकी प्रायः एक वर्ष से आना का पीछा कर रहा था, जिसकी कल्पना से आना भयंकर रूप से घबराई हुई थी, और साथ ही जिसे वह एक असम्भव और अपूर्व सुख-स्वप्न समझती आई थी, वह अन्त में जब चरितार्थ हो गया, तब वह विह्वल अन्तर्वेदना से सिहरने और सिसकने लगी। व्रान्सकी विभ्रान्त-सा होकर बार-बार उसे सान्त्वना देने की चेष्टा करते हुए कहने लगा—"आना! आना! भगवान् के लिए ऐसा न करो! शान्त होओ।"

पर वह ज्यों-ज्यों उसे ढाढ़स देने का प्रयास करता, त्यों-त्यों आना म्लान मस्तक को अतिशय लज्जा और ग्लानि के कारण नीचे झुकाती जाती थी—उस मस्तक को जो इतने दिनों तक गर्वोन्नत और गृहस्थ-धर्म की उज्ज्वल महिमा से प्रदीप्त था! उसके पाँव लड़खड़ा रहे थे, और वह नीचे फ़र्श पर गिर पड़ी होती, यदि व्रान्सकी ने उसे न पकड़ लिया होता।

व्रान्सकी के वक्षस्थल में अपना कलंकित मुँह छिपाते हुए वह भर्राई हुई आवाज़ में बोली—"हे भगवान् ! मुझे क्षमा करो !" उसकी अन्तरात्मा अपने को भयङ्कर रूप से दोषी समझने लगी थी। पर साथ ही वह यह भी जानती थी कि व्रान्सकी के अतिरिक्त संसार में उसका अपना कहने को अब कोई नहीं रह गया, इसलिए भगवान् को प्रार्थना के लिए सम्बोधित करती हुई जैसे वह व्रान्सकी को ही ईश्वर समझकर सम्बोधित कर रही थी !

व्रान्सकी को उसे उस करुण अवस्था में देखकर ठीक वैसा ही अनुभव हो रहा था जैसे किसी हत्याकारी को अपने आगे अपने हाथों से मार डाले गये व्यक्ति की लाश को देखकर होता है। उसे ऐसा जान पड़ता था कि उन दोनों के बीच इतने दिनों तक जो अलौकिक हर्षमय आध्यात्मिक प्रेम चल रहा था, आज उसकी साकार मूर्ति की उसने निर्मम हत्या कर डाली है। पर जिस प्रकार हत्याकारी विकल और विभ्रान्त होने पर भी लाश को छिपाने के लिए उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालता है और मृत व्यक्ति से जो कुछ भी प्राप्त हो सके उसे लेकर सन्तोष प्राप्त करना चाहता है, उसी प्रकार व्रान्सकी भी सिसकती हुई आना की पीठ पर हाथ फेरते हुए उसे चुमकारने और पुचकारने लगा। आना बहुत देर तक कलुषित वेदना से पुलकित और साथ ही मर्म-ग्लानि से निपीड़ित अवस्था में व्रान्सकी को दोनों बाँहों से जकड़े रही, और अन्त में एक बार विभ्रान्त और विकल दृष्टि से अपने प्रेमिक की ओर देखकर वहाँ से चली गई। अपनी उस नई परिस्थिति पर सोच-विचार करने के लिए वह अत्यन्त अधीर हो रही थी, पर रास्ते भर और घर पहुँचने पर भी वह कुछ सोच न पाई।

१७

किटी ने लेविन के विवाह-प्रस्ताव को अस्वीकृत करके उसका जो अपमान किया था, उसकी वेदना को वह किसी प्रकार भूल नहीं पाता था। उसने सोचा था कि घर लौटने पर जब वह एकान्त शान्तिपूर्ण ग्राम्य-जीवन बिताने लगेगा, तब उस अपमान का कोई चिह्न उसके हृदय में शेष न रहेगा। पर तीन महीने बीत चुके थे, फिर भी वह उस वेदना के प्रति किसी प्रकार भी उदासीन नहीं हो पाता था। इसके अतिरिक्त बार-बार यह भावना उसे विकल करने लगी थी कि उसका एकाकी जीवन बिताना अस्वाभाविक और अनुचित है। केवल वही नहीं, उसके आस-पास के सभी लोगों की भी यही धारणा थी। उसे याद आया कि मास्को जाने से पहले उसने अपने सहृदय ग्वाले से कहा था—"निकोलस, मैं विवाह करने के विचार से मास्को जा रहा हूँ।" इस पर निकोलस ने तत्काल उत्तर दिया था—"ठीक है, कान्स्टेन्टिन डिमिट्रिच, आपको अवश्य ही शीघ्र विवाह कर लेना चाहिए।" पर मास्को जाकर उसे अपना-सा मुँह लेकर लौटना पड़ा था, यह बात निकोलस भी जान गया था और दूसरे व्यक्ति भी समझ गये थे। रह-रहकर किटी की स्मृति उसके मन में तीखे काँटे की तरह बिंध रही थी। उस विकलता को भूलने के लिए वह फिर एक बार पूर्ण मनोयोग के साथ कृषि-सम्बन्धी कामों में जुट गया। कृषि में क्या-क्या सुधार किये जा सकते हैं, इस विषय में वह एक पुस्तक लिखने लगा। जब जाड़ा बिलकुल बीत चुका और बर्फ़ पिघलकर साफ़ हो गई, तब वह हल जोतने और अनाज बोने के कामों में अपने असामियों का साथ देने लगा। इस प्रकार वह कुछ समय तक किटी को बहुत-कुछ भूला रहा।

पर एक दिन आब्लान्सकी अकस्मात् लेविन के 'स्टेट' में पहुँच गया। लेविन ने उसकी बड़ी आव-भगत की, उसे खूब खिलाया, बढ़िया-बढ़िया शराबें पिलाईं और जंगल में जाकर शिकार करने में भी उसका साथ दिया। यद्यपि लेविन को यह पूरा विश्वास था कि किटी का विवाह हो चुका होगा, तथापि इस सम्बन्ध में कोई भी प्रश्न आब्लान्सकी से करने में वह बड़ी घबराहट का अनुभव कर रहा था। वह डर रहा था कि कहीं आब्लान्सकी सचमुच यहँ न कह बैठे कि "हाँ, किटी का विवाह हो चुका और वह बहुत प्रसन्न है।". पर आब्लान्सकी यद्यपि स्वभावतः बहुत बातूनी था, तथापि उसने किटी के सम्बन्ध में एक शब्द भी मुँह से नहीं निकाला, और सब समय ज़माने भर की व्यर्थ की बातें करता रहा।

लेविन की उत्सुकता और आशंका, दोनों साथ-साथ बढ़ती चली गईं। अन्त में जब वे शिकार खेलकर लौटने की तैयारी कर रहे थे, तब लेविन बिना पूछे रह न सका और उसने धड़कते हुए हृदय से सहसा आब्लान्सकी से पूछा--"स्टीवा, तुमने अभी तक मुझे यह नहीं बताया कि तुम्हारी साली का विवाह हो चुका है या नहीं, और यदि नहीं हुआ है, तो कब होनेवाला है?"

"किटी का विचार अभी विवाह करने का नहीं है। वह बहुत बीमार है और डाक्टरों ने उसे यूरोप के स्वास्थ्यकर स्थानों में जाने की राय दी है।"

इस प्रकार का उत्तर पाने की आशा लेविन ने स्वप्न में भी नहीं की थी। यह एकदम अप्रत्याशित था! किटी का विवाह अभी तक नहीं हुआ और वह बहुत बीमार है, इन दोनों समाचारों ने उसे अत्यन्त विचलित कर दिया। उसने घबराहट के स्वर में पूछा--"क्यों, क्या बात हो गई? क्या वास्तव में उसकी दशा चिन्ताजनक है?"

आब्लान्सकी ने जब उसे सब बातें विस्तारपूर्वक सुनाईं, तब किटी की रुग्ण अवस्था के कारण चिन्तित होने पर भी उसके मन में एक प्रकार की प्रसन्नता भी हुई। जिसने उसे मार्मिक पीड़ा पहुँचाई, वह स्वयं पीड़ित है, इस कल्पना से उसे एक प्रकार की क्षीण प्रतिहिंसा का-सा सुख हुआ। पर व्रान्सकी का उल्लेख होते ही लेविन का चित्त फिर एक बार अत्यन्त खिन्न हो उठा। उसने आब्लान्सकी को बीच ही में टोकते हुए कहा--"रहने दो, मुझे दूसरों की पारिवारिक बातों से कोई वास्ता नहीं है।" पर जब दोनों घर पहुँचे, तब उसने स्वयं व्रान्सकी की चर्चा चलाई, और आब्लान्सकी ने जब उसकी कुलीनता और शालीनता की प्रशंसा की, तब व्रान्सकी के विरुद्ध लेविन ने बहुत-सी खरी खोटी बातें कह सुनाईं।

× × ×

आब्लान्सकी अपने काम से आया हुआ था। वह स्वभावतः विलासी और उड़ाऊ प्रकृति का व्यक्ति था, इसलिए सदा आर्थिक कष्ट में रहता था। उसके ससुर ने अपनी लड़की को दहेज़ में जो 'स्टेट' दी थी, उसके एक विस्तृत जंगली भाग को बेचकर वह अपनी तत्कालीन आर्थिक समस्या को किसी हद तक हल करना चाहता था। एक धनी महाजन उसे खरीद रहा था और मोल-तोल की सब बातें तय हो चुकी थीं। महाजन ने उसे आठ हज़ार रूबल नक़द दिये और बाक़ी चौबीस हज़ार रूबल छः वर्ष के भीतर देने का वचन देते हुए एक

दस्तावेज़ लिखकर उसे दिया। मास्को वापस जाकर, आब्लान्सकी ने जितने भी रुपये नक़द पाये थे वे सब राग-रंग और घुड़दौड़ में शीघ्र ही फूँक दिये। इधर शहर में रहने से डाली का पारिवारिक व्यय बहुत बढ़ रहा था। उसने अपने पिता की दान की हुई छोटी-सी ज़मींदारी एर्गुशेवो में बच्चों को साथ लेकर रहने का पक्का विचार कर लिया, और कुछ समय बाद वह वहाँ चली भी गई।

एर्गुशेवो की स्टेट लेविन की ज़मींदारी से प्रायः पैंतीस मील की दूरी पर थी। प्रारम्भ में कुछ दिनों तक डाली देहात में आकर बड़े कष्ट में रही। 'स्टेट' इतने दिनों तक अव्यवस्थित अवस्था में एक अयोग्य व्यक्ति के प्रबन्ध में छोड़ दी गई थी। डाली को बच्चों के लिए न नियमित रूप से दूध मिल पाता था न अण्डे। मकान भी बेमरम्मत पड़ा हुआ था। नौकर-चाकरों का भी ठीक प्रबन्ध नहीं था। तात्पर्य यह कि छोटी से छोटी बात से लेकर बड़ी से बड़ी बात तक किसी भी विषय में कोई भी ठीक सुविधा डाली को प्राप्त नहीं हो पाती थी। पर धीरे-धीरे उसने कठोर प्रयत्नों से सब कठिनाइयों को यथासम्भव सुलझा लिया।

एक दिन अकस्मात् लेविन उसके पास आ पहुँचा। लेविन को देखकर डाली के आश्चर्य और प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। डाली वास्तव में लेविन के प्रति सगे भाई का-सा स्नेह रखती थी। उसने उल्लास के साथ कहा—"आपको देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है!"

लेविन बोला—"आपको प्रसन्नता तो हुई है, पर आपने आज तक मुझे इस बात की सूचना देने की कृपा नहीं की कि आप यहाँ आई हुई हैं। स्टीवा का पत्र न आया होता, तो मैं कुछ जान ही न पाता। उसने लिखा है कि आपको देहाती जीवन का अनुभव न होने से यहाँ बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा होगा। इसलिए मैं यह जानने आया हूँ कि मेरी सहायता की कोई आवश्यकता आपको है या नहीं। मैं सब समय आपकी सेवा के लिए तैयार हूँ।"

डाली ने कहा—"प्रारम्भ में अवश्य मुझे बहुत कष्ट हुआ था, पर अब किसी बात की असुविधा नहीं रही।"

डाली के बच्चे लेविन को बहुत प्यारे लग रहे थे। वह उनके साथ खेल-कूद और दौड़-धूप करने का प्रलोभन न त्याग सका। बच्चे प्रथम बार देखने से ही उससे हिलमिल गये थे, और उसके साथ में बहुत प्रसन्न हो रहे थे। डाली को भी लेविन का बच्चों के साथ बच्चा बन जाने का स्वभाव बहुत पसन्द आ रहा था।

भोजन के बाद डाली और लेविन बाहर बरामदे में बैठ गये। तीसरा व्यक्ति वहाँ पर कोई नहीं था। डाली ने किटी की चर्चा चलाते हुए कहा—"आप जानते हैं, किटी इस बार गर्मियों में यहीं मेरे पास आकर रहना चाहती है?"

"अच्छा!" यह कहते ही लेविन का मुँह लाल हो उठा। उसने तत्काल दूसरे विषय की चर्चा चला दी और बोला—"तो आपके लिए मैं दो सुन्दर गायें अपनी 'स्टेट' से भेज दूँ? यहाँ अवश्य ही बच्चों के लिए दूध कम पड़ता होगा।"

"नहीं, धन्यवाद है। मुझे अब गायों की आवश्यकता नहीं रही।"

इसके बाद लेविन ने गाय के दूध के गुणों पर लेक्चर देना आरम्भ कर दिया। डाली धैर्य्यपूर्वक सुनती रही। पर अवसर मिलते ही उसने फिर किटी की बात चलाई। उसने कहा—"किटी ने लिखा है कि वह देहात के एकान्त जीवन को बहुत चाहने लगी है।"

"उसके स्वास्थ्य का क्या हाल है?"

"भगवान् की कृपा से वह अब बिलकुल अच्छी है। मैं पहले से ही जानती थी कि उसे फेफड़े का रोग नहीं है, जैसा कि डाक्टरों ने बताया था।"

"ओह, यह सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।" डाली ने देखा तो यह कहते हुए लेविन के मुख पर एक अत्यन्त करुण और म्लान छाया घिर आई थी।

कुछ क्षण चुप रहकर डाली ने कहा—"कान्स्टेन्टिन डिमिट्रिच, कृपा करके यह तो बताइए कि आप किटी से असन्तुष्ट क्यों हैं?"

"मैं? मैं किसी से भी असन्तुष्ट नहीं हूँ।"

"निश्चय ही आप असन्तुष्ट हैं। नहीं तो आप जब मास्को में थे, तब मेरे मायकेवालों से और हम लोगों से अवश्य ही मिलते रहते थे।"

अन्त में लेविन को सच बात कहनी ही पड़ी। वह बोला—"डार्या अलेग्ज़ेण्ड्रोवना, आपको मालूम होना चाहिए कि मेरे विवाह का प्रस्ताव अस्वीकृत किया जा चुका है। तिस पर भी आप मुझे दोष देती हैं, यह बड़े दुःख की बात है।" यह कहते हुए लेविन के मुख पर लज्जा और करुणा का अनोखा सम्मिश्रण दिखाई दे रहा था।

डाली ने कहा—"यद्यपि आज तक मुझसे इस सम्बन्ध में किसी ने कभी कुछ नहीं कहा, फिर भी मैंने इस बात का अनुमान लगा लिया था। बेचारी किटी! मैं उसके लिए बहुत ही दुःखित हूँ। आपका

दुःख केवल इस कारण है कि आपके आत्माभिमान को धक्का पहुँचा है, पर उस बेचारी का दुःख अकथनीय और अत्यन्त भयंकर है। अब मैं सब बातें समझ रही हूँ!"

लेविन डाली की प्रत्येक बात को अत्यन्त ध्यानपूर्वक सुन रहा था। डाली कहती चली गई—"आप लोग पुरुष हैं, इसलिए नारी-हृदय की उलझनों को सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से समझने में असमर्थ हैं। आप लोगों को इस बात की पूरी स्वाधीनता रहती है कि किसी लड़की से निरन्तर मिलते-जुलते रहें, और उसके शील-स्वभाव और हृदय की विशेषताओं की परख करके यह निश्चय कर लें कि वह आपके विवाह-योग्य है या नहीं। पर एक लड़की की स्थिति पर विचार कीजिए, जो अपने स्वाभाविक संकोच के कारण आप लोगों के स्वभाव की यथार्थता और हृदय की भावनाओं की वास्तविकता का ठीक-ठीक परिचय प्राप्त कर लेने में एकदम असमर्थ रहती है। ऐसी दशा में यदि कोई लड़की दो प्रतिद्वन्द्वियों में से किसी एक को वरण करने में भूल कर बैठे, तो क्या उसकी वह भूल अक्षम्य समझी जानी चाहिए? किटी व्रान्सकी को दूर ही से जानती थी। इसके अतिरिक्त उसे जीवन का अनुभव नहीं था। उसके स्थान में यदि मैं होती, तो कदापि इस तरह की भूल न करती। मैं प्रारम्भ से ही व्रान्सकी को पसन्द नहीं करती थी। पर किटी धोखे में आगई। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि आपके प्रति किटी का सम्मान और स्नेह व्रान्सकी से तनिक भी कम नहीं रहा। पर चूँकि आपने बीच में मेरे मायकेवालों के यहाँ आना-जाना छोड़ दिया, और व्रान्सकी ने उसे घेर लिया, इसलिए यह सारा अनर्थ खड़ा हो गया।"

ये सब बातें सुनकर लेविन ने एक लम्बी साँस ली और अन्त में कहा—"नहीं डार्या अलेग्ज़ेण्ड्रोवना, अब आपकी ये सब बातें व्यर्थ हैं। आपकी बहन को दो में से एक को चुनना था, सो उसने चुन लिया, फिर उसका फल चाहे कुछ भी हुआ हो। जो बात हो चुकी, उसके सुधार का अब कोई उपचार नहीं हो सकता।"

"तो आप क्या किटी से अब मिलेंगे ही नहीं?"

"मैं कतराऊँगा तो नहीं, पर हाँ, यथाशक्ति इस बात की चेष्टा करूँगा कि हम दोनों एक दूसरे से अलग ही रहें।"

उसी दिन लेविन अपने घर को लौट चला।

१८

यद्यपि ब्रान्सकी का अन्तर्जीवन आना के प्रेम को लेकर ही व्यस्त था, तथापि उसके बाह्य जीवन की गति-विधि में उस प्रेमोन्माद से कोई विशेष परिवर्तन नहीं होने पाया था। वह प्रतिदिन के सामाजिक तथा सैनिक कार्य-चक्रों में पहले की ही तरह नियमित रूप से भाग लेता रहता था। उसे सैनिक जीवन बहुत प्रिय था। इसका एक कारण यह था कि उसकी पलटन के सब अफ़सर उसे बहुत चाहते थे और उसका सम्मान करते थे। पर उसने अपने किसी भी साथी से अपने प्रेम की चर्चा नहीं की। इसका प्रधान कारण यह था कि वह अपने साथियों के उच्छृङ्खल नैतिक जीवन से भली भाँति परिचित था, और जानता था कि आना के प्रति उसके प्रेम की गहनता और गाम्भीर्य का महत्त्व वे लोग कदापि नहीं समझ सकते। इसके पहले वह स्वयं प्रत्येक प्रकार की उच्छृङ्खलता में उन लोगों का साथ दिया करता था और प्रेम को अस्थायी मनोविनोद और क्षणिक शारीरिक उन्माद के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझता था। पर आना का परिचय प्राप्त होने के बाद से उसकी भावधारा ही एकदम बदल गई थी। अब प्रेम उसके लिए जीवन और मृत्यु के प्रश्न का गम्भीर रूप धारण कर चुका था। अब वह न तो अपने साथियों की किसी उच्छृङ्खल शराब-पार्टी में सम्मिलित होता था और न किसी सस्ती प्रेम-लीला में। पर और सब विषयों में वह उनका साथ देता रहता था।

आना से उसके प्रेम की चर्चा सारे समाज में फैल चुकी थी। उसकी मा ने पहले तो इस प्रेम में कोई बुराई नहीं देखी, पर बाद में जब उसे मालूम हुआ कि ब्रान्सकी ने उसके कारण एक बहुत बड़े पद को अस्वीकार कर दिया है और समाज में उसकी बदनामी फैलती जाती है, तब वह अपने लड़के से अत्यन्त असन्तुष्ट हो उठी। ब्रान्सकी का बड़ा भाई यद्यपि एक नंबर का विलासी और उच्छृङ्खल प्रकृति का व्यक्ति था, तथापि समाज के लोगों को असन्तुष्ट देखकर वह भी ब्रान्सकी के प्रति बिगड़ बैठा। पर ब्रान्सकी ने इन सब बातों की कोई परवाह नहीं की, वह आना के प्रेम से अपने को गौरवान्वित ही समझता था।

व्रान्सकी को घुड़दौड़ का बहुत शौक़ था। शीघ्र ही अफ़सरों के बीच एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घुड़दौड़ होनेवाली थी, जिसमें स्वयं सम्राट् (ज़ार) उपस्थित होनेवाले थे। व्रान्सकी ने उसमें सम्मिलित होने के लिए अपना नाम दे दिया था और एक बहुत अच्छी जात की अँगरेज़ी घोड़ी ख़रीद ली थी, जिसे एक अँगरेज़ विशेषज्ञ-द्वारा 'ट्रेनिंग' दिलाई जा रही थी।

इधर कुछ दिनों से आना पीटर्सबर्ग की गर्मी से बचने के लिए शहर से कुछ दूर देहात में एक बँगले में रहने लगी थी। गर्मियों में केरेनिन-परिवार सदा वहीं रहता था। व्रान्सकी के 'क्वार्टरों' से उसका बँगला बहुत दूर नहीं था। व्रान्सकी जानता था कि केरेनिन अभी शहर से लौटकर नहीं आया है। इसलिए घुड़दौड़ से पहले एक बार आना से मिल लेना उसने आवश्यक समझा।

घोड़ागाड़ी में सवार होकर जब वह आना के बँगले पर पहुँचा, तब आना उस समय ऊपरवाले बरामदे में एक फूलों के गमले के पास खड़ी थी। सौभाग्य से आना का लड़का सेरेज़ा भी उस समय घर पर नहीं था। सेरेज़ा यद्यपि अभी केवल आठ-नौ वर्ष का बच्चा था, फिर भी वह बहुत बुद्धिमान् था। वह यह बात ताड़ गया था कि उसकी मा और उसके पिता के बीच किसी कारण से अनबन हो गई है, और व्रान्सकी के साथ उसकी मा का कोई रहस्यमय सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। व्रान्सकी के आने पर वह अत्यन्त विस्मय और कौतूहल से भरी हुई दृष्टि से उसकी ओर देखता था। उसकी वह जिज्ञासु दृष्टि दोनों को अत्यन्त असहनीय जान पड़ती थी। इसलिए उसकी उपस्थिति में वे कोई विशेष बात नहीं करते थे।

कुछ भी हो आना को अकेले पाकर व्रान्सकी को प्रसन्नता हुई। आना ने जब उसे देखा, तब उसके मुख पर विस्मय, भय और आनन्द के भाव एक साथ झलक उठे। व्रान्सकी ने देखा कि वह वास्तव में बहुत चिन्तित और उदास है। उसने पूछा कि उसके आने के पहले वह किस बात की चिन्ता कर रही थी। आना के मुख के भाव से ऐसा जान पड़ता था कि वह कोई विशेष बात कहना चाहती है, पर कह नहीं पाती। व्रान्सकी के प्रश्न को टालकर उसने घुड़दौड़ की तैयारी के सम्बन्ध की बातें उससे पूछीं। व्रान्सकी ने कुछ उत्साह के साथ सब बातें उसे विस्तारपूर्वक समझाईं। आना मन ही मन कहने लगी—"उसे असली बात की सूचना दूँ या नहीं? घुड़दौड़ को लेकर वह इतना

व्यस्त है कि जो महत्त्वपूर्ण प्रश्न मेरे सामने उपस्थित हैं, उसके प्रति कहीं उदासीनता न प्रकट कर बैठे!"

पर व्रान्सकी की प्रेमोत्सुक अन्तर्दृष्टि को वह धोखा नहीं दे सकती थी। व्रान्सकी ने जब बार-बार यह कहा कि वह कोई विशेष बात उससे छिपा रही है, तब उसने अन्त में यथार्थ बात की सूचना उसे दे दी। उसने धीरे से कहा—"मुझको गर्भ रह गया है!" यह कहकर वह अत्यन्त ध्यानपूर्वक व्रान्सकी की ओर देखने लगी कि उस पर इस बात का क्या प्रभाव पड़ता है। व्रान्सकी ने अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक अपना सिर नीचा कर लिया और सोचने लगा। आना को व्रान्सकी की इस मुद्रा से यह विश्वास हो गया कि वह उसकी बात के महत्त्व को पूर्ण रूप से समझ गया है। वह कृतज्ञतापूर्वक व्रान्सकी का हाथ पकड़कर अत्यन्त प्रेमपूर्वक उसे दबाने लगी।

व्रान्सकी ने कुछ देर बाद सिर उठाकर आना की ओर स्थिर दृष्टि से देखा और अत्यन्त दृढ़तापूर्वक कहा—"देखो आना, हम दोनों में से किसी ने कभी इस प्रेम को विनोद नहीं समझा है। इसकी गम्भीरता को हम दोनों भली भाँति समझते हैं। और अब तो भाग्य ने हमें वज्र-बन्धन में बाँध दिया है। इसलिए वर्त्तमान समय में हम जिस झूठी परिस्थिति में निवास कर रहे हैं, उसका अब अन्त हो जाना चाहिए!"

"अन्त होना चाहिए? किस उपाय से?"

"तुम्हें अपने पति को त्यागकर मुझे पूर्णरूप से अपनाना होगा।"

"पर यह कैसे सम्भव हो सकता है, अलेक्से?"

"चाहे किसी भी उपाय से हो, ऐसा करना ही होगा। अन्यथा तुम्हारी आत्मा समाज, पुत्र और पति की चिन्ता से प्रतिपल दग्ध होती रहेगी!"

"तो क्या तुम यह चाहते हो कि हम दोनों भाग निकलें?"

"हर्ज क्या है! वर्त्तमान दशा में चोरों की तरह हमारा जो प्रेम चल रहा है वह असहनीय है।"

आना के मुख के भाव में कुछ कड़ापन आगया। उसने कटुता के साथ कहा—"ठीक है! तुम्हारे साथ भागकर तुम्हारी रखेली बनकर रहूँ, और अपने—अपना सब कुछ नष्ट कर डालूँ!" वह "अपने लड़के को कहीं का न छोड़ूँ," यह कहने जा रही थी, पर लड़के की समस्या उसके लिए इतनी भीषण थी कि उसका नाम मुँह पर लाने, उसका उल्लेख किसी भी रूप में करने का साहस उसे नहीं होता था।

व्रान्सकी ने अत्यन्त विकल होकर स्नेहपूर्ण स्वर में कहा—"आना! आना! तुम इस तरह की बातें करती हो!"

"मैं तुम्हारे स्वभाव की सचाई से भली भाँति परिचित हूँ और यह भी जानती हूँ कि तुम्हें किसी प्रकार की भी लुका-छिपी पसन्द नहीं है। पर तुम मेरी परिस्थिति की यथार्थता अभी तक ठीक तरह से नहीं समझ पाये हो। फिर भी तुमने मेरी खातिर अपना जीवन बरबाद कर डाला है, यह बात मुझसे छिपी नहीं है।"

"नहीं, आना!"—व्रान्सकी ने सकरुण और कृतज्ञ दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए कहा—"तुमने मेरे लिए जो महान् आत्म-त्याग किया है उसकी तुलना में मेरा त्याग अत्यन्त तुच्छ है। मेरे साथ सम्बन्ध स्थापित करके तुम कितने दुःख का अनुभव कर रही हो, यह बात मैं भली भाँति देख रहा हूँ!"

आना के मुख में आनन्द की एक दीप्ति झलक गई। उसने कहा—"मैं दुःखी? जानते हो, मैं एक ऐसे भूखे व्यक्ति के समान हूँ, जिसके आगे भरपूर भोजन रख दिया गया है। भले ही वह जाड़े से ठिठुर रहा हो, फटे-पुराने कपड़े पहने हो, अपनी दुर्दशा के लिए लज्जित हो, पर वह कभी दुःखी नहीं हो सकता। मैं भी—" सहसा अपने लड़के के आने का शब्द सुनकर वह थम गई।

व्रान्सकी उससे विदा होकर बाहर अपनी गाड़ी में सवार हुआ और वहाँ से चल पड़ा।

१६

व्रान्सकी जब घुड़दौड़ के मैदान में पहुँचा, तब वहाँ चारों ओर दर्शकों की बड़ी भारी भीड़ इकट्ठा हो चुकी थी। वह घुड़दौड़ से पहले अपने मन को किसी भी कारण से उत्तेजित करना नहीं चाहता था, और इसी लिए वह सभी परिचित व्यक्तियों से कतराकर चल रहा था। सम्भ्रान्तवंशीय लोग सायबानों के सामने खड़े होकर आपस में संयत वार्तालाप और हास-परिहास कर रहे थे। व्रान्सकी ने दूर ही से आन्ना को बेट्सी और अपनी भाभी के साथ देख लिया था। पर वह अपने चित्त को शान्त रखने के उद्देश्य से उनके पास नहीं गया। फिर भी मिलनेवाले उससे मिलने से नहीं चूकते थे। आब्लान्सकी, जो एक दिन पहले मास्को से आया था, स्वयं उसके पास आ पहुँचा और मुख पर अपनी स्वाभाविक प्रसन्नता झलकाता हुआ उससे कुशल-संवाद पूछने लगा। उससे छुट्टी पाते ही एक दूसरे परिचित व्यक्ति ने व्रान्सकी को घेर लिया, और सायबानों की ओर संकेत करते हुए कहा—"वह देखो केरेनिन भी आ पहुँचा है और अपनी स्त्री को ढूंढ़ रहा है। उसकी स्त्री आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। क्या तुमने उसे अभी नहीं देखा है ?" व्रान्सकी ने कहा—"नहीं।" और इतना कहकर वह सीधे आगे को बढ़ा।

घुड़दौड़ की तैयारी होने लगी। सत्रह अफ़सर घोड़ों को दौड़ानेवाले थे। सबने पहले नंबर खींचे। व्रान्सकी का सातवाँ नम्बर निकला। वह अपनी नई घोड़ी पर सवार हुआ। घोड़ी की तेज़ चमकती हुई आँखें बता रही थीं कि वह बहुत तेज़ दौड़नेवाली है, पर साथ ही उसकी हरकतों से उसके भड़कने की भी काफ़ी आशंका व्रान्सकी को मालूम हो रही थी। फिर भी वह स्थिर और शान्त होकर बैठा रहा। सत्रहों घुड़सवार एक क़तार में खड़े हो गये। इसके बाद आदेश पाने पर दौड़ पड़े।

वह साधारण घुड़दौड़ नहीं थी। घुड़सवारों को बीच-बीच में भयङ्कर खाई-खन्दकों को पार करना था। व्रान्सकी का सबसे ज़बर्दस्त प्रतिद्वन्द्वी मेखोटिन था, जो 'ग्लेडियेटर' नामक घोड़े पर सवार था। व्रान्सकी की घोड़ी का नाम 'फ़ू-फ़ू' था। 'फ़ू-फ़ू' बड़ी आसानी से मार्ग

को कठिन से कठिन रुकावटों को पार करती हुई आगे बढ़ती चली गई, और 'ग्लेडियेटर' को छोड़कर शेष सब घोड़ों को उसने अपने पीछे छोड़ दिया। कुछ समय बाद वह 'ग्लेडियेटर' से भी आगे बढ़ गई। चारों ओर से व्रान्सकी को शाबासियाँ मिलने लगीं। अन्त में केवल एक छोटी-सी खाई पार करने को रह गई थी। 'फ़ू-फ़ू' यद्यपि उन्मत्त वेग से दौड़ी चली जा रही थी, और उसकी शक्ति चरम सीमा को पहुँचने पर थी, फिर भी व्रान्सकी यह निश्चित रूप से जानता था कि वह अन्तिम खाई को सहज ही में लाँघ जायगी। किन्तु ज्यों ही घोड़ी खाई के पास पहुँची, त्यों ही व्रान्सकी ने यह भयङ्कर भूल की कि लगाम खींचकर घोड़ी का मुंह ऊपर को करके स्वयं पीछे की ओर दब गया। घोड़ी पीठ के बल ऐसे भयङ्कर वेग से गिर पड़ी कि लाख चेष्टा करने पर भी फिर उठ न सकी। उसकी पीठ टूट गई थी। व्रान्सकी सिर धुन-धुनकर अपनी अक्षम्य भूल के लिए पछताने लगा। ऐसा पश्चात्ताप उसे अपने जीवन में शायद ही किसी काम के लिए कभी हुआ हो।

× × ×

आना अन्यान्य संभ्रान्त स्त्री-पुरुषों के साथ एक विशेष सायबान में बैठी हुई व्रान्सकी की प्रत्येक गति-विधि को अत्यन्त ध्यानपूर्वक देख रही थी। पास ही उसका पति बैठा था और कुछ व्यक्तियों से किसी विशेष विषय पर वाद-विवाद कर रहा था। आना यद्यपि उसकी ओर नहीं देख रही थी, तथापि उसका प्रत्येक शब्द एक नुकीली परेग की तरह उसके कानों में गड़ता था। वह मन ही मन कहती थी—"झूठ! झूठ! उसकी प्रत्येक बात, प्रत्येक शब्द झूठ से भरा हुआ है। उसका सारा व्यक्तित्व, सारा जीवन असत्य से पूर्ण है। वह जानता है कि अलेक्से (व्रान्सकी) से मेरा प्रेम है, फिर भी समाज में यह भाव जताना चाहता है, जैसे मैं उसकी परम पति-परायणा स्त्री हूँ। यदि वह ईर्ष्या से पागल होकर मुझे मार डालता या व्रान्सकी की हत्या कर डालता, तो मैं वास्तव में उसका सम्मान करती। पर चूँकि उसने मुझसे कभी प्रेम नहीं किया, और सामाजिक प्रतिष्ठा को ही वह सदा सबसे अधिक महत्त्व देता रहा है, इसलिए वह ऐसा कर ही नहीं सकता—उसकी झूठी आत्मा में इतना नैतिक साहस आ ही नहीं सकता!"

जब व्रान्सकी की घोड़ी बड़ी तेज़ रफ़्तार से दौड़ी चली जा रही थी, तब आना अपने छोटे-से दूरबीन की सहायता से अत्यन्त

ध्यानपूर्वक अपनी निर्निमेष आँखों से उसी का अनुसरण कर रही थी। केरेनिन को घुड़दौड़ से कोई वास्ता नहीं था। पर चूँकि सब लोग स्तब्ध और मन्त्र-मुग्ध-से होकर चुपचाप उस सनसनीखेज़ घुड़दौड़ को देखने में तन्मय थे, इसलिए वह भी चुप रहने को विवश था। घुड़सवारों की ओर न देखकर वह आना की ओर बड़े गौर से देख रहा था। आना का मुख अत्यन्त पीला पड़ा हुआ था, और गम्भीर छाया से घिरा हुआ था। स्पष्ट ही केवल एक व्यक्ति को छोड़कर वह और कहीं कुछ भी नहीं देख रही थी। केरेनिन को यह जानने में देर न लगी कि सारी घुड़दौड़ में केवल व्रान्सकी ही आना का एकमात्र लक्ष्य है। व्रान्सकी के अतिरिक्त जब कोई अफ़सर किसी भयङ्कर खाई-खन्दक में गिर पड़ता था; तब आना के मुख पर तनिक भी चिन्ता का चिह्न नहीं दिखाई देता था; पर जब व्रान्सकी के गिरने की सम्भावना दिखाई देती, तब आना का मुख चिन्ता के कारण मुर्दा के समान निर्जीव दिखाई देने लगता।

अन्त में व्रान्सकी जब अन्तिम खाई पार करने के समय भयङ्कर रूप से गिरा, तब आना बड़े ज़ोर से चीख उठी। केरेनिन ने देखा कि वह पंखहीन पक्षी के समान बेचैनी से तड़पने लगी है। वह अत्यन्त चञ्चल हो उठी थी। कभी बेट्सी से कुछ कहने की इच्छा प्रकट करती, जैसे उससे किसी भयङ्कर वज्रपात से रक्षा की सहायता चाहती हो; कभी अपने स्थान से उठकर चले जाने का उद्योग करती। अन्त में उसने बेट्सी को लक्ष्य करके अत्यन्त विकल भाव से कहा—"चलो, यहाँ से चलें!" पर बेट्सी का ध्यान उस समय किसी दूसरी बात पर लगा हुआ था, इसलिए उसने सुना नहीं, पर केरेनिन ने सुन लिया। उसने अपना हाथ आना की ओर बढ़ाते हुए फ्रेंच भाषा में कहा—"चलो, यदि तुम्हारी इच्छा हो तो चले चलें।"

पर आना के कान पास ही बैठे हुए एक जनरल की बातों की ओर लगे हुए थे। जनरल कह रहा था—"कहा जाता है कि उसका पाँव भी टूट गया है; यह बहुत बुरा हुआ।"

आना ने फिर एक बार अपनी दूरबीन उठाकर उसे आँखों से लगाया और व्रान्सकी की ओर देखने लगी। पर उस समय इतने अधिक व्यक्ति चारों ओर से व्रान्सकी को घेरकर खड़े हो गये थे कि कुछ देख पाना उसके लिए असम्भव था। स्पष्ट ही आना यह जानने के लिए बेचैन हो रही थी कि व्रान्सकी को कितनी चोट आई है, उसके जीने की आशा है या नहीं। पर जानने का कोई उपाय उसे नहीं

दिखाई दे रहा था। जिस सायबान में आना थी ठीक उसी के पास ही ज़ार का सायबान था। एक अफ़सर तेज़ी से अपने घोड़े को दौड़ाते हुए ज़ार के पास पहुँचा और उसे कोई विशेष संवाद सुनाने लगा। आना उस ओर कान लगाकर सुनने की चेष्टा करने लगी, पर कुछ सुनाई न दिया। इसके बाद उसने पास ही बैठे हुए अपने भाई को पुकारा—"स्टीवा! स्टीवा!"

केरेनिन ने फिर अत्यन्त नम्रतापूर्वक उससे चलने का प्रस्ताव किया। पर आना ने घृणा के कारण उसकी ओर देखा तक नहीं। इतने में उसने देखा कि एक अफ़सर ब्रान्सकी के पास से दौड़ा चला आ रहा है। बेट्सी ने उसकी ओर रूमाल हिलाकर उसे बुलाया। अफ़सर ने आकर कहा—"घुड़सवार को कोई चोट नहीं पहुँची, पर घोड़ी की पीठ टूट गई है।" यह सुनते ही आना ने पंखे से अपना मुँह ढक लिया और सिसक-सिसककर रोने लगी। जो क्रन्दनावेग इतनी देर से उसके भीतर उमड़ रहा था, उसका बाँध टूट गया था। केरेनिन ने देखा कि बड़ी ज्यादती हो रही है। उसने फिर कहा—"मैं तीसरी बार तुमसे अपने साथ चलने का प्रस्ताव करता हूँ।"

बेट्सी बोली—"अलेक्से अलेग्ज़ेण्ड्रोविच आना को मैं अपने साथ लाई हूँ, और मैंने उसे घर वापस पहुँचाने का वचन दिया है।"

केरेनिन बोला—"क्षमा कीजिएगा, प्रिन्सेस, मैं देख रहा हूँ कि मेरी स्त्री की तबीअत खराब है, इसलिए मैं उसे अपने साथ अभी ले जाना चाहता हूँ।"

उसके कण्ठस्वर की दृढ़ता से आना चौंकी, और चुपचाप उठ खड़ी हुई। बेट्सी ने उसके कान में कहा—"मैं ब्रान्सकी का हाल मालूम करके तुम्हें सूचित कर दूँगी।"

अपने पति के साथ गाड़ी में सवार होने पर आना केवल ब्रान्सकी की ही बात सोचती रही—उसे कितनी चोट आई है? उससे आज रात भेंट होगी या नहीं? अपने पति के अस्तित्व तक का अनुभव उसे नहीं हो रहा था।

सहसा केरेनिन ने कहा—"तुम्हारा आज का व्यवहार बहुत ही अनुचित और निन्दनीय था।"

आना पहले से ही जानती थी कि उसका पति ठीक यही बात, इसी ढंग से इन्हीं शब्दों में कहेगा। उसने पूछा—"क्यों, मेरा व्यवहार क्यों अनुचित था।"

केरेनिन बोला––"एक समय था जब मैं पति-पत्नी के भीतरी सम्बन्ध का उल्लेख तुम्हारे आगे करता था, पर अब मैं केवल बाहरी सम्बन्ध की रक्षा पर जोर देने लगा हूँ। इसलिए मैं फिर एक बार तुमसे कह देना चाहता हूँ कि तुम्हारे भीतर चाहे कैसी ही भावना क्यों न वर्त्तमान हो, पर बाहर समाज के लोगों के सामने तुम्हारे व्यवहार से कोई ऐसी बात प्रकट नहीं होनी चाहिए जिससे उन्हें हम लोगों के ऊपर किसी प्रकार के छींटे कसने का अवसर मिले!"

आना कुछ देर तक चुप बैठी रही। उसे चुप देखकर केरेनिन ने कहा––"यदि मुझे धोखा हुआ हो तो उस दशा में मैं क्षमा चाहता हूँ।"

आना अधिक न सह सकी; अत्यन्त हताश दृष्टि से उसके रूखे मुख की ओर देखते हुए वह बोल उठी––"नहीं, तुम्हें धोखा नहीं हुआ। सचमुच मैं व्रान्सकी के लिए बहुत विकल हो उठी थी। इस समय भी मैं तुमसे बातें कर रही हूँ, पर मेरा ध्यान उसी की ओर लगा हुआ है। मैं उससे प्रेम करती हूँ। मैं उसकी प्रेमिका बन चुकी हूँ। तुमसे मैं घबराती हूँ, तुमसे घृणा करती हूँ। तुम्हें मेरे विरुद्ध जो कुछ करना हो, कर सकते हो!"

यह कहकर गाड़ी के कोने में अपना मुँह छिपाकर वह फफक-फफक-कर रोने लगी।

केरेनिन कुछ देर तक एक मुर्दे के समान जड़ और स्तब्ध बैठा रहा। उसके बाद उसने कहा––"अच्छी बात है! पर जब तक मैं अपने मान की रक्षा का प्रबन्ध न कर लूँ, तब तक तुम्हें हम दोनों के बाहरी सम्बन्ध का पूरा ध्यान रखना होगा।"

आना को बँगले पर पहुँचाकर केरेनिन पीटर्सबर्ग चला गया। उसके चले जाने पर आना ने एक लम्बी साँस ली और मन ही मन कहा––"ईश्वर को धन्यवाद है कि मैंने सब बातें उसके आगे स्पष्ट रूप से कह डाली हैं!"

२०

जर्मनी के जिस स्वास्थ्योपकारी स्थान में किटी के माता-पिता उसे ले गये, वहाँ वास्तव में किटी का स्वास्थ्य धीरे-धीरे अच्छा होने लगा। इसका कारण, उस स्थान की जलवायु उतना नहीं थी, जितना वारेङ्का नाम की एक म ुर-स्वभाव की रूसी लड़की का संग। वारेङ्का के अपने मा-बाप नहीं थे। वह मादाम स्ताल नाम की एक भद्र महिला की पालिता लड़की थी। मादाम स्ताल का स्वास्थ्य अच्छा न रहने के कारण वह भी वारेङ्का को साथ लेकर वहीं आई हुई थी, जहाँ श्चरबैट्सकी-परिवार गया हुआ था।

किटी का ध्यान इस बात पर गया कि वारेङ्का केवल अपनी धर्ममाता की ही सेवा-शुश्रूषा नहीं करती, वरन् जितने भी दीन-हीन, असहाय, अथवा अनाथ रोगी दूर-दूर से वहाँ आये हुए हैं, वह उन सबकी यथासाध्य परिचर्या करती रहती है। उसके स्वभाव में सबसे अधिक प्रशंसनीय बात यह थी कि वह दिखावे के लिए कोई भी काम नहीं करती थी। जब वह किसी व्यक्ति को किसी भी बात के लिए अपनी प्रशंसा करते सुनती, तब उसके मुख के भाव से यह बात स्पष्ट हो जाती कि वह उस प्रशंसा से तनिक भी प्रसन्न नहीं हुई है।

एक दिन किसी एक बात के सिलसिले में किटी ने यह जान लिया कि वारेङ्का को भी उसी के समान भग्न प्रेम का अनुभव हुआ है। वह एक व्यक्ति से प्रेम करती थी और वह भी उसे बहुत चाहता था। पर उस व्यक्ति की मा अपने बेटे के इस प्रेम-सम्बन्ध को पसन्द नहीं करती थी, इससे उसने अपनी मा के कहने पर एक दूसरी लड़की से विवाह कर लिया। किटी ने उस व्यक्ति को हृदयहीन बताकर उसकी निन्दा की। पर वारेङ्का ने कहा—"नहीं, वह बहुत अच्छा आदमी है। उसका कोई दोष नहीं है; उसने केवल अपनी मा के प्रति अपने कर्तव्य का पालन किया है। इसके अतिरिक्त, मुझे उस बात का कोई दुःख नहीं है। मैंने दूसरे कामों में लगकर अपने मन को समझा लिया है, और मैं सुखी हूँ।"

किटी ने जब पूछा कि उस अपमान की वेदना को वह कैसे भूलने में समर्थ हुई है, तब उसने उत्तर दिया—"उसमें अपमान की कोई बात

नहीं थी––क्योंकि वह मुझे चाहता था। पर अपनी मा का कहना वह कैसे टाल सकता था!"

किटी ने कहा––"पर यदि तुम्हारे प्रेमिक ने अपनी इच्छा से तुम्हें धोखा दिया होता, तो उस दशा में तुम अपने मन को कैसे समझातीं?"

वारेङ्का समझ गई कि किटी उससे अपने मन की बात कह रही है। उसने उत्तर दिया––"ऐसी दशा में मैं समझ जाती कि वह बहुत नीच और घृणित जीव है और ऐसे व्यक्ति के लिए दुःख करना मैं उचित नहीं समझती।"

"पर अपमान की वेदना को कोई कैसे भूले!"

"अपमान किस बात का? तुमने उस व्यक्ति से अपने प्रेम का निवेदन तो किया नहीं होगा!"

किटी ने कहा––"ठीक है; पर मेरी आँखों के भाव से निश्चय ही उसने जान लिया होगा कि मैं उसे चाहती रही हूँ।"

"क्या तुम अब भी उसे चाहती हो?"

"नहीं, अब मैं हृदय से उससे घृणा करती हूँ। पर मैं स्वयं अपने को उस अपमान के लिए क्षमा नहीं कर सकती!"

वारेङ्का ने स्नेहपूर्ण तिरस्कार के साथ कहा––"तुम आवश्यकता से अधिक भावुक लड़की हो! इस रोग का केवल एक ही इलाज है। वह यह कि तुम अपने सम्बन्ध में कम सोचा करो, और दूसरों के सम्बन्ध में अधिक चिन्ता करने की आदत डालो। इस उपाय से तुम अपने काल्पनिक अपमान की वेदना को अवश्य ही भूल जाओगी।"

इस बात से किटी को यह समझने में देर न लगी कि वारेङ्का प्रेम-प्रताड़ित होने पर भी क्यों सुखी है। उसने देखा कि दूसरों की सच्ची और निष्काम सेवा का व्रत ग्रहण करके वह अपने व्यक्तिगत सुख-दुःख और मान-अपमान की अवज्ञा सहज में कर पाई है। तब से वह धार्मिक पुस्तकों को पढ़ने में मन लगाने लगी और वारेङ्का की ही तरह रोगियों की परिचर्या करके अपनी आत्मा को सन्तुष्ट और हृदय को शान्त करने की चेष्टा करने लगी। कुछ दिनों तक यही क्रम जारी रहा। पर अन्त में इन बातों से वह उकता गई। वह समझ गई कि यह सब ढोंग है और वह रोग-शोक तथा दुःख-दरिद्रता से पूर्ण वातावरण से उसकी आत्मा का कोई सम्बन्ध नहीं है। उसका पीड़ित तरुण हृदय शान्ति अवश्य चाहता था, पर मृत्यु की शान्ति नहीं, बल्कि सरस स्नेहपूर्ण एकान्त जीवन की शान्ति की आवश्यकता उसे थी।

उसने निश्चय किया कि वह कुछ दिन डाली के पास एर्गुशेवो में जाकर बितावेगी।

× × × ×

इधर लेविन किसानों के बीच में रहकर उनकी जीवन-धारा का ऐसा प्रशंसक बन गया था कि किसी किसान की लड़की के साथ विवाह करके शान्तिपूर्ण जीवन बिताने की बात सोचने लगा था। एक दिन वह अपनी बहन के गाँव में गया हुआ था। वहाँ किसानों के नाच-गान के बीच में सूखी घास की एक गञ्जी के ऊपर लेटकर उसने सारी रात बिताई। प्रातःकाल उठकर वह जब किसानों के आदर्श जीवन की काव्यमयी कल्पना में मग्न हो रहा था, तब सहसा उसे एक घोड़ागाड़ी की घंटियाँ बजती हुई सुनाई दीं। कौन आ रहा है, यह जानने का कौतूहल उसे हुआ। जब गाड़ी उसके पास आई, तब उसने देखा कि गाड़ी के ऊपर सामान लदा हुआ है, भीतर एक बुढ़िया ऊँघ रही है और उसके पास बैठी हुई एक सुन्दरी नवयुवती अभी सोकर उठी है। नवयुवती ने ज्यों ही लेविन की ओर मुख फेरा, त्यों ही लेविन का मुख विस्मय और आनन्द से प्रदीप्त हो उठा। वह तत्काल उसे पहचान गया। वे दो सुन्दर, सरस, स्नेहपूर्ण आँखें उसकी चिर-परिचित थीं। उन्हें पहचानने में वह कभी भूल नहीं कर सकता था। वे किटी की आँखें थीं। वह उस रास्ते से होकर एर्गुशेवो जा रही थी। उसे देखते ही किसानों के सुखमय जीवन का सारा स्वप्न लेविन को अत्यन्त तुच्छ और घृणित जान पड़ने लगा। एक किसान लड़की से विवाह करने की कल्पना उसके मन को अरुचि और ग्लानि से जर्जरित करने लगी। गाड़ी शीघ्र गति से उसे छोड़कर आगे बढ़ गई, पर इतनी ही देर में उसके भीतर एक भयङ्कर तूफ़ान मचा गई।

कुछ देर तक स्तब्ध और अन्यमनस्क रहकर अन्त में लेविन ने अपने मन में कहा—"नहीं! यह सरल और शान्त कृषक-जीवन चाहे कैसा ही सुन्दर क्यों न हो, पर वह मेरे लिए नहीं है, क्योंकि मैं जिसे सारी आत्मा से, समस्त प्राणों से चाहता हूँ, वह इस जीवन से कोसों दूर रहती है!"

२१

इस घटना के कुछ समय बाद लेविन सारे यूरोप का भ्रमण करने के लिए निकल पड़ा। प्रधान-प्रधान औद्योगिक शहरों में जाकर वहाँ के बड़े-बड़े कारखानों के सम्बन्ध मे महत्त्वपूर्ण बातों की जानकारी प्राप्त करके वह मास्को वापस चला आया। विदेशों में उसने जो कुछ देखा, उससे उसके औद्योगिक विचारों को विशेष उत्तेजना प्राप्त हुई।

लेविन के मास्को पहुँचने के दो-एक दिन बाद ही आब्लान्सकी उसके होटल में उससे मिलने आया। विदेशों में उसने क्या-क्या देखा, इस सम्बन्ध में कुछ देर तक बातें करके आब्लान्सकी ने उससे पूछा कि क्या अब भी वह पहले की ही तरह निराशावादी है? लेविन ने कहा—"मैं आज-कल रात-दिन मृत्यु के सम्बन्ध में सोचा करता हूँ। कृषि-सुधार के सम्बन्ध में मेरे जो विचार हैं, उन्हें मैं महत्त्वपूर्ण अवश्य समझता हूँ, पर यह बात मेरे मन से एक क्षण के लिए भी नहीं हटना चाहती कि मृत्यु ही जीवन की चरम परिणति है। वास्तव में यदि देखा जाय तो जीवन में रक्खा ही क्या है!"

"अरे भाई, इन सब व्यर्थ की बातों के फेर में न पड़ो! राग-रंग की बात सोचा करो! खाओ, पीओ और मज़ा करो! कुछ भी हो, मैं तुमसे यह अनुरोध करने आया हूँ कि आज संध्या को तुम हमारे ही यहाँ भोजन करना। तुम्हारा भाई काज़्नीशेव और केरेनिन भी आवेंगे।"

लेविन किटी के बारे में पूछना चाहता था कि वह मास्को में ही है या और कहीं गई हुई है। उसने सुना था कि जाड़ों के प्रारम्भ में वह पीटर्सबर्ग गई हुई थी। पर पूछते-पूछते वह रुक गया, और सोचने लगा—"किटी यहाँ हो या और कहीं, इससे मुझे क्या!"

केरेनिन भी किसी काम से मास्को आया हुआ था। आब्लान्सकी और डाली ने एक दिन अचानक उसे रास्ते में जाते हुए देख लिया था। आब्लान्सकी जानता था कि केरेनिन के साथ इधर आना की नहीं पट रही है और इस बात के लिए वह बहुत दुःखित था। केरेनिन भी उसी होटल में ठहरा हुआ था, जिसमें लेविन ठहरा था। जब आब्लान्सकी ने केरेनिन को सांध्य-भोजन के लिए निमन्त्रित किया, पहले तो

उसने किसी प्रकार भी निमंत्रण स्वीकार नहीं करना चाहा; पर आब्लान्सकी के स्नेहपूर्ण हठ और नम्र निवेदन में ऐसा जादू भरा था कि अन्त में उसे स्वीकार करना ही पड़ा।

किटी भी उन दिनों मास्को में ही थी। उसे भी आब्लान्सकी ने निमंत्रित कर रक्खा था। संध्या को एक-एक करके निमंत्रित व्यक्ति आकर आब्लान्सकी के ड्राइंग-रूम में एकत्रित होने लगे। किटी भी पहुँच गई थी। उसे मालूम था कि लेविन आया हुआ है और उसे आब्लान्सकी ने निमंत्रण दे रक्खा है। वह अत्यन्त उत्सुक दृष्टि से दरवाज़े की ओर देखती जाती थी, साथ ही लेविन से मिलने पर उससे बातें करने का साहस भी अपने भीतर बटोरती जाती थी।

और सब लोग आ चुके थे, केवल दो व्यक्ति रह गये थे—एक स्वयं घर का मालिक, दूसरा लेविन। आब्लान्सकी को किसी कारण से देर हो गई थी। उसके न आने से भोज-सभा का रंग जमने नहीं पा रहा था। थोड़ी देर बाद वह आ पहुँचा, और परस्पर अपरिचित व्यक्तियों का परिचय एक-दूसरे से कराके, ऐसा ढंग जमा दिया कि सब लोग बड़े उत्साह के साथ एक-दूसरे से बातें करने लगे।

लेविन सबसे अन्त में आया। दरवाज़े पर जब आब्लान्सकी उसे मिला, तब उसने कहा—"मैं सोचता हूँ कि ठीक समय पर ही आया हूँ?"

"तुम कभी कहीं भी ठीक समय से आते हो, जो आज आते!"

लेविन ने धीरे से पूछा—"कौन-कौन आये हुए हैं?"

"सभी हमारे अपने ही व्यक्ति हैं। किटी भी आई है। चलो, मैं केरेनिन से तुम्हारा परिचय करा दूँ।"

ज्यों ही लेविन ने सुना कि किटी भी वहाँ आई है, त्यों ही उसका हृदय एक ओर असीम आनन्द से उछलने लगा और दूसरी ओर वह भय का अनुभव करने लगा। ड्राइंग-रूम के भीतर प्रवेश करते ही सबसे पहले उसे किटी दिखाई दी। उसके मुख पर आज उसने अभूतपूर्व परिवर्तन पाया। वह बहुत व्याकुल, भीत और लज्जित जान पड़ती थी। पर इस कारण उसके मुख का आकर्षण और अधिक बढ़ गया था। लेविन को देखने पर किटी का हृदय भी हर्ष से पुलकित हो उठा। वह ऐसी गद्गद हो उठी कि उसे अपने को सँभालना कठिन हो गया। डाली बहुत ही ध्यानपूर्वक उसकी ओर देख रही

थी। उसे भय हो रहा था कि किटी कहीं अत्यधिक प्रसन्नता से विह्वल होने के कारण रो न पड़े।

पर किटी ने शीघ्र ही बलपूर्वक अपने को सँभाल लिया। लेविन धीरे से उसके पास आया और नम्रतापूर्वक सिर झुकाकर उसने अपना अभिवादन जताकर उसकी ओर हाथ बढ़ाया। किटी ने अपने काँपते हुए हाथ से उसका हाथ पकड़कर धीरे से हिलाते हुए कहा—"आज कितने दिनों बाद हम दोनों फिर मिले हैं!" उसकी किञ्चित् भीगी हुई आँखें मन्द-मधुर मुसकान के कारण चमक रही थीं।

किटी के केवल उस एक साधारण से वाक्य से लेविन के हृदय का इतने दिनों का अन्धकार पल भर में जैसे किसी मायामंत्र से तिरोहित हो गया। हार्दिक प्रसन्नता का आभास मुख पर झलकाते हुए उसने कहा—"आपने मुझे नहीं देखा, पर मैं बीच में एक बार और आपको देख चुका हूँ।"

अत्यन्त आश्चर्य से किटी ने पूछा—"कब?"

"आप तब स्टेशन से एर्गुशेवो की ओर जा रही थीं। उसी समय आप सोकर उठी थीं, आपके मुख के भाव से ऐसा जान पड़ता था।"

लेविन उससे बातें कर रहा था, साथ ही अपने मन में कह रहा था—"ऐसी विशुद्ध-हृदय, सकरुण-स्वभाव लड़की के प्रति किसी प्रकार के क्रोध या अभिमान का भाव मन में लाना घोर अन्याय है। डाली ठीक ही कहती थी—अब मैं समझ रहा हूँ।"

थोड़ी देर बाद आब्लान्सकी सब अतिथियों को भोजन-गृह में ले गया। लेविन और किटी को उसने जान-बूझकर एक ही टेबिल पर पास-पास बिठाया। भोजन का सारा प्रबन्ध स्वभावतः बहुत उत्तम था, क्योंकि आब्लान्सकी "खाओ, पीओ और मजा करो!" के सिद्धान्त का अनुयायी होने के कारण इन सब विषयों का विशेषज्ञ था।

गरमागरम भोजन के साथ ही भिन्न-भिन्न राजनीतिक तथा सामाजिक विषयों पर गरमागरम बहस भी होती जाती थी। प्रायः सभी निमंत्रित व्यक्ति वाद-विवाद में भाग ले रहे थे—केवल किटी और लेविन को छोड़कर। किटी और लेविन की आत्माओं के बीच एक अपूर्व रहस्यमय और अनिर्वचनीय आनन्दपूर्ण मौन वार्तालाप चल रहा था। दोनों पुलक-प्रकंपित हर्ष से विह्वल होकर प्रेमाकुल दृष्टि से एक दूसरे की ओर देख रहे थे और अपने को इस पार्थिव संसार की रात-दिन की तुच्छ बातों से बहुत ऊपर एक अलौकिक चिदानन्दमय जगत् में अनुभव कर रहे थे।

सब लोग भोजन कर चुके तो स्त्रियाँ उठकर ड्राइंग-रूम में चली गईं, और पुरुष वहीं बैठकर वाद-विवाद करते हुए 'सिगार' पीने लगे। लेविन के मन में यह इच्छा बहुत ही प्रबल होती जा रही थी कि वह भी किटी का अनुसरण करते हुए ड्राइंग-रूम में चला जावे। पर इस विचार से कि इस प्रकार उसका पीछा करने से लोगों की दृष्टि में वह कहीं हास्यास्पद न बन जाय, वह कुछ देर तक पुरुषों के साथ ही ठहरकर वाद-विवाद में दिलचस्पी लेने लगा।

पर किटी के बिना उसका जी उचाट हो गया था, इसलिए अधिक समय तक उससे रहा न गया और वह ड्राइंग-रूम में चला आया। किटी ताश खेलने के एक टेबिल के पास जाकर अकेली बैठ गई थी, और टेबिल के ऊपर बिछे हुए हरे रंग के नये कपड़े पर खड़िया-मिट्टी के एक टुकड़े से कुछ गोलाकार चित्र खींच रही थी। लेविन उसके पास जाकर ससंकोच खड़ा हो गया। किटी की आँखों में एक सरस, स्निग्ध और सुकोमल मुसकान झलक रही थी, जिसे देख-देखकर लेविन आनन्द से उन्मत्त हो रहा था।

अकस्मात् किटी जैसे एक स्वप्न से जाग पड़ी। उसने कहा—"अरे, मैंने तो सारी मेज़ को लिखकर भर दिया है!" यह कहकर वह उठने की तैयारी करने लगी। पर लेविन ने धड़कते हुए कलेजे से कहा—"ज़रा रुक जाइए!" यह कहकर वह किटी के पास बैठ गया और बोला—"मैं बहुत दिनों से आपसे एक बात कहने की इच्छा रखता था!"

"कहिए, क्या बात है!"

"यह देखिए!" यह कहकर लेविन ने खड़िया-मिट्टी उठाकर मेज़ पर ये अक्षर लिखे—आ, ज, क, था, ऐ, न, हो, स, तो, व, बा, के, त, के, लि, थी, या, स, के, लि? इन प्राथमिक अक्षरों से बननेवाला जो पूरा वाक्य लेविन के मन में था वह इस प्रकार था—"आपने जब कहा था कि ऐसा नहीं हो सकता, तो वह बात केवल तब के लिए थी, या सदा के लिए?"

किटी के लिए केवल इन अक्षरों से असली बात समझ लेना एक प्रकार से असम्भव-सा ही था; पर लेविन उसकी ओर ऐसी दृष्टि से देख रहा था जैसे उसके जीवन-मरण की सारी समस्या केवल इस बात पर निर्भर करती हो कि किटी उस वाक्य का अर्थ ठीक-ठीक समझ पाती है या नहीं।

किटी सिर पर हाथ रखकर काफ़ी देर तक अत्यन्त मनोनिवेश-पूर्वक उस रहस्यपूर्ण वाक्य का आशय समझने की चेष्टा करती रही।

अन्त में उसने कहा--"मैं समझ गई!" लेविन ने अन्तिम 'स' का अर्थ पूछा। किटी ने कहा--"इसका अर्थ है 'सदा'। पर यह बात सच नहीं है। इसके बाद उसने खड़िया-मिट्टी अपने हाथ में लेकर लिखा--"मे, य, प्रा, आ, पि, बा, भू, जा।" इससे उसका यह आशय था--"मेरी यह प्रार्थना है कि आप पिछली बातों को भूल जावें।" लेविन समझ गया। इसके बाद उसने इस वाक्य के प्रत्येक शब्द के प्राथमिक अक्षर लिखे--"मैं भूल चुका हूँ। मेरे हृदय ने कभी एक दिन के लिए भी आपसे प्रेम करना नहीं छोड़ा है।"

किटी ने प्रेमपूर्ण मुसकान से उसकी ओर देखकर कहा--"मैं जानती हूँ।"

इसके बाद दोनों बहुत देर तक इसी प्रकार प्रश्न, उत्तर और प्रत्युत्तर लिखते रहे। परिणाम-स्वरूप दोनों अत्यन्त प्रसन्न और प्रेम-पुलकित हो उठे। किटी ने स्वीकार किया कि वह उसे हृदय से चाहती है, और यह वचन दिया कि वह उसके प्रेम-प्रस्ताव की चर्चा अपने माता-पिता के आगे करेगी, तब उसका अन्तिम निर्णय होगा। लेविन ने कहा कि वह दूसरे दिन प्रातःकाल उसके घर आकर उससे मिलेगा।

उस दिन आनन्दातिरेक के कारण लेविन को रात भर नींद नहीं आई। दूसरे दिन वह शराबी की तरह झूमते हुए किटी के दरवाज़े पर पहुँचा। किटी की गवर्नेस ने उसे देखा और उसने अत्यन्त स्नेहपूर्वक भीतर एक एकान्त कमरे में ले जाकर उसे बैठा दिया और व स्वयं किटी को सूचित करने चली गई।

किटी स्वयं ठीक उसी कारण से रात भर नहीं सो पाई थी। उसने अपने मा-बाप को सूचित कर दिया था। वे लोग लेविन के प्रेम-प्रस्ताव से बहुत प्रसन्न थे। किटी निःशब्द पगों से उस कमरे में आई जहाँ लेविन उसकी प्रतीक्षा में व्याकुल था। आते ही उसने अपनी दो लता-कोमल बाँहें धीरे से लेविन के गले में डाल दीं।

२२

भोज के अवसर पर डाली को केरेनिन के साथ आना के सम्बन्ध में बात करने का सुयोग प्राप्त हुआ था। डाली ने जब से सुना था कि अपने पति के साथ आना का मनमुटाव हो गया है, तब से वह बहुत बेचैन थी। वह आना को बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखती थी और उसे इस बात पर किसी प्रकार भी विश्वास नहीं होता था कि आना कोई पाप, दुष्कर्म या किसी प्रकार का अनुचित कार्य कर सकती है। डाली ने केरेनिन से बातें करने पर जब यह मालूम किया कि वह आना से भयङ्कर रूप से असन्तुष्ट है और उसे तलाक़ देने की बात सोच रहा है, तब वह बहुत घबराई। उसने कातर प्रार्थना के स्वर में कहा--"अलेक्से अलेग्ज़ेण्ड्रोविच, आप एक धर्मप्राण ईसाई हैं; भगवान् के लिए ऐसा न कीजिए, नहीं तो वह बेचारी कहीं की न रहेगी!"

केरेनिन ने उत्तर दिया--"मैंने कोई भी बात उसे रास्ते पर लाने में उठा नहीं रक्खी, दार्या अलेग्ज़ेण्ड्रोवना! मैं बराबर उसकी ज़्यादतियों के प्रति अवज्ञा का भाव दिखाता रहा। मैं किसी हालत में भी नहीं चाहता था कि उसे तलाक़ देकर मैं आठ वर्ष के विवाहित जीवन को मिट्टी में मिला दूँ। मैंने उससे यहाँ तक कहा कि वह जैसा जी चाहे करे, पर बाह्य शिष्टाचार और सामाजिकता का ध्यान रक्खे। उसने मेरे इतने से अनुरोध को भी घृणापूर्वक ठुकरा दिया! ऐसी विकृत-स्वभाव, चरित्र-भ्रष्ट और निर्लज्ज स्त्री के साथ मैं कब तक समझौता किये रहूँ?" डाली अत्यन्त दुःखित होकर म्लान दृष्टि से केरेनिन की ओर देखकर बार-बार केवल यही कहती रही कि आना निर्दोष है और उसके प्रति अन्याय नहीं होना चाहिए। पर केरेनिन के हृदय पर उसकी इन सब बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

वास्तव में केरेनिन ने आना को व्रान्सकी से प्रेम करने की पूरी सुविधा दे रक्खी थी, पर केवल एक शर्त उसने उसके आगे रक्खी थी। वह यह कि व्रान्सकी उसके घर पर आना से मिलने न आये, ताकि लोगों को किसी प्रकार का सन्देह करने का अवसर न मिले। वह कट्टर ईसाई होने के कारण तलाक़ को धर्म-विरुद्ध समझता था। इसके अतिरिक्त जो बात विशेष महत्त्वपूर्ण थी, वह यह थी कि वह

आठ वर्ष से बँधे हुए पारिवारिक जीवन के नियम में किसी प्रकार का उलट-फेर होने से घबराता था। इसलिए चाहे भीतर से आना के साथ उसका पति-पत्नी का सम्बन्ध न रहे, पर बाहरी सम्बन्ध में किसी प्रकार का परिवर्तन वह नहीं चाहता था।

इधर आना का यह हाल था कि वह भयङ्कर अन्तर्द्वन्द्व के कारण पिसी जा रही थी। जिस पति के प्रति उसके मन में केवल विराग ही नहीं, घृणा उत्पन्न हो गई थी, जिससे उसका किसी प्रकार का भीतरी सम्बन्ध नहीं रह गया था, उसके साथ रहकर उसके दिये हुए रुपयों से अपना निर्वाह करना और झूठमूठ सामाजिकता की रक्षा का ध्यान रखना उसे अत्यन्त नीचतापूर्ण और अपमानजनक मालूम होता था। साथ ही उसके मन में धार्मिकता का जो संस्कार अवशिष्ट था, वह पति को छोड़ने से उसे रोक रहा था। इसके अतिरिक्त एक और विकट समस्या उसके सामने थी--वह थी उसके प्यारे लड़के सेरेज़ा की समस्या। वह जानती थी कि जब वह अपने पति का घर छोड़ देगी, तब निश्चय ही केरेनिन सेरेज़ा को अपने पास रख लेगा--इसलिए नहीं कि वह सेरेज़ा से स्नेह करता है बल्कि इसलिए कि उसे रखने से उसकी प्रतिहिंसात्मक भावना को कुछ सन्तोष प्राप्त होगा।

कुछ दिनों तक वह केरेनिन की बात मानकर चली। वह व्रान्सकी से बाहर मिलती रहती थी, पर व्रान्सकी उससे मिलने के लिए उसके घर पर नहीं आता था। केरेनिन इतना ही चाहता था। पर एक दिन आना बहुत घबराई हुई-सी थी और उसका जी बहुत उदास था, इसलिए उसने व्रान्सकी को एक पत्र लिखकर अपने घर बुला लिया। केरेनिन ने उसे देख लिया। इस बात से वह अत्यन्त उत्तेजित हो उठा। उसने तलाक़ देने का निश्चय कर लिया। सेरेज़ा को उसने अपनी बहन के यहाँ भेज दिया और आना को यह सूचित किया कि वह कुछ दिनों के लिए मास्को जा रहा है और मास्को से लौटने पर वह क़ानूनी कार्रवाई करेगा। आना ने बार-बार कातर प्रार्थना के स्वर में कहा--"सेरेज़ा को मुझसे न छुड़ाओ, उसके बिना मैं नहीं रह सकती।" पर केरेनिन उसकी इस प्रार्थना से तनिक भी नहीं पिघला था, और वह आना के प्रति भयंकर असन्तोष का भाव मन में लेकर मास्को चला गया था।

२३

आब्लान्सकी की डिनर-पार्टी से लौटकर जब केरेनिन अपने होटल में पहुँचा, तब उसके बैरा ने उसे दो तार दिये। पहला तार उसके आफ़िस से सम्बन्ध रखता था। पर दूसरा तार खोलकर जब उसने पढ़ा, तब वह चकित रह गया। उस तार के नीचे आना का नाम था। उसमें लिखा था--"मैं मर रही हूँ। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम शीघ्र वापस चले आओ। मरने के पहले मैं तुम्हारी क्षमा पाना चाहती हूँ।" केरेनिन को उस तार की सचाई पर विश्वास नहीं होता था। वह अपने मन में कहने लगा--"यह एक अच्छा ढकोसला है!"

फिर भी उसने उसी दम पीटर्सबर्ग को लौट चलने का निश्चय किया। कौन कह सकता है, कहीं उस भ्रष्टा नारी के हृदय में सचमुच पश्चात्ताप का भाव उत्पन्न हो गया हो! दूसरे दिन जब वह घर पहुंचा, तब पहले चौकीदार को देखते ही उससे उसने पूछा--"तुम्हारी मालकिन कैसी है?"

"कल उन्होंने एक लड़की को जन्म दिया है। पर उनकी दशा चिन्ताजनक है।"

"भीतर कौन-कौन हैं?"

"डाक्टर, दाई और कौन्ट व्रान्सकी।"

केरेनिन भीतर गया। ड्राइंग-रूम में उसे दाई मिली। दाई ने कहा--"ईश्वर को धन्यवाद है कि आप आगये। आपकी पत्नी सब समय केवल आपके ही सम्बन्ध में बड़बड़ाती जाती हैं।"

भीतर जाकर केरेनिन ने देखा कि व्रान्सकी एक कमरे में बैठा हुआ अपना मुँह दोनों हाथों से ढककर रो रहा है। भीतर डाक्टर को किसी बात से चिल्लाते सुनकर जब उसने सिर ऊपर को उठाया, तब केरेनिन को देखकर वह चौंक पड़ा। वह उठा और फिर सिर नीचा करके बैठ गया। पर कुछ देर बाद फिर उठ खड़ा हुआ और बोला--"वह मर रही है। डाक्टर लोग उसके जीने की कोई सम्भावना नहीं देखते। मैं इस समय पूर्णरूप से आपके वश में हूँ। मैं आपसे प्रार्थना

करता हूँ कि मुझे उसकी अन्तिम घड़ी तक यहीं रहने की आज्ञा दे दीजिए !"

व्रान्सकी की आँखों में आँसू देखकर केरेनिन अपने भीतर बड़ी भयङ्कर बेचैनी का अनुभव कर रहा था। उससे कोई उत्तर देते न बन पड़ा। वह बिना कुछ कहे आना के कमरे में चला गया। वह पलँग पर पड़ी थी और तीव्र ज्वर के कारण अत्यन्त उत्तेजित होकर बड़बड़ा रही थी—"पर अलेक्से—मेरा मतलब अलेक्से अलेग्ज़ेण्ड्रोविच से है—यह कैसे आश्चर्य की बात है कि दोनों का एक ही नाम है—वह क्यों नहीं आता ! वह बहुत उदार-हृदय है, और निश्चय ही वह मुझे क्षमा कर देगा, मुझे इस बात का पूरा भरोसा है ! ओ भगवान् ! इस बच्ची को उठाकर ले जाओ ! इसे देखकर वह नाराज़ हो जायगा !"

दाई ने कहा—"आना आर्कैडेवना, अलेक्से अलेग्ज़ेण्ड्रोविच आ पहुँचे हैं।"

पर आना उसकी बात पर कुछ ध्यान न देकर अपने पति के उदार हृदय और सदय स्वभाव की प्रशंसा में अनर्गल बोलती चली गई। केरेनिन अपनी सन्निपात-ग्रस्त पत्नी की बातें सुनकर अत्यन्त व्याकुल हो रहा था। अन्त में धैर्य्य जाता रहा। वह घुटने टेककर, आना के बायें हाथ पर अपना सिर रखकर सिसक-सिसक कर रोने लगा। आना उसे देखकर उसके गञ्जे सिर पर स्नेहपूर्वक हाथ रखकर बोल उठी—"यह देखो, मैं कहती न थी ! वह आ गया है !" इसके बाद उसने बग़लवाले कमरे की ओर मुँह करके व्रान्सकी को लक्ष्य करते हुए कहा—"वह क्यों नहीं आता ! आओ, चले आओ ! तुम भी मुझे अपना हाथ दो !"

व्रान्सकी पूर्ववत् रोता हुआ आना के पलँग के पास आया और आना को देखते ही उसने फिर दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँप लिया। आना बोली—"दुत ! अपना मुँह खोलो ! उससे डरते हो ? तुम उसे नहीं जानते, वह वास्तव में महात्मा है। अलेक्से अलेग्ज़ेण्ड्रोविच, उससे हाथ मिलाओ और उसे क्षमा कर दो !"

केरेनिन ने व्रान्सकी के दोनों हाथों को उसके मुँह पर से हटाया, और स्वयं रोते हुए उससे हाथ मिलाया। व्रान्सकी का मुख लज्जा, ग्लानि और दुःख से अत्यन्त म्लान और विकृत हो उठा था।

आना तीव्र स्वर में बोल उठी—"भगवान् को धन्यवाद है ! मरने

के पहले मैंने दोनों में मेल देख लिया है। अब मैं शान्तिपूर्वक मर सकूँगी। उफ़, डाक्टर, बड़ा कष्ट हो रहा है! मुझे मार्फ़िया दो!"

आना उस दिन दिन भर और रात भर ज्वर से भयङ्कर रूप से पीड़ित और सन्निपात-ग्रस्त रही। व्रान्सकी रात में अपने घर चला गया था, पर सुबह होते ही वह फिर केरेनिन के यहाँ आ पहुँचा। केरेनिन उससे आना के बग़लवाले कमरे में मिला। उसने भर्राई हुई आवाज़ में व्रान्सकी से कहा—"आप यहीं रहिए, वह किसी भी समय आपको बुला सकती है।"

तीसरे दिन आना के लक्षण कुछ अच्छे दिखाई दिये। उस दिन व्रान्सकी जब उसके कमरे के पास एक दूसरे कमरे में बैठा हुआ था, तो केरेनिन भी उसके पास आकर बैठ गया, और उसने भीतर से किवाड़ बन्द कर दिये। व्रान्सकी ने समझा कि वह उसे अपने अपमान का बदला लेने की सूचना देने आया है। उसने कहा—"अलेक्से अलेग्ज़ेण्ड्रोविच, मैं इस समय इतना दुःखी हूँ कि कुछ सोचने-समझने की शक्ति मुझमें नहीं रह गई है। मैं जानता हूँ कि आप भी दुःखी हैं, पर मेरी दशा आपसे भी भयङ्कर है। इसलिए मैं वर्त्तमान विषय में कुछ कहने या सुनने में असमर्थ हूँ।" यह कहकर वह उठने लगा था, पर केरेनिन ने उसे रोका और कहा—"मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरी बात ध्यान से सुन लीजिए। मेरे मन में इस विषय में जो भावना उत्पन्न हुई है उससे आपको परिचित करा देना मैं आवश्यक समझता हूँ। मेरा हृदय इस समय क्षमा की भावना से लबालब भरा हुआ है। उसमें किसी के प्रति बैर या विद्वेष का लेश भी वर्त्तमान नहीं रहा है। आप मुझे कीचड़ में ढकेलकर कुचल सकते हैं, मुझे सारे संसार की दृष्टि में हास्यास्पद बना सकते हैं; पर फिर भी मैं अब अपनी पत्नी को कदापि नहीं त्यागूँगा, और आपसे तिरस्कार के रूप में कभी एक शब्द भी नहीं कहूँगा।" यह कहकर वह आँखों में आँसू भरकर उठ खड़ा हुआ। व्रान्सकी स्तब्ध और विभ्रान्त होकर देखता रह गया। वह ठीक तरह से केरेनिन की बात का महत्त्व नहीं समझ पाया, पर फिर भी उसे ऐसा लगा कि वास्तव में केरेनिन एक अत्यन्त उच्च आदर्श से प्रेरित हुआ है, और उसकी तुलना में वह अत्यन्त हीन और तुच्छ हो गया है।

२४

आना मरी नहीं। उसका ज्वर शान्त हो गया और धीरे-धीरे उसका स्वास्थ्य भी सुधरता चला गया। स्वास्थ्य की उन्नति के साथ ही साथ आना अपने हृदय में यह अनुभव करने लगी कि ज्वर की चरम अवस्था में मृत्यु को सन्निकट जानकर उसके भीतर भावुकता का जो ज्वार उमड़ उठा था; जिसके प्रवाह में बहकर उसने व्रान्सकी के प्रति अपने प्रेम के लिए हार्दिक पश्चात्ताप प्रकट करके अपने पति से अपनी भूल के लिए आन्तरिक क्षमा माँगी थी; वह धीरे-धीरे भाटा के रूप में परिणत होता चला जा रहा था, और अपने पति के प्रति उसके मन में फिर से घृणा उमड़ने लगी था। अपनी उस पुनर्जागरित घृणा को दबाने की चेष्टा बार-बार करने पर भी वह सफल नहीं हो पाती थी। वह पति से डरने लगी थी, और उससे आँख बचाती रहती थी।

केरेनिन को अपनी स्त्री का वह भाव समझने में देर न लगी। वह अपनी इस मूर्खता पर पछताने लगा कि भाव के आवेश में आकर उसने अपनी स्त्री की बातों पर विश्वास कर लिया। फिर भी वह अपना कर्तव्य पूरा करता चला जाता था। आना की नव-जात लड़की, जिसका नाम भी आना ही रक्खा गया था, बीमार पड़ गई थी। यह जानते हुए भी कि वह लड़की उसकी नहीं है, केरेनिन ने उसकी चिकित्सा का पूरा प्रबन्ध कर दिया; इसके अतिरिक्त आना की बाहरी सुविधाओं और आवश्यकताओं का वह पूरा ध्यान रखने लगा। वह जानता था कि समाज के लोग उसकी इस 'उदार धार्मिकता' और 'महात्मापन' पर हँस रहे हैं, फिर भी वह अपने उस नियम-क्रम में कोई परिवर्तन नहीं आने देता था। उसकी समझ में ही नहीं आता था कि इसके सिवा और क्या कर्त्तव्य उसका हो सकता है।

इधर व्रान्सकी का हाल बुरा था। केरेनिन की क्षमाशीलता और उदार आदर्श की महत्ता ने जब उसे अत्यन्त संकुचित और लज्जित कर दिया और उसके आत्माभिमान को कुचल दिया तो उसे केवल उसी एक बात का दुःख नहीं हुआ। सबसे बड़ा दुःख

उसे इस बात का हुआ कि ज्यों ही वह आना की आत्मा की गहराई से परिचित होकर उसके साथ सच्चे और स्थायी प्रेम के बन्धन में बँधने की आशा करने लगा था, त्यों ही वह पति से क्षमा माँगकर उससे सदा के लिए अलग होने का भाव दिखाने लगी। दुःख, लज्जा और ग्लानि के कारण उसे अपना सारा जीवन भार-स्वरूप जान पड़ने लगा। सैनिक जीवन में अपनी योग्यता-द्वारा विशिष्ट पद, यश और कीर्ति प्राप्त करने की महत्त्वाकांक्षा उसे तुच्छ जान पड़ने लगी। वह समझ गया कि आना के बिना उसका जीना व्यर्थ है। यह सोचकर उसने पिस्तौल से आत्महत्या करने का प्रयत्न किया। उसे चोट आई, पर वह मरा नहीं। घाव अच्छा हो गया और वह बच गया। अपनी शोचनीय मानसिक तथा शारीरिक स्थिति से जब वह कुछ सँभला, तब उसने पीटर्सबर्ग तथा मास्को के परिचित समाज से बहुत दूर जाकर रहने का निश्चय कर लिया। ताशकन्द में एक सैनिक पद स्वीकार करके वह वहाँ जाने की तैयारी करने लगा। पर इसके पहले वह एक बार आना से मिल लेना चाहता था। इधर केरेनिन नहीं चाहता था कि जिस व्यक्ति के कारण उसके पारिवारिक जीवन की सारी शान्ति और शृंखला नष्ट हो गई है, वह फिर उसके घर में आकर एक नई अशान्ति उत्पन्न करे। आना को भी वह उससे मिलने की आज्ञा नहीं दे रहा था।

आना को बेट्सी से यह सूचना मिल चुकी थी कि व्रान्सकी ने उसके कारण आत्महत्या करने की चेष्टा की थी और अब वह ताशकन्द जाने की तैयारी कर रहा है। वह बहुत दिनों से उससे मिलने के लिए यों ही अधीर हो रही थी, तिस पर जब उसने पूर्वोक्त संवाद सुना तब वह और अधिक व्याकुल हो उठी। पर इस सम्बन्ध में अपने पति से अनुरोध करना वह अपने आत्मसम्मान के विरुद्ध समझने लगी थी। उसकी तरफ़ से बेट्सी ने केरेनिन से प्रार्थना की कि वह व्रान्सकी को आना से मिलने की आज्ञा देने की कृपा करे। पर केरेनिन ने उसकी बात टाल दी।

इसी बीच आब्लान्सकी पीटर्सबर्ग आया और आना से मिला। वह अपनी बहन की परिस्थिति को भली भाँति समझे हुए था, और उससे पूर्ण सहानुभूति रखता था। आब्लान्सकी को देखते ही आना बिल्कुल होकर रो पड़ी। वह बिलख-बिलखकर कहने लगी—"स्टीवा, अब मृत्यु को छोड़कर मेरे लिए और कोई चारा नहीं है!" आब्लान्सकी ने उसे दिलासा देते हुए कहा—"घबराओ नहीं, आना! भगवान्

ने चाहा तो सब ठीक हो जायगा। मैं तुम्हारी मानसिक दशा का अनुमान भली भाँति कर सकता हूँ। तुम्हारे जीवन में सबसे बड़ी भूल यह हुई कि ऐसे व्यक्ति से तुम्हारा विवाह हुआ जो तुमसे बीस वर्ष बड़ा है। प्रारम्भ से ही प्रेम का कोई सम्बन्ध इस विवाह से नहीं रहा। परिणाम वही हुआ जो होना चाहिए था। तुम्हारा इसमें तनिक भी दोष नहीं है।"

आना की बातों से आब्लान्सकी अच्छी तरह समझ गया कि वह अब अपने पति के साथ किसी हालत में भी रहने को तैयार नहीं है। उसने केरेनिन के पास जाकर बड़े ढंग से भूमिका बाँधकर यह प्रस्ताव किया कि वह आना को तलाक़ देकर स्वयं भी शान्ति से रहे और उसे भी जञ्जाल से मुक्त करे। केरेनिन इस प्रस्ताव से अत्यन्त उत्तेजित और विचलित हो उठा। आब्लान्सकी उसके हृदय की उदारता की प्रशंसा पर प्रशंसा करता चला गया। अन्त में केरेनिन भाव के आवेश में आकर बोल उठा—"अच्छी बात है! यदि वह ऐसा ही चाहती है, तो मैं ऐसा ही करूँगा! मैं अपने ऊपर सारा दोष लेकर उसे तलाक़ की सारी सुविधायें दे दूँगा!" आब्लान्सकी इस बात से अत्यन्त सन्तुष्ट होकर वहाँ से चला गया।

इधर बेट्सी ने व्रान्सकी को यह सूचित किया कि केरेनिन तलाक़ के लिए राज़ी हो गया है और साथ ही यह भी सुझाया कि वह अब बिना किसी हिचक के आना से मिल सकता है। उसकी बात मानकर व्रान्सकी आना से मिलने गया। उस समय केरेनिन घर पर नहीं था। आना उसे देखते ही अत्यन्त प्रेमाकुल होकर उससे लिपट गई और बोली—"मैं अब अच्छी तरह समझ गई हूँ कि तुम्हारे बिना मेरा जीवन अर्थहीन है। तुमने मेरे सम्पूर्ण हृदय, सारी आत्मा पर अधिकार जमा लिया है!"

"मैं जानता था! मैं जानता था कि तुम्हारे बिना मेरा जीवन व्यर्थ है और मेरे बिना तुम्हारा।"

आना के मुख पर भय और व्याकुलता की एक घनी छाया घिर आई थी। उसने कहा—"स्टीवा कहता है कि 'वह' (केरेनिन) किसी भी शर्त पर राज़ी हो जायगा। पर मैं उसकी 'उदारता' से घृणा करने लगी हूँ, और उसका अहसान अब किसी भी रूप में अपने ऊपर लेने को तैयार नहीं हूँ। केवल एक बात की चिन्ता मुझे है। सेरेज़ा के सम्बन्ध में वह क्या निश्चय करेगा, यह मैं नहीं जानती!"

व्रान्सकी ने कहा—"आना, इन सब बातों की चिन्ता मत करो, हम दोनों के लिए संसार में केवल एक बात महत्त्वपूर्ण है; वह यह कि हम और तुम एक-दूसरे को तन से, मन से, आत्मा से चाहते हैं। शेष सब बातें व्यर्थ हैं। मैंने निश्चय किया है कि हम दोनों कुछ समय के लिए इटली जाकर रहें। वहाँ तुम्हारा स्वास्थ्य भी अच्छा हो जायगा, और चित्त भी शान्ति पावेगा।"

ताशकन्द में व्रान्सकी को जो एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त हो रहा था, उसे उसने आना के प्रेम के खातिर अस्वीकार कर दिया; और एक महीने बाद वह आना को साथ लेकर इटली चला गया। सेरेज़ा अपनी मा से बिछुड़कर अपने पिता के साथ रहने लगा।

२५

किटी की मा व्रान्सकी पर विश्वास स्थापित करने के कारण अपने को किटी के प्रति भयंकर अपराधिनी समझने लगी थी। वह सोचती थी कि यदि वह व्रान्सकी के प्रति पक्षपातपूर्ण न होती, उसके प्रति स्नेह का भाव प्रदर्शित करके, विशेष आदर के साथ अपने घर में उसका स्वागत करने के लिए इच्छुक न होती, तो निश्चय ही किटी भी उसके प्रति विशेष आकर्षित न होती। लेविन के प्रति अवज्ञा का भाव व्यक्त करने के कारण भी उसके मन में बड़ी ग्लानि हो रही थी। व्रान्सकी पर भरोसा करके उसने अपने पति को, जो प्रारम्भ से ही लेविन का पक्षपाती था, असन्तुष्ट किया और अपनी प्यारी बेटी का जीवन नष्ट किया, यह सोच-सोचकर वह मन ही मन घोर पश्चात्ताप और दुःख से पीड़ित हो रही थी। इसलिए जब आब्लान्सकी के यहाँ से भोज से लौटने पर उसने किटी से सुना कि लेविन ने उससे फिर एक बार विवाह का प्रस्ताव किया है और यह भी जाना कि किटी उस प्रस्ताव का हृदय से स्वागत करती है, तब बूढ़ी प्रिन्सेस के हर्ष की सीमा न रही।

दूसरे दिन लेविन जब किटी से मिल चुका, तब थोड़ी देर बाद किटी के माता-पिता, दोनों उन लोगों के पास पहुँचे। किटी की मा ने अत्यन्त गद्‌गद स्वर से कहा—"मुझे बहुत प्रसन्नता हुई! बहुत!" यह कहकर वह मारे हर्ष के रो पड़ी। इसके बाद उसने लेविन को स्नेहपूर्वक गले से लगाकर उसे आशीर्वाद दिया।

बूढ़े प्रिन्स, किटी के पिता ने कहा—"तुम लोगों ने बड़ी जल्दी समझौता कर लिया!" यह कहकर वह व्यंग्यपूर्वक मुसकराने की चेष्टा करने लगा, पर उसका हर्ष-गद्‌गद हृदय अपने को सँभाल न सका, उसकी आँखें डबडबा आईं। उसने भर्राई हुई आवाज़ में लेविन से कहा—"मैं तुम्हें प्रारम्भ से ही चाहता रहा हूँ!" यह कहकर उसने अत्यन्त प्रेमपूर्वक लेविन का हाथ पकड़ लिया। इसके बाद उसने किटी की पीठ पर स्नेहपूर्वक हाथ फेरकर उसे आशीर्वाद दिया।

इसके बाद विवाह की चर्चा चली। बूढ़ी प्रिन्सेस ने अपने पति से कहा—"सगाई का दिन निश्चित हो जाना चाहिए और यह भी तय हो जाना चाहिए कि विवाह कब होगा!"

बूढ़े प्रिन्स ने लेविन की ओर संकेत करके कहा—"जो व्यक्ति प्रधानरूप से सम्बन्धित है, उसी से यह प्रश्न किया जाना चाहिए।"

लेविन बोल उठा—"यदि आप लोग मुझसे पूछते हैं, तो मेरी राय यह है कि सगाई आज ही हो जाय और विवाह कल!"

"कैसी विचित्र बात करते हो! विवाह के पहले कितना आयोजन करना पड़ता है, इसकी भी कुछ खबर है!"

लेविन ने कहा—"मुझे और किसी बात की खबर नहीं है, मैं इतना प्रसन्न हूँ कि अब विवाह में एक दिन की भी देर मुझे सह्य नहीं होगी!"

अन्त में यह तय हुआ कि इस सम्बन्ध में यथा-सम्भव शीघ्रता की जायगी। पर बहुत शीघ्रता करने पर भी आयोजन में प्रायः पाँच सप्ताह लग ही गये। लेविन के उत्साह का अन्त नहीं था। अपनी जिस कामना को वह एक स्वर्गीय स्वप्न समझता था और जिसकी चरितार्थता की आशा वह एकदम छोड़ चुका था, वह जब इतने सुन्दर रूप से सफल होने को आया, तब वह वास्तव में अपने को सप्तम स्वर्ग के निकट पहुँचा हुआ समझने लगा।

विवाह का विराट् आयोजन किया गया था और मास्को तथा पीटर्सबर्ग के सभी प्रतिष्ठित तथा संभ्रान्त व्यक्ति उसमें सम्मिलित होने के लिए निमंत्रित किये गये थे। गिर्जे में जब प्रधान पादड़ी दोनों वर-वधू के जीवन को एकरूप में मिलाने का मंत्र पढ़ रहा था, तब लेविन के हृदय में एक अव्यक्त आध्यात्मिक तरंग किटी के प्रति उसके प्रेमभाव के साथ मिलकर उसे एक अपूर्व चैतन्य, एक अनिर्वचनीय प्रेरणा प्रदान कर रही थी। विवाह के सब कर्मों में भाग लेते हुए वह ऐसा अनुभव कर रहा था, जैसे वे सब बातें स्वप्न में हो रही हैं। आनन्द, उल्लास, भावोन्माद और आत्म-विस्मृति से वह विभोर हो रहा था। किटी भी अत्यन्त पुलकाकुल और हर्षित हो रही थी। पर वह लेविन की तरह भावोन्माद-ग्रस्त होकर आत्म-विस्मृत नहीं हो रही थी। वह भी स्वप्न देख रही थी। पर उसका स्वप्न अपने भावी विवाहित जीवन की आदर्शपूर्ण वास्तविकता से सम्बन्ध रखता था।

विवाह हो जाने के बाद लेविन ने यह प्रस्ताव किया कि 'हनीमून' रूस के बाहर भ्रमण करके मनाया जाय। पर किटी ने देहात में—

लेविन के घर जाकर 'सुहाग' मनाने की इच्छा प्रकट की। लेविन को विवश होकर उसकी यह बात माननी पड़ी।

अपनी नव-विवाहिता सुन्दरी पत्नी को लेकर जब लेविन घर पहुँचा, तब उसकी बूढ़ी दाई आगाथा मिखेलोवना से लेकर छोटे-छोटे नौकर-चाकर तक सभी प्रसन्नता के कारण परम पुलकित हो उठे। आगाथा मिखेलोवना लेविन की मा के स्थान में थी और घर का सारा कारोबार उसी के हाथ में था। उसे तो यही आशा नहीं थी कि लेविन विवाह करेगा। इसलिए जब उसने देखा कि वह केवल विवाह करके ही नहीं आया, बल्कि उसकी स्त्री बहुत सुन्दरी और मधुर स्वभाव की है, तब वह स्नेह-हर्ष से गद्गद हो उठी।

किटी ने अपने नये घर में पाँव रखते ही घर का सारा कारोबार धीरे-धीरे अपने हाथों में ले लिया। लेविन ने सोचा था कि वह किटी को साथ लेकर एक ऐसे निराले काव्यलोक में विचरण करेगा, जहाँ भोजन-वस्त्र और क्षुधा-तृष्णा से कोई वास्ता उन दोनों में से किसी को नहीं रहेगा। उसे यह बात नहीं मालूम थी कि स्त्रियों का बाह्य सौन्दर्य्य और बाह्य प्रकृति भले ही काव्यात्मक मालूम पड़े, पर उनकी अन्तःप्रकृति वास्तविकता को ही सब समय जकड़े रहती है, और यदि ऐसा न हो, तो उनके स्त्रीत्व का और मातृत्व का कोई मूल्य ही न रह जाय। किटी जब रसोई-घर का प्रबन्ध करने, कमरों को सजाने, नौकर-चाकरों को अलग-अलग काम सौंपने, तथा इसी तरह के घर-गृहस्थी से सम्बन्धित दूसरे कामों में व्यस्त रहती, तब लेविन मन ही मन बहुत कुढ़ता। पर साथ ही यह देखकर उसकी श्रद्धा किटी के प्रति और अधिक बढ़ने लगी कि वह गृहस्थ-जीवन से सम्बन्ध रखनेवाले सभी विषयों में काफ़ी दक्षता रखती है।

किटी के स्वभाव की इस नई विशेषता से परिचित होने पर लेविन की कोरी काव्य-कल्पना को प्रथम गहरा धक्का पहुँचा। दूसरा धक्का तब पहुँचा, जब उसने देखा कि उन दोनों के बीच में छोटी-छोटी बातों के लिए झगड़ा होने लगा है। किटी के साथ वह कभी किसी कारण से झगड़ सकता है, या किटी उससे उलझ सकती है, इस बात की सम्भावना विवाह के पहले कभी स्वप्न में उसे नहीं दिखाई दी थी। पर अब उसने देखा कि जब कभी किसी कारण से समय पर वह घर वापस नहीं आ पाता, तब किटी उससे रुष्ट हो जाती है और मुँह फुला लेती है। जब वह उसे समझाते हुए कहता—"किटी, यह तुम्हारा अन्याय है!" तो वह और अधिक बिगड़ जाती और एक-आध

खरी-खोटी बात सुनाकर रोने लगती। इससे लेविन का क्रोध शान्त न होता, पर वह बलपूर्वक उसे पी जाने की चेष्टा करता। कुछ देर तक कहा-सुनी होने के बाद फिर उनमें पहले से भी अधिक मेल हो जाता और दोनों प्रेमपूर्वक एक-दूसरे के गले मिलते। इस प्रकार की घटनाओं से उनके पारस्परिक प्रेम-सम्बन्ध में कोई अन्तर नहीं आया, बल्कि उसकी भित्ति और भी दृढ़ हो गई। लेविन की कोरी भावुकता हट गई और उसे जीवन की वास्तविकता का अनुभव होने लगा।

२६

व्रान्सकी और आना कुछ समय तक इटली के बड़े-बड़े शहरों में घूमने के बाद एक छोटे शहर के एकान्त और सुखद वातावरण में आनन्द और प्रेमपूर्वक रहने लगे। आना का स्वास्थ्य इटालियन जलवायु की विशेषता और व्रान्सकी के प्रेम की परिपूर्णता के कारण अत्यन्त शीघ्र गति से सुधरने लगा। उसके उन्माद, उल्लास और निर्द्वन्द्वता की सीमा नहीं थी। वह अपनी सभी चिन्ताओं को एक प्रकार से भूल-सी गई थी। बीमारी के बाद अपने पति से पुनर्मिलन, व्रान्सकी से सदा के लिए बिछुड़ने की सम्भावना, व्रान्सकी की आत्महत्या की चेष्टा, पति के प्रति फिर से तीव्र घृणा का उदय, व्रान्सकी का फिर से आकर मिलना, तलाक़ की बातचीत और अन्त में गृहत्याग और अपने पुत्र से बिछोह—इन सब बातों की स्मृति उसे रात के घोर दुःस्वप्न के समान जान पड़ने लगी, जिसका कोई विशेष प्रभाव दूसरे दिन जागरण की अवस्था में शेष नहीं रहता। बीच-बीच में जब कभी उसके मन में इस बात की ग्लानि उत्पन्न होती कि उसने अपने पति के साथ समझौता करके अन्त में उसे त्यागकर बड़ा अन्याय किया है, पर वह यह सोचकर फिर अपने मन को समझा लेती कि चूँकि वह स्वयं डूब रही थी, इसलिए अपने डूबते हुए पति को बचाने में असमर्थ थी; बिना उसे डुबाये वह स्वयं डूबने से नहीं बच सकती थी। उसका पति उसके कारण कष्ट अवश्य पा रहा है; पर उसने (आना ने) स्वयं भी तो उसके कारण कुछ कम कष्ट नहीं उठाया है! उसे जो सुख वर्त्तमान अवस्था में मिल रहा है, उसका कितना बड़ा मूल्य उसे चुकाना पड़ा है!—अपनी मान-मर्यादा और अपना बेटा गँवाकर उसने वह सुख प्राप्त किया है। इसलिए क्यों न उसका पूरा उपभोग किया जाय!

इस प्रकार के तर्क से वह अपने मन को समझाने की चेष्टा करती, पर बीच-बीच में अन्तस्तल के किसी अज्ञात कोने से रह-रहकर एक भीषण क्रन्दन उठकर उसे विकल करने की चेष्टा करता रहता। वह उस क्रन्दन को बलपूर्वक दबाती और सब कुछ भूलकर मुक्त प्रेम के पागल प्लावन में अपने को बहा ले जाने का प्रयास करती। जिस अकूल सागर में वह बही जा रही थी, उसमें एकमात्र व्रान्सकी ही उसके लिए तिनके का सहारा था; इसलिए वह उसे इस मज़बूती से पकड़े रहती जिससे वह उसके हाथ से छूटने न पाये। यदि वह

सहारा भी कहीं हाथ से चला गया, तो फिर उसकी क्या गति होगी, इस बात की कल्पना भी ऐसी भयावह थी कि वह आतंक से सिहर उठती। इसलिए भूत और भविष्य की सब चिन्ताओं को बरबस अन्तर के अतल गह्वर में ढकेलकर वह वर्त्तमान के अपूर्व मनोमोहक राग-रंग में अपने को पूर्णरूप से निमग्न किये रहती।

व्रान्सकी आना को सब प्रकार से प्रसन्न रखने में कोई बात उठा न रखता। आना स्वभाव से ही कलाप्रिय थी, और व्रान्सकी भी चित्रकला में रुचि रखता था। इसलिए इटली के कलात्मक वातावरण में व्रान्सकी एक चित्रकार का परिचय प्राप्त करके उसके संसर्ग से अपने को और आना को ठीक उसी प्रकार प्रसन्न रखने की चेष्टा करने लगा, जिस प्रकार निकम्मे लोगों को समय काटना दूभर मालूम होने से वे ताश खेलकर अपना जी बहलाने का प्रयत्न करते हैं। व्रान्सकी आना से [illegible] प्रेम करता था, और इटली के उस एकान्त वातावरण में उसके प्रेम में कोई विशेष कमी नहीं आई। पर फिर भी बीच-बीच में आना के अत्यधिक प्रेम-प्रदर्शन से वह उकता जाता, और अपने को एक ऐसे बन्धन से जकड़ा हुआ महसूस करता, जो सुन्दर, सुकोमल और सुखकर होने पर भी आखिर बन्धन ही था!

कुछ समय तक इटली में रहने के बाद अकस्मात् व्रान्सकी वहाँ की निर्जन शान्ति से उकता गया। उसने रूस को लौट चलने का प्रस्ताव किया। उसका विचार कुछ समय पीटर्सबर्ग में रहकर फिर देहात में अपनी 'स्टेट' में आना के साथ जाकर जमकर रहने का था।

× × × ×

पीटर्सबर्ग में आकर वे लोग एक होटल में रहने लगे। आना अपने लड़के के विछोह से बहुत व्याकुल हो उठी थी। उससे मिलने की प्रबल आकांक्षा उसके मन में दिन पर दिन बढ़ती चली जाती थी। पर कोई उपाय उसे नहीं सूझता था। वह जानती थी कि उसका पति कभी उसे सेरेजा से मिलने नहीं देगा; प्रतिहिंसा की भावना उसे कभी इस बात के लिए राजी नहीं होने देगी।

बहुत सोच-विचार के बाद अन्त में उसने केरेनिन की एक महिला-मित्र, कौण्टेस लीडिया आइवानोवना को एक पत्र फ्रेंच भाषा में लिखा, जिसका आशय इस प्रकार था—

"कौण्टेस महोदया! मैं आपकी धर्मप्राणता से परिचित होने के कारण आपको यह पत्र लिखने का साहस कर रही हूँ। मैं अपने पुत्र से बिछुड़ने के कारण बहुत ही दुःखी हूँ। मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ

कि पीटर्सबर्ग छोड़ने के पूर्व मुझे एक बार उसका मुख देखने की सुविधा प्रदान करने की कृपा कीजिए। मैं अलेक्से अलेग्ज़ेण्ड्रोविच (केरेनिन) को पत्र इसलिए नहीं लिख रही हूँ कि उच्च आदर्श-समन्वित सज्जन को अपनी याद दिलाकर मैं उसका जी दुखाना नहीं चाहती। इसलिए मैंने आपको कष्ट देने का विचार किया है। चूँकि आप उक्त सज्जन की घनिष्ठ मित्र हैं, इसलिए आपको इस सम्बन्ध में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। क्या आप कृपा करके सेरेज़ा को मेरे पास भेजवाने का कष्ट करेंगी, अथवा मैं ही किसी निश्चित समय में आकर उससे मिल सकती हूँ? मुझे पूरी आशा है कि आप मेरी प्रार्थना को कभी अस्वीकृत न करेंगी। मैं सदा आपकी कृतज्ञ रहूँगी।—आना।"

जब कौन्टेस लीडिया आइवानोवना ने वह पत्र पढ़ा, तब उसका शरीर सिर से पाँव तक जल उठा। केरेनिन के प्रति उसकी आन्तरिक सहानुभूति थी, और आना के अपराध को वह अक्षम्य समझती थी। इसके अतिरिक्त आना ने जिस ढंग से वह पत्र लिखा था, वह कौन्टेस को अत्यन्त दंभ और ओछेपन से भरा हुआ लगा। उसने पत्र-वाहक से कह दिया कि इस पत्र का कोई उत्तर नहीं दिया जायगा।

बाद में जब केरेनिन से कौन्टेस ने उक्त पत्र का उल्लेख किया, तब वह बहुत देर तक स्तब्ध और मौन बैठा रहा। अन्त में उसने कहा—"मेरा यह ख़याल है कि मुझे उसके अनुरोध को अस्वीकार करने का कोई अधिकार नहीं है! मैं उसे क्षमा कर चुका हूँ, इसलिए यदि वह पुत्र-प्रेम से विकल होकर उससे मिलना चाहती है, तब मैं कोई आपत्ति उठाना नहीं चाहता।"

पर कौन्टेस ने दृढ़ता के साथ कहा—"मेरे मित्र, तुम अत्यन्त सदाशय हो, यह मैं जानती हूँ। पर तुम्हें इस बात का ध्यान नहीं है कि उस पतिता नारी से यदि तुम्हारे निष्पाप लड़के को मिलने दिया जायगा, तब उसके हृदय पर इस बात का क्या प्रभाव पड़ेगा? वह जानता है कि उसकी मृत्यु हो चुकी है, और उस नारी की पतित आत्मा के उद्धार के लिए उसे भगवान् से प्रार्थना करना सिखाया गया है। यही ठीक भी है। उससे मिलना सेरेज़ा की शुद्ध आत्मा के लिए भी हानिकर है।"

अन्त में केरेनिन उसकी बात मान गया। कौन्टेस ने आना को इस आशय का पत्र लिख भेजा—"महोदया, आपके लड़के को आपकी याद दिलाने से वह स्वभावतः आपके सम्बन्ध में ऐसे प्रश्न करेगा, जिनका उत्तर सुनकर उसकी धार्मिक भावनाओं को गहरा धक्का

पहुँचेगा। इसलिए आपको अपने पुत्र की आध्यात्मिक उन्नति को ध्यान में रखकर उससे न मिलने का त्याग स्वीकार कर लेना चाहिए। भगवान् आपको सुमति दें।—कौन्टेस लीडिया।"

वास्तव में कौन्टेस लीडिया का उद्देश्य धार्मिकता की आड़ में आना को अत्यन्त निष्ठुर, मार्मिक चोट पहुँचाने का था; और इसमें उसे पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। आना उस पत्र को पढ़कर अत्यन्त मर्माहत हुई। धर्म के नाम पर जो व्यक्ति दूसरे को ऐसी हृदयहीन पीड़ा पहुँचा सकता है उसकी निर्ममता कैसी भयङ्कर है, इस बात का अनुमान वह अच्छी तरह लगा सकती थी। उसने अपने मन में कहा—"मैं इन लोगों से अच्छी हूँ; मैं कम से कम झूठ तो नहीं बोलती!"

दूसरे ही दिन सेरेज़ा का जन्मदिन था। आना ने निश्चय किया कि वह हर हालत में कल सेरेज़ा से मिलेगी—फिर चाहे इस दुस्साहस के लिए उसे कैसी ही विकट कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े! वह एक खिलौने की दूकान में गई। वहाँ उसने बहुत-से सुन्दर-सुन्दर खिलौने खरीदे। इसके बाद उसने यह तय किया कि वह किस उपाय से किस समय और किस रूप में सेरेज़ा से मिलेगी। उसने सोचा कि बड़े सवेरे ही जाना ठीक होगा; तब केरेनिन सोया हुआ होगा। चौकीदार तथा दूसरे नौकरों की मुट्ठी गरम करने से वे उसे अन्दर जाने से नहीं रोकेंगे। वह बुर्क़ा पहनकर जायगी, और बुर्क़े को नहीं हटावेगी।

इधर सेरेज़ा अपने पिता के कड़े शासन में बहुत दुःखी और उदास रहने लगा। वह अपनी मा को तनिक भी नहीं भूला था। उसे यह विश्वास दिलाने की चेष्टा की गई थी कि उसकी मा मर चुकी है; फिर भी उसकी अन्तरात्मा इस बात को सत्य मानने के लिए तैयार न थी। पर सबसे भयङ्कर बात उसके लिए यह थी कि अपनी मा के सम्बन्ध में घर के किसी भी व्यक्ति से कोई प्रश्न करने की आज्ञा उसे नहीं थी। प्रश्न करते ही उस पर फटकार पड़ने लगती थी।

आना दूसरे दिन तड़के ही केरेनिन के दरवाज़े पर पहुँच गई। उसने गाड़ी पर से उतरकर सामनेवाले दरवाज़े की घंटी बजाई। चौकीदार ने अपने एक सहायक छोकरे को यह जानने के लिए भेजा कि कौन आया हुआ है। छोकरे ने ज्यों ही दरवाज़ा खोला, त्यों ही आना ने चुपके से एक तीन रूबल का नोट उसके हवाले कर दिया। "मैं सेरेज़ा—सर्ज

अलेक्सेयिच से मिलना चाहती हूँ।" यह कहकर वह सीधे आगे को बढ़ी चली गई। भीतर शीशे के दरवाज़े के पास एक दूसरे नौकर ने उसे टोका। इतने में चौकीदार भी वहाँ आ पहुँचा। उसने पूछा—"आप किससे मिलना चाहती हैं?"

"मैं प्रिन्स स्कोरोडुमोव के यहाँ से आई हूँ। मैं सर्जे अलेक्सेयिच से मिलना चाहती हूँ।"

"वह अभी सो रहा है।"

आना ने सोचा कि जो घर कुछ समय पहले तक उसका अपना था, आज उसमें प्रवेश करने का अधिकार भी उसे नहीं है, और घर का प्रत्येक नौकर उसे टोक रहा है! उसे रुलाई आने लगी; पर उसने बरबस अपने को रोका।

चौकीदार ने पूछा—"आप क्या सर्जे अलेक्सेयिच के जगने तक ठहरी रहेंगी?" पर फिर उसने ध्यानपूर्वक बुर्के के भीतर छिपे हुए मुख की ओर देखा, और आना को पहचान लिया। उसने अत्यन्त नम्रतापूर्वक कहा—"सरकार भीतर चली आवें।" आना उत्तर में कुछ कहना चाहती थी, पर उसका गला रुँध आया था और वह कुछ बोलने में अपने को असमर्थ-सी अनुभव करने लगी।

चौकीदार उसे सेरेज़ा के कमरे के पास ले आया, और बोला—"सरकार एक मिनट इन्तज़ार करें, मैं भीतर जाकर देख आता हूँ।"

थोड़ी देर बाद बाहर लौटकर उसने कहा—"सर्जे अलेक्सेयिच की नींद अभी खुली है।"

"मुझे भीतर ले चलो! शीघ्र! शीघ्र।" आना ने बड़ी घबराहट के स्वर में कहा। भीतर जाकर उसने देखा कि उसका प्यारा और दुलारा सेरेज़ा बिस्तर पर लेटे-लेटे जम्हाइयाँ ले रहा है। उसने पुकारा—"सेरेज़ा!" और उसके सिरहाने के पास खड़ी हो गई। सेरेज़ा हड़बड़ाता हुआ उठ बैठा। उसने बड़े ग़ौर से अपनी मा के बुर्के से ढके हुए मुख की ओर देखा। इसके बाद बड़ी भोली और मीठी मुसकान अपने प्यारे मुखड़े पर झलकाकर उसने अपनी दोनों कोमल और पतली बाँहें आना के गले में डाल दीं।

आना ने विकल-स्नेह से कम्पित स्वर में कहा—"सेरेज़ा! मेरे लाल!" और उसे कसकर छाती से लगाया।

सेरेज़ा ने कहा—"मैं जानता था कि मेरी वर्षगाँठ के दिन तुम निश्चय मुझसे आकर मिलोगी! मैं जानता था!"

आना ने देखा कि उसके लाड़ले लड़के का मुख पहले की अपेक्षा बहुत मलिन हो गया है। वह निर्निमेष आँखों से उसे देख रही थी, और एक व्याकुल, उच्छल-क्रन्दन उसके हृदय के अतल से उठकर उसके सारे तन-मन को प्लावित कर रहा था। उसकी आँखें डबडबा आई थीं और गला रुँध गया था। सेरेज़ा ने पूछा--"अम्मा, तुम क्यों रो रही हो? अम्मा, तुम्हें क्या हो गया है?"

तत्काल सँभलकर आना ने कहा--"कुछ नहीं हुआ बेटा, मैं प्रसन्नता के कारण रो रही हूँ। इतने दिनों बाद तुम्हें देखा है न, इसलिए! अब उठो। अब तुम्हारे कपड़े पहनने का समय हो गया है। मेरे बिना तुम कपड़े कैसे पहन लेते हो, लल्ला! मेरे बिना--" वह सहज, स्वाभाविक स्वर में बोलने की चेष्टा कर रही थी, पर उसका कण्ठ भर-भर आता था। उसे फिर रुलाई आ रही थी, इसलिए उसने अपना मुँह फेर लिया!

सेरेज़ा बोला--"अम्मा, अब मैं ठण्डे पानी से नहीं नहाता। पिता जी ने मना किया है। तुमने मेरे मास्टर, वैसिली ल्यूकिच को नहीं देखा है? वह अभी आता ही होगा! और तुम मेरे कपड़ों के ऊपर बैठी हो!" यह कहकर वह खिलखिलाकर हँस पड़ा और फिर एक बार उसके गले में अपनी बाँहें डालकर उससे लिपटते हुए बोला--"अम्मा, अम्मा!"

इधर वैसिली ल्यूकिच दरवाज़े के बाहर खड़ा था। उसने आना को देख लिया था, और वह दोनों की स्नेह-भरी बातें सुन रहा था। वह आना के चले जाने का इन्तज़ार कर रहा था। उधर नौकरों में बड़ी हड़बड़ी मच गई थी। सब जानते थे कि यदि उनके मालिक को उनकी पिछली मालकिन के आने की बात मालूम हो जायगी, तब बहुत बुरा परिणाम होगा। अन्त में सबने मिलकर पुरानी दाई को आना के पास भेजने का निश्चय किया। दाई ने भीतर जाकर कहा--"सरकार!" और यह कहकर वह उसके हाथों को बड़े स्नेह के साथ चूमने लगी। आना उसे देखकर बोली--"ओह, दाई तुम क्या यहीं हो! मुझे मालूम नहीं था।"

दाई ने कहा--"मैं यहाँ नहीं रहती। मैं अपनी बहन के यहाँ हूँ।" और सहसा वह रो पड़ी, और बार-बार आना का हाथ चूमने लगी। आना को वह बहुत चाहती थी और उसके चले जाने से वह बहुत दुःखित थी। अन्त में उसने आना के कानों में कुछ कहा। आना

सेरेज़ा के पास आकर बोली—"लल्ला ! अब मैं—वह कहना चाहती थी अब मैं जाती हूँ !" पर उसकी बात गले में अटककर रह गई।

सेरेज़ा ने बहुत-कुछ अनुमान लगा लिया था। उसने कहा—"अम्मा, अभी न जाओ ! अभी वे नहीं जागे हैं !" 'वे' से उसका आशय अपने पिता से था।

आना ने कहा—"सेरेज़ा ! मेरे लल्ला ! अपने पिता को प्यार करना। वे मुझसे बहुत अच्छे और दयालु हैं। मैंने उनके प्रति अपराध किया है। जब तुम बड़े होगे, तब सब बातें समझोगे बेटा !"

"नहीं, नहीं, तुमसे अच्छा और कोई नहीं है !" यह कहते हुए सेरेज़ा के आँसू व्याकुल वेग से उमड़ चले, और वह अपनी मा से इस तरह लिपट गया कि छुड़ाना कठिन हो गया।

"मेरे लल्ला ! मेरे बबुआ !" कहकर आना भी उसी तरह हताश होकर रोने लगी।

इतने में वैसिली ल्यूकिच ने भीतर प्रवेश किया, और बाहर सीढ़ियों में किसी के आने का शब्द सुनाई दिया। नर्स ने घबराकर आना के कान में कहा—"वे आ रहे हैं !" आना ने शीघ्रता से सेरेज़ा का गीला मुँह चूमा और तत्काल बाहर निकल आई। दरवाज़े में केरेनिन उसे दिखाई दिया। आना को देखते ही उसने अपना सिर नीचे को कर लिया। अपने बेटे से जब आना ने कहा था कि उसका पिता बहुत अच्छा और दयालु है, तब सच्चे हृदय से उसने वह बात कही थी। पर जब दरवाज़े पर उसने उसे प्रत्यक्ष रूप में, अपने सामने खड़ा देखा, तब फिर एक बार उसके मन में अपने उस भूतपूर्व पति के प्रति अदम्य घृणा और आक्रोश का भाव जाग पड़ा, जिसने उसके प्यारे लड़के को उससे छीन लिया था। वह तेज़ी से बाहर को चली गई। जिन खिलौनों को वह कल चुनचुनकर सेरेज़ा के लिए ख़रीद लाई थी, हड़बड़ी में उन्हें वह आज उसे देना भूल गई, और पार्सल को अपने साथ वापस ले गई।

२७

व्रान्सकी जब आना को साथ लेकर इटली से लौटकर पीटर्सबर्ग आया, तब उसने सारे समाज का रुख अपने प्रति बदला हुआ पाया। एक ऐसी विवाहिता महिला को, जिसे पति ने तलाक़ नहीं दिया है, अपने पास पत्नी के रूप में रखना समाज की दृष्टि में अत्यन्त निन्दनीय था। जब आना अपने पति के घर में रहती थी, और व्रान्सकी का प्रेम-सम्बन्ध उसके साथ पूर्ण रूप से चल रहा था, तब समाज के बहुत-से प्रतिष्ठित व्यक्तियों की दृष्टि में वे दोनों (व्रान्सकी और आना) बहुत ऊँचे स्तर पर उठ गये थे। पर जब आना पति को त्याग कर व्रान्सकी के साथ रहने लगी, तब समाज के लिए उसका यह अपराध अक्षम्य हो गया। व्रान्सकी समाज के इस ढोंग से जल उठा। उसकी मा आना से इसलिए जली-भुनी थी कि उसने उसके बेटे की पदवृद्धि में घोर विघ्न डालकर उसका जीवन नष्ट कर दिया। उसकी भावज ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि वह आना को अपने घर पर नहीं बुला सकती, न उसके यहाँ जा सकती है क्योंकि ऐसा करने से समाज उसे भी बहिष्कृत कर देगा। आना की संगिनी बेट्सी ने एक दिन आना को अपने यहाँ आने के लिए कहला भेजा; पर उसने जानबूझकर ऐसा समय निश्चित किया जब किसी भी दूसरे व्यक्ति के उसके यहाँ आने की सम्भावना नहीं थी। वह नहीं चाहती थी कि समाज उसे आना के साथ देखकर उसे भी हेय समझे। आना उसका उद्देश्य समझ गई और उसने उससे मिलना अस्वीकार कर दिया।

व्रान्सकी ने अत्यन्त दुःखित होकर देखा कि ऐसी दशा में आना को साथ लेकर पीटर्सबर्ग में अधिक समय तक रहना असम्भव है। आना बेट्सी के यहाँ नहीं गई, पर उसने निश्चय किया कि उसी दिन संध्या को वह थियेटर में जायगी। व्रान्सकी उसके इस विचार से बहुत घबरा उठा। वह जानता था कि थियेटर में समाज की बहुत-सी प्रतिष्ठित महिलायें आवेंगी और आना को देखकर उस पर तीखे तीखे व्यंग्य कसेंगी। उसने आना को रोकना चाहा, पर वह अपने हठ पर अड़ी रही, बार-बार समझाने पर भी उसने न माना, तब व्रान्सकी मन ही मन क्रुद्ध हो उठा।

वास्तव में हुआ वही जिसका व्रान्सकी को भय था। आना के आस-पास के 'बाक्सों' में बैठी हुई महिलाओं ने आना पर ऐसे-ऐसे मार्मिक छींटे कसे कि आना अत्यन्त उत्तेजित अवस्था में अपने डेरे में वापस चली आई। व्रान्सकी को उसकी मा ने अपने 'बाक्स' में बुला लिया था और वह उससे बातें करने में व्यस्त रहा। जब व्रान्सकी वापस आने पर आना से मिला, तब आना ने एक बार उसकी ओर देखकर आँखें फेर लीं।

व्रान्सकी ने घबराकर कहा--"आना!"

आना उत्तेजित होकर बोली--"यह सब तुम्हारे ही कारण हुआ! तुम्हारा ही इसमें दोष है!" उसकी आँखों में आँसुओं का वेग उमड़ चला था।

व्रान्सकी बोला--"पर मैंने तो तुमसे पहले ही कहा था कि तुम्हारा वहाँ जाना ठीक नहीं है। तुमने मेरी प्रार्थना पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया! पर कुछ भी हो, इस तरह की बातों से तुम अपना जी क्यों दुखाती हो?"

"मादाम काटासोवा ने मेरा घोर अपमान किया है। वह कहती थी कि मेरे साथ बैठना पाप है! और तुम चुपचाप अपनी मा के पास चले गये! यदि तुम मुझसे प्रेम करते होते, तो क्या--"

"आना! इस बात से प्रेम का क्या सवाल!"

"क्यों नहीं है? यदि तुम प्रेम करते होते, तो--" पर आना ने देखा कि व्रान्सकी के मुख पर वास्तव में उसके प्रति असन्तोष का-सा भाव व्यक्त हो उठा; और वह घबराकर चुप रह गई। व्रान्सकी वास्तव में उसकी इस तरह की बातों से असन्तुष्ट हो उठा था; पर उसने अपने असन्तोष को दबाकर उसे यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया कि आना के प्रति उसके प्रेम में कोई कमी नहीं आई है। आना की उत्तेजना शान्त हो गई।

दूसरे दिन वे लोग पीटर्सबर्ग छोड़कर देहात में व्रान्सकी के 'स्टेट' में चले गये।

इतने वर्षों तक व्रान्सकी ने अपनी बहुत बड़ी ज़मींदारी की ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया था। पर अब वह जब आना को साथ लेकर वहाँ जमकर रहने का विचार करने लगा, तब उसने उसकी उन्नति के प्रयत्न में अपनी सारी शक्ति लगा दी। अपने ठाठदार मकान को उसने बहुत बढ़िया 'फ़र्नीचर' से सजाकर एक नया ही रूप दे दिया। स्थान-स्थान पर उसने बहुत से सुन्दर-सुन्दर बाग़ लगाये। किसानों

के अशिक्षित लड़कों को शिक्षित बनाने के उद्देश्य से उसने स्कूल खोला और सार्वजनिक चिकित्सा के लिए एक बहुत बड़े अस्पताल की इमारत भी वह तैयार करवाने लगा। इन सब विषयों में वह बीच-बीच में आना की भी राय लेता और आना जो सम्मति देती उसे भरसक मानता था। अपनी 'रियासत' के सुधार और उन्नति के कामों में जुटे रहने से व्रान्सकी देहाती जीवन की निर्विचित्र शान्ति और एकरसता से उकताता नहीं था।

आना भरसक उन सब कामों में दिलचस्पी लेने का प्रयत्न करती रहती, पर बीच-बीच में उसका जी बहुत उचाट हो जाता। व्रान्सकी का प्रेम पाकर वह अपने को बहुत सुखी समझती थी, और अपनी छोटी लड़की एनी ('आना' का छोटा रूप) को प्यार करके सेरेज़ा से बिछुड़ने का दुःख भूलने की चेष्टा करती रहती। पर दो बातों का खटका उसके मन में जान में या अनजान में, सब समय लगा रहता; एक तो व्रान्सकी के उससे उकता जाने की आशंका और दूसरे सेरेज़ा से फिर कभी न मिल सकने की निराशा। इसके अतिरिक्त एक और दुःख उसके पीछे लगा हुआ था। अपने जिस पति से वह हृदय से घृणा करने लगी थी, जिसके कारण अपना घर और अपने प्यारे लड़के को त्यागकर वह व्रान्सकी के पास चली आई थी, उसकी स्मृति का चिह्न मन में शेष न रखने की चेष्टा करने पर भी वह सफल नहीं हो पाती थी। कारण यह था कि तलाक़ का प्रश्न हल न हो सकने के कारण उसकी लड़की, जिसका पिता वास्तव में व्रान्सकी था, अभी तक 'केरेनिना' ही कही जाती थी। इन सब कारणों से आना बीच-बीच में चिन्ताग्रस्त हो जाती थी।

२८

लेविन का एक सगा भाई था, जिसका नाम निकोलस लेविन था। वह एक विचित्र प्रकृति का व्यक्ति था। वह न अपने से कोई सम्बन्ध रखता था, न घर से। लेविन जब कभी उससे मिलने जाता, तब वह उससे खिंचा-खिंचा-सा रहता, और कुछ जली-कटी बातें सुना देता। उसकी ऐसी धारणा थी कि उसका भाई उसे लूटने की इच्छा रखता है और उसके प्रति कोई समवेदना नहीं रखता। उसके मन में ऐसी धारणा क्यों जम गई थी, इसका ठीक-ठीक अनुमान लगाना कठिन है। वह सदा रोगी रहता था, जिसके कारण उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था। उसने एक बाजारू स्त्री को अपनी रखेली बना लिया था। वह स्त्री सदा उसके साथ रहती थी और भरसक उसकी सेवा-शुश्रूषा किया करती थी। किटी जब जर्मनी में स्वास्थ्य-सुधार के लिए गई हुई थी, तब निकोलस भी अपनी रखेली के साथ वहाँ आया हुआ था। उसमें क्षयरोग के-से लक्षण दिखाई देने लगे थे।

जब विवाह के बाद किटी मास्को से लेविन के साथ देहात आई, तब लेविन अपने उस रुग्ण भाई को एकदम भूला हुआ था। पर अकस्मात् एक दिन उसे निकोलस की रखेली का एक पत्र मिला, जिसमें यह सूचित किया गया था कि निकोलस मृत्यु-शय्या पर है। वह पत्र पढ़ते ही लेविन का मुख एकदम सूख गया। किटी ने उसके मुख के भाव में वह आकस्मिक परिवर्तन देखकर पूछा कि क्या बात है? लेविन ने गम्भीरता के साथ उत्तर दिया—"वह स्त्री लिखती है कि मेरा भाई मृत्यु-शय्या पर है। मैं उसके पास जाना चाहता हूँ।"

"कब?"

"कल ही चला जाऊँगा।"

"तो मैं भी चलूँगी।"

लेविन किटी के इस प्रस्ताव से बहुत खीझ उठा। उसने कहा—"किटी, तुम यह क्या कहती हो! ऐसा कैसे हो सकता है!"

"क्यों? ऐसा क्यों नहीं हो सकता? मैं तुम्हारे काम में कोई बाधा नहीं डालूँगी!"

"मैं इसलिए जा रहा हूँ कि मेरा भाई मरने पर है; पर तुम्हें जाने की कौन-सी आवश्यकता आ पड़ी है?"

"क्यों? जिस कारण से तुम जा रहे हो, उसी कारण से मैं भी जाना चाहती हूँ।"

"नहीं, यह असंभव है!"

"असंभव नहीं है! मैं अवश्य चलूँगी, अवश्य!"—किटी ने खीझकर कहा।

लेविन बोला—"तुम्हें मालूम है कि मेरा भाई किस श्रेणी की स्त्री के साथ रहता है? ऐसी स्त्री से तुम्हारा मिलना मैं उचित नहीं समझता।"

किटी ने कहा—"मैं और कुछ नहीं जानती; केवल इतना ही जानती हूँ कि मेरे पति का भाई बीमार है और उसकी सेवा-शुश्रूषा करना मेरे पति की ही तरह मेरा भी कर्त्तव्य है। बस!"

"मैं समझ गया। असली बात यह है कि तुम अकेले रहना पसन्द नहीं करतीं।"

इस बात पर किटी बहुत बिगड़ उठी। वह यह बात सहन न कर सकी कि उसका पति उसे स्वार्थी समझता है। बहुत देर तक झगड़ते रहने के बाद अन्त में पति-पत्नी में फिर मेल हो गया और लेविन ने किटी को अपने साथ ले चलने का निश्चय किया।

निकोलस एक छोटे-से शहर के एक होटल में बीमार पड़ा हुआ था। लेविन किटी को बाहर के कमरे में छोड़कर स्वयं भीतर अपने भाई के कमरे की ओर गया। दरवाज़े में उसे निकोलस की रखेली मैरी निकोलेवना मिली। लेविन ने उससे पूछा—"क्या हाल है?" उसने घबराई हुई आवाज़ में उत्तर दिया—"अवस्था बहुत चिन्ताजनक है। वे सब समय आपको याद करते हैं। आप—आप क्या अपनी पत्नी के साथ आये हैं?" वह वास्तव में इस बात के लिए बहुत संकोच का अनुभव कर रही थी कि किटी के समान एक संभ्रान्त महिला उसके समान एक साधारण बाज़ारू स्त्री के पास आई है। पर लेविन के उत्तर देने के पहले ही बाहर के कमरे से किटी वहाँ आ खड़ी हुई। लेविन इस बात से मन ही मन किटी से बहुत असन्तुष्ट हुआ और लज्जा का अनुभव करने लगा। मैरी निकोलेवना उससे भी अधिक लज्जित और संकुचित हुई और घबराहट के कारण उसकी आँखों से आँसू निकल आये थे। पर किटी ने निस्संकोच भाव से उससे पूछा—"रोगी की तबीअत कैसी है?"

लेविन ने कहा--"बाहर बरामदे में कोई भला आदमी बात नहीं करता।" किटी बोली--"अच्छा चलो, भीतर चलें।" पर लेविन के मुख पर घबराहट का चिह्न देखकर फिर उसने कहा--"पहले तुम हो आओ, बाद में मुझे बुला लेना।" यह कहकर वह अपने कमरे में चली गई। लेविन अपने रोगी भाई के पास गया।

भीतर जाकर लेविन ने जो दृश्य देखा, वह अत्यन्त भयानक था। कमरा बहुत गन्दा था। रोगी के सिरहाने जो पीकदान रखा था वह बलग़म से भरा था। भयंकर दुर्गन्ध के कारण लेविन को साँस लेना कठिन हो रहा था। एक अत्यन्त शीर्ण, शुष्क, चर्मावशेष प्रेत की तरह रोगी एक गन्दे पलँग पर एक कम्बल ओढ़े पड़ा हुआ था। बिस्तर इस बेसिलसिले से लगा हुआ था कि स्पष्ट ही रोगी को उस पर लेटने में कष्ट मालूम हो रहा था। अपनी दो चमकती हुई आँखों में एक बीभत्स मुसकान व्यक्त करके बड़े कष्ट से निकोलस व्यंग्य के साथ बोला--"शायद तुम्हें यह आशा नहीं थी कि तुम मुझे इस अवस्था में पड़े पाओगे?"

"हाँ, नहीं"--घबराहट के साथ लेविन बोला--"पर तुमने मुझे अपने सम्बन्ध में इससे पहले सूचना क्यों नहीं दी? मैंने अपने विवाह के अवसर पर तुम्हारा पता जानने की बहुत चेष्टा की, पर कोई फल न हुआ।"

निकोलस के मुख के भाव से यह मालूम होता था कि वह लेविन की बातों से विशेष प्रसन्न नहीं हो रहा है। वह केवल एकटक आँखों से लेविन की ओर देख रहा था, और कुछ बोलता नहीं था। अन्त में जब लेविन ने सूचित किया कि उसकी पत्नी भी उसके साथ आई है, तब वह इस बात से कुछ प्रसन्न जान पड़ा, पर उसने कहा कि उसे इस दशा में देखकर वह निश्चय ही भयभीत हो उठेगी। कुछ देर बाद निकोलस बोला--"कोई अच्छा डाक्टर न मिलने से मैं इस दशा में पड़ा हुआ हूँ। यदि मास्को का कोई डाक्टर यहाँ आया होता, तो मैं निश्चय ही अच्छा हो जाता।" लेविन ने देखा कि उस मरणासन्न व्यक्ति को अभी तक जीने की आशा है।

कुछ देर के बाद लेविन यह कहकर बाहर चला गया कि वह किटी को बुलाना चाहता है। जब वह किटी के पास गया, तो किटी के प्रश्न के उत्तर में उसने कहा--"उसकी दशा बहुत भयंकर है। तुमने यहाँ आकर बहुत बुरा किया, और मुझे भी संकट में डाल दिया।" पर किटी शान्त और दृढ़ स्वर में बोली--"मुझे उसके

पास ले चलो, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ। मेरे जाने से कोई हानि न होगी, मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ।"

पत्नी के बहुत अनुरोध करने पर अन्त में लेविन विवश होकर उसे रोगी के कमरे में ले गया। किटी ने जाते ही निकोलस से ऐसी स्नेहपूर्ण मीठी-मीठी बातें कीं कि उसका शीर्ण मुख एक बार खिल उठा। लेविन दुःख और भय के कारण उस कमरे में अधिक समय खड़ा न रह सका, और किसी बहाने से बाहर चला गया। इस बीच में किटी ने होटल के नौकर-चाकरों की सहायता से सारा कमरा साफ़ करवाया और बिस्तर को झड़वाकर ठीक तरह से बिछवाया, और एक नई चादर ऊपर से फैला दी। तकियों के पुराने ग़िलाफ़ उतार कर नये ग़िलाफ़ लगवाये और अपने सामान में से नये तकिये तथा नई क़मीजें निकलवाईं। पीकदान को साफ़ करवाया और गिलास तथा दूसरे बर्तनों को धुलवाया। इसके बाद एक अच्छे डाक्टर को बुलवाया, और दवा के लिये एक आदमी को 'केमिस्ट' के यहाँ भेजा।

लेविन जब कुछ समय बाद रोगी के कमरे में फिर आया, तब उसने कमरे का और रोगी का रूप ही कुछ दूसरा पाया। दुर्गंध के स्थान में सारे कमरों से इत्र की सुगंध आ रही थी, जिसे किटी ने छिड़क दिया था। पलँग के नीचे एक बढ़ियाँ चटाई बिछी थी। एक सुन्दर और साफ़-सुथरे टेबिल के ऊपर दवा की शीशियाँ सजाकर रखी हुई थीं। किटी ने स्वयं रोगी को नहला-धुलाकर और साफ़ कपड़े पहनाकर उसका रूप-रंग ही बदल डाला था। रोगी के मुख पर सन्तोष और आशा का एक क्षीण प्रकाश दिखाई देने लगा था।

लेविन को स्वप्न में भी यह आशा नहीं थी कि किटी किसी मरणासन्न रोगी की परिचर्या ऐसे सुन्दर ढंग से कर सकती है। वह मन ही मन ईश्वर को इस बात के लिए धन्यवाद देने लगा कि किटी उसके साथ चली आई। रोगी क्षीण स्वर में किटी से बोला—"मुझे इस समय बहुत आराम मालूम हो रहा है। यदि मैं तुम्हारे साथ होता, तो कभी अच्छा हो गया होता!"

पर वास्तव में उसका रोग अब चरमावस्था को पहुँच चुका था, और किसी प्रकार की परिचर्या तथा चिकित्सा से उसका स्वस्थ होना असम्भव था। उसकी दुर्बलता अत्यन्त शीघ्र गति से बढ़ती

चली जाती थी। दो एक दिन बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। किटी ने अन्त तक उसकी शुश्रूषा में कोई बात उठा नहीं रखी। लाड़-प्यार और फ़ैशन के बीच में पली हुई किटी की उस निःस्वार्थ सेवा का लेविन पर गहरा प्रभाव पड़ा। अपने भाई की मृत्यु अपनी आँखों के आगे देखने के कारण वह ऐसा विह्वल हो उठा था कि यदि वह किटी के साथ न आया होता, तो निश्चय ही उसका मानसिक अवसाद बहुत भयङ्कर रूप धारण कर लेता। पर किटी ने जो आदर्श उसके सामने उपस्थित किया था, उससे उसके मन में यह विश्वास हो गया कि अपने कर्त्तव्य के सच्चे पालन में कोई त्रुटि नहीं होनी चाहिए, उसके बाद शेष सब बातें भगवान् की इच्छा पर निर्भर करती हैं। इस प्रकार के विचार मन में लेकर वह किटी के साथ घर वापस चला गया।

२६

डाली गर्मियों में किटी के यहाँ आकर रहने लगी। अपनी छोटी-सी 'स्टेट' में उसका जो मकान था, वह काफ़ी पुराना हो चला था और उसकी मरम्मत की आवश्यकता थी। इसलिए लेविन और किटी ने उससे वह अनुरोध किया था कि वह इस बार गर्मियों में उन्हीं के यहाँ रहे। डाली ने अपने पति की सलाह से उन लोगों की बात मान ली थी।

डाली के मन में बहुत दिनों से आना से मिलने की तीव्र इच्छा वर्त्तमान थी। इस बार उसने निश्चय किया कि वह अवश्य ही व्रान्सकी के 'स्टेट' में जाकर आना से मिलेगी। लेविन और किटी को स्वभावतः उसके व्रान्सकी के यहाँ जाने की बात पसन्द नहीं आ सकती थी। फिर भी लेविन ने उसकी यात्रा का पूरा प्रबन्ध कर दिया। लेविन की गाड़ी पर चढ़कर डाली रवाना हो गई। रास्ते में वह अपने उच्छृंखल-स्वभाव के पति के कारण अपने आर्थिक कष्ट और बच्चों के पालन-पोषण की कठिनाइयों के सम्बन्ध में चिन्ता करती रही। अपने पति के आचरण के सम्बन्ध में चिन्ता करते-करते उसे उस दिन की याद आई, जब आना ने उसे समझा-बुझाकर स्टीवा को क्षमा कर देने के लिए राज़ी किया था। आना के कहने पर ही उसने ऐसे पति से मेल कर लिया, नहीं तो वह क्या किसी भले घर की स्त्री के प्रेम के योग्य था? वह मन ही मन कहने लगी—"न जाने आना को लोग दोष क्यों देते हैं! कम से कम मैं तो उसे कोई दोष नहीं दे सकती। क्या मैं उससे अच्छी हूँ? उसमें और मुझमें केवल यही अन्तर है कि मैं एक ऐसे पति से प्रेम करती हूँ जो वास्तव में प्रेम के योग्य नहीं है, और आना अपने पति से घृणा करती है। पर यदि आना अपने पति को नहीं चाहती, तो इसमें उसके पति का ही दोष है, उसका नहीं। उसका हृदय सरस है और वह प्रेम की प्यासी है। उसका पति अपने रूखे स्वभाव के कारण उसकी वह प्यास नहीं मिटा सका। कोई भी स्त्री प्रेम के बिना जीवित नहीं रह सकती। यदि मैं आना की स्थिति में होती, तो बहुत संभव है मैं भी वैसा ही करती। कौन कह सकता है कि उस समय आना का कहना मानकर मैंने भूल नहीं की? मुझे चाहिए था कि मैं भी अपने पति को छोड़ देती और एक नया जीवन बिताती। मैं उस समय किसी

से कुछ कम सुन्दरी नहीं थी। मुझे चाहनेवाले व्यक्तियों की कोई कमी न रहती।" सोचते-सोचते उसके मन में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि एक बार वह अपना मुख शीशे में देखे। वह अपने साथ एक छोटा-सा शीशा लाई थी, जो एक थैले में बन्द था। पर कोचवान उसे देखकर हँसेगा, यह सोचकर उसने शीशा नहीं निकाला। पर शीशा देखे बिना ही उसके मन में यह विश्वास घर करने लगा कि अभी तक उसका यौवन नष्ट नहीं हुआ है। अपने पति के कुछ मित्रों को उसने एक-एक करके स्मरण किया, जो उसे विशेष श्रद्धा और स्नेह की दृष्टि से देखते थे। डाली जाग्रत् अवस्था में रहस्यपूर्ण स्वतन्त्र प्रेम-जीवन का स्वप्न देखने लगी। वह फिर मन ही मन कहने लगी—"कुछ भी हो, आना ने बहुत अच्छा किया है। मैं कभी इसके लिए उसका तिरस्कार नहीं कर सकती। वह व्रान्सकी का प्रेम पाकर प्रसन्न है, और प्रसन्न होने का उसे पूरा अधिकार है।" इसके बाद वह इस बात की कल्पना करने लगी कि यदि वह भी आना की तरह किसी सुन्दर पुरुष से प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करके अपने पति से यह कहे कि "तुमने मेरे साथ जैसा व्यवहार किया है, मैं उसी का उत्तर तुम्हें दे रही हूँ," तो वह किस प्रकार विस्मित और विभ्रान्त होगा। इस कल्पना से उसके मन में गुदगुदी पैदा होने लगी और उसके मुख पर हास्य की रेखा व्यक्त हो उठी।

इस प्रकार के स्वप्नों में निमग्न रहते हुए संध्या को डाली व्रान्सकी के 'स्टेट' में पहुँची। उस समय आना, व्रान्सकी और उनके कुछ मित्र घोड़ों पर सवार होकर खेतों का निरीक्षण करके घर को वापस आ रहे थे। आना को घोड़े पर सवार देखकर डाली को आश्चर्य हुआ। आना के समान गम्भीर प्रकृति की कोई स्त्री घोड़े पर चढ़कर नौजवान छोकरियों की तरह निर्द्वन्द्वता का भाव प्रकट करे, यह बात उसे अच्छी नहीं मालूम होती थी। पर जब आना निकट आई, और डाली ने उसके हाव-भाव और आकृति-प्रकृति पर ग़ौर किया, तब उसे तत्काल विश्वास हो गया कि आना के समान असाधारण स्त्री घोड़े पर चढ़कर भी अपना गांभीर्य सुरक्षित रख सकती है।

आना ने जब पहचाना कि गाड़ी में डाली बैठी हुई है, तब वह घोड़े को तेज़ दौड़ाते हुए उसके पास ले चली। उसके मुख पर अकृत्रिम प्रसन्नता झलक उठी थी। गाड़ी के पास पहुँचते ही वह घोड़े पर से उतर पड़ी। उतरते ही उसने विह्वल स्नेह से डाली को अपने गले से लगाया और उसके सिर को अपने सिर से मिलाया। इसके

बाद वह बोली—"मुझे कितना हर्ष हुआ है, मैं इसका वर्णन नहीं कर सकती।"

व्रान्सकी भी घोड़े पर से उतरकर वहाँ आ पहुँचा था। आना ने उससे कहा—"अलेक्से! डाली आई है। कैसे आनन्द की बात है।"

व्रान्सकी ने अपनी टोपी उतारकर डाली का अभिवादन किया और बोला—"आपके आने से हम लोग वास्तव में हृदय से प्रसन्न हैं।"

आना और व्रान्सकी के अन्य मित्रों ने भी आकर डाली का अभिवादन किया। इसके बाद व्रान्सकी के मकान तक पहुँचने के लिए आना और डाली एक ही गाड़ी में बैठ गईं। शेष सब लोग उनके पीछे-पीछे घोड़ों पर चले जा रहे थे।

आना डाली की विस्मित दृष्टि का अनुमान लगाते हुए बोली—"तुम्हें निश्चय ही यह देखकर आश्चर्य हो रहा होगा कि मैं अपनी वर्त्तमान स्थिति में इतनी स्वस्थ और प्रसन्न क्यों हूँ! क्या करूँ डाली, मैं वास्तव में आजकल बहुत प्रसन्न हूँ। बीच-बीच में गहन चिन्ताओं के जाल में जकड़ जाती हूँ, इसमें सन्देह नहीं, पर फिर भी अलेक्से के साथ देहात की एकान्त शान्ति में स्वतन्त्रतापूर्वक रहने से मैं बहुत सुखी हूँ।"

डाली ने कहा—"तुम्हें सुखी देखकर मुझे सचमुच बहुत प्रसन्नता हुई है। इतने दिनों तक तुमने मुझे अपने सम्बन्ध में एक भी पत्र नहीं भेजा, इसका कारण क्या है?"

मुझे साहस नहीं हुआ, डाली, नहीं तो भला मैं तुम्हें क्यों पत्र न भेजती! तुम जानती हो, समाज इस समय मुझे किस दृष्टि से देखता है?"

"तुम नहीं जानती हो, आना कि मैं तुम्हें किस दृष्टि से देखती हूँ। मैं तुम्हारे सम्बन्ध में क्या सोचती हूँ, जानती हो? मैं तुम्हें—मैं तुमसे प्रेम करती हूँ, आना! इससे अधिक और मैं कुछ नहीं जानती।" डाली जो बात कहने जा रही थी, उसे कुछ सोचकर टाल गई।

रास्ते में दूर-दूर तक फैली हुई बड़ी-बड़ी इमारतें देखकर डाली ने कहा—"यहाँ तो एक पूरा शहर बसा दिया गया है!"

आना अन्यमनस्क होकर कुछ सोच रही थी। वह कुछ न बोली। जब वे लोग मकान पर पहुँचे, तब डाली को बहुत बढ़िया फ़ार्नीचर से सुसज्जित एक ठाठदार कमरा दिया गया। कुछ समय बाद आना अपने कपड़े बदलकर फिर डाली के पास आई और उसे अपनी

प्यारी लड़की 'एनी' के कमरे में ले गई। एनी बहुत स्वस्थ और सुन्दर दिखाई देती थी और घुटनों के बल चलते हुए बहुत प्रसन्नता प्रकट कर रही थी। उसके पालन-पोषण का ऐसा विराट् आयोजन ब्रान्सकी ने कर रखा था कि डाली देखकर दंग रह गई।

ब्रान्सकी डाली से एकान्त में बातें करने के लिए बहुत उत्सुक था। एक बार सुयोग पाकर वह उसे अपने साथ टहलने के लिए ले गया। रास्ते में उसने आना की चर्चा चलाई। उसने कहा—"आना वर्त्तमान परिस्थिति में बहुत प्रसन्न है, इसमें सन्देह नहीं; और मैं भी बहुत प्रसन्न हूँ। पर एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय के प्रति वह एकदम उदासीन मालूम होती है। आप तो जानती ही हैं, दार्या अलेग्ज़ेण्ड्रोवना, कि हम दोनों अब सदा के लिए प्रेम के पवित्र बन्धन में बँध चुके हैं। पर जिस स्थिति में हम लोग इस समय हैं, वह अत्यन्त विचित्र और हास्यास्पद-सी हो उठी है। आप जानती हैं कि हमारी लड़की एनी अभी तक केरेनिना ही समझी जाती है। यदि भगवान् हमें कुछ समय बाद एक लड़का देगा, तो वह भी केरेनिना ही कहा जायगा और वह मेरी सम्पत्ति का अधिकारी नहीं होगा। पर आना इस सम्बन्ध में ध्यान नहीं देना चाहती।"

डाली ने पूछा—"पर आना इस सम्बन्ध में कर ही क्या सकती है?"

"आना सब कुछ कर सकती है। आपको मालूम होना चाहिए कि केरेनिन तलाक़ के लिए राज़ी हो गया था; शर्त यह थी कि आना स्वयं इस बात के लिए उसे एक पत्र लिखकर अनुरोध करे। पर आना उसकी कृपा-भिक्षा नहीं चाहती, और इस सम्बन्ध में उसे पत्र लिखने को वह किसी हालत में भी तैयार नहीं है। केरेनिन यदि सहृदय होता, तो वह बिना आना के अनुरोध के ही तलाक़ दे देता। पर वह भयंकर रूप से प्रतिहिंसा-परायण हो उठा है, और आना जब तक उसे नहीं लिखेगी तब तक वह कभी अपने आप तलाक़ नहीं देगा।"

रात को भोजन के बाद जब डाली अपने सोने के कमरे में गई, तब आना उससे एकान्त में बातें करने के लिए उसके पास जा पहुँची। उसने पहले किटी का कुशल-समाचार पूछा और कहा—"किटी क्या अभी तक मुझसे असन्तुष्ट है? क्या उसने मुझे क्षमा नहीं किया है? उसका पति कैसा है?"

डाली ने उत्तर दिया—"किटी तुम्हारे प्रति वैर-भाव नहीं रखती। वह बहुत प्रसन्न है। उसको जैसा सुन्दर और गुणवान् पति मिला है, वैसा शायद ही किसी को मिल सके!"

"शायद ही किसी को मिल सके! ठीक है! ठीक है! अच्छा बताओ, डाली, अलेक्से के साथ तुम्हारी क्या बातें हुईं?"

डाली ने आना के मुख के व्यस्त और उत्तेजित भाव पर ध्यान देते हुए कहा—"उसने तलाक़ की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है। उसका कहना है तुम क़ानून के अनुसार उसके साथ विवाह करके उसकी पत्नी बन जाओ। यह तभी हो सकता है जब तुम तलाक़ के लिए अपने पूर्व पति से अनुरोध करो। वर्त्तमान स्थिति में तुम्हारे जो भी बच्चे होंगे, वे सब नाजायज़ ठहराये जावेंगे और वे व्रान्सकी की सम्पत्ति के उत्तराधिकारी नहीं हो सकेंगे।"

आना ने अपनी आँखें एक विचित्र ढंग से मीचते हुए अनमने भाव से उत्तर दिया—"ठीक है! पर मैं तलाक़ के लिए कभी अनुरोध नहीं करूँगी। यह असम्भव है। साथ ही यह भी जान लो कि अब भविष्य में मेरे कोई बच्चा उत्पन्न नहीं होगा! मैंने इस सम्बन्ध में डाक्टरों से सलाह...."

पर डाली के मुख पर अत्यन्त विस्मय का भाव देखकर वह चुप हो गई। वास्तव में आना के समान सहृदय नारी गर्भ-निरोध के अप्राकृतिक और अमानुषिक उपाय काम में ला सकती है, यह बात इसके पहले डाली के लिए कल्पनातीत थी।

आना ने डाली के जिज्ञासुभाव को सन्तुष्ट करने के लिए कहा—"तुम जानती हो, डाली, मेरी वर्त्तमान परिस्थिति में मेरे लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मैं अपने प्रति अपने पति का—वास्तव में वह मेरा पति ही है—प्रेम किसी हालत में भी कम न होने दूँ। यदि मैं गर्भवती होती रहूँगी तो निश्चय ही मेरा सौन्दर्य और यौवन नष्ट हो जायगा, और—और तुम पुरुषों की प्रकृति से परिचित ही हो, वे किसी भी नष्ट-यौवना स्त्री के साथ अधिक समय तक प्रेम-सम्बन्ध नहीं निभा सकते!"

डाली आना के मुख से इस प्रकार की बात सुनकर आतङ्क से काँप उठी। वह सोचने लगी कि आना अब क्या से क्या हो गई! वह यह भी जानती थी कि आना का अन्तस्तल कभी इस प्रकार की बातों को पसन्द नहीं कर सकता, पर जिस असाधारण परिस्थिति में भाग्य ने उसे डाल दिया है, उसके कारण वह शारीरिक, नैतिक

तथा आध्यात्मिक, सभी दृष्टिकोणों से गिरने लगी है। वह यह भी समझ गई कि बाहर से आना भले ही प्रसन्न दिखाई दे, पर भीतर से असंख्य कंटकों से बिंधती चली जाती है।

दूसरे ही दिन डाली वहाँ से लेविन के यहाँ वापस चली गई। उसके मन में अपने सम्बन्ध में रोमान्स की जो कल्पनायें उदित हुई थीं, वे सब लुप्त हो गईं। आना की दयनीय दशा देखकर उसके मन में यह ध्रुव धारणा हो गई कि उसका वैचित्र्यहीन पारिवारिक जीवन सबसे अच्छा है।

३०

व्रान्सकी देहात में उकताने लगा था। यद्यपि दोनों ने यह निश्चय कर लिया था कि वे बराबर देहात में ही जीवन बिताया करेंगे, शहर में नहीं जावेंगे; पर इस प्रतिज्ञा का निभाना व्रान्सकी के लिए बहुत कठिन हो उठा। वह किसी बहाने से कुछ समय के लिए देहाती जीवन की एकरसता से मुक्ति पाना चाहता था। ज़िला-कौंसिलों के चुनाव के सिलसिले में उसने मास्को जाने का निश्चय किया। आना को स्वभावतः यह बात बहुत नागवार मालूम हुई कि वह उसे अकेली छोड़कर सैर-सपाटे के लिए जा रहा है। पर अपने क्रोध को मन ही मन पीकर उसने शान्त भाव दिखाया। व्रान्सकी उसका रुख देखकर समझ गया कि वह भीतर से बहुत असन्तुष्ट हो उठी है। पर उसने अपने मन को यह कहकर समझाया—"मैं उसके लिए सब-कुछ त्याग कर सकता हूँ, पर अपनी स्वतंत्रता का बलिदान नहीं कर सकता।"

व्रान्सकी के चले जाने पर आना जब अकेली रह गई, तब तरह-तरह की कल्पनायें उसके मन में उदित होने लगीं। उसके मन में यह विश्वास जमने लगा कि निश्चय ही अब व्रान्सकी उससे उकताने लगा है। इस कल्पना से वह आतङ्कित होकर सिहर उठी।

व्रान्सकी की अनुपस्थिति में एक भी दिन व्यतीत करना उसके लिए दूभर हो गया। रात में तरह-तरह की भयानक चिन्ताओं से उसे नींद नहीं आ पाती थी, इसलिए उसने 'मार्फ़िया' खाना आरम्भ कर दिया। उसे विश्वास था कि व्रान्सकी पाँचवें दिन अवश्य ही लौट आवेगा। पर जब वह छठे दिन भी न आया, तब वह अत्यन्त व्याकुल, चञ्चल और उत्तेजित हो उठी। इसी बीच उसकी लड़की की तबीअत कुछ खराब हो गई। उसे बहाना मिल गया, और उसने व्रान्सकी को एक पत्र भेजा, जिसमें लिखा था कि एनी सख़्त बीमार है, और साथ ही यह उलटी बात भी लिख दी कि वह (आना) व्रान्सकी के बिना बेचैन है, और उससे मिलने मास्को आना चाहती है। पर एनी उसी दिन चंगी हो गई थी।

व्रान्सकी जब मास्को से लौटकर आया, तब आते ही उसने पूछा—"एनी का क्या हाल है?"

"अब अच्छी है!"

"तुम्हारा पत्र बड़ा विचित्र था! एक ओर तुमने लिखा था कि एनी बीमार है, और साथ ही तुम स्वयं मेरे पास आना चाहती थीं!"

"तो तुम क्या यह सन्देह करते हो कि एनी बीमार नहीं थी?"

"नहीं, मैं कुछ भी सन्देह नहीं करता!"

"तुम अवश्य करते हो, तुम्हारा चेहरा यह बता रहा है!"

बस, इसी बात को लेकर दोनों में काफ़ी देर तक कटुतापूर्ण वाद-विवाद होता रहा। अन्त में आना ने कहा—"तुम्हें मुझे अकेली छोड़कर मास्को जाने का कोई अधिकार नहीं है। मैं जानती हूँ, तुम समाज के डर से मुझे अपने साथ नहीं ले जाते! अब से मैं ऐसा नहीं होने दूँगी। या तो हम लोग एक-दूसरे से एकदम अलग हो जायँ, या एक साथ रहें। तुम्हें यदि यह शिकायत है कि तलाक़ न हो सकने के कारण मैंने तुम्हें उलझन में डाल रखा है, तो मैं आज ही तलाक़ के लिए लिखती हूँ।"

व्रान्सकी को आना के बोलने का ढंग तनिक भी पसन्द न आया। पर बाहर से उसने प्रसन्नता का भाव दिखाने की चेष्टा की।

आना ने केरेनिन को एक पत्र लिख दिया, जिसमें तलाक़ के लिए प्रार्थना की गई थी। इसके बाद वह व्रान्सकी के साथ मास्को चली गई। मास्को में प्रतिदिन केरेनिन के उत्तर की प्रतीक्षा करते हुए वे दोनों नियमित रूप से पति-पत्नी की तरह जीवन बिताने लगे; पर दोनों के बीच असन्तोष बढ़ता चला जाता था। आना इस कारण से असन्तुष्ट थी कि व्रान्सकी का प्रेम उसके प्रति पहले से बहुत ढीला पड़ गया था; और व्रान्सकी उससे इस कारण से असन्तुष्ट था कि उसकी खातिर उसने अपने को संकटपूर्ण परिस्थिति में डाल रखा था, और वह उस जटिल स्थिति को सुलझाने के बदले अपने उत्तेजनापूर्ण व्यवहार से उसे और अधिक उलझा रही थी। इस कारण छोटी-सी छोटी बात को लेकर दोनों में वाद-विवाद और झगड़ा होने लगता था।

आना के मन में यह सन्देह होने लगा था कि व्रान्सकी उससे उकताकर अपने परिचय की दूसरी स्त्रियों अथवा वेश्याओं के साथ प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करने लगा है। इस कल्पना से उसकी मानसिक पीड़ा

बहुत बढ़ गई थी। वह सोचती कि जिस व्यक्ति के लिए उसने इतना त्याग किया है, घर छोड़ा, बार छोड़ा और अपने प्यारे पुत्र तक को त्याग दिया, अन्त में वह उसे धोखा देने पर तुला हुआ है! इस तरह की बात सोचते-सोचते उसका मस्तिष्क इस क़दर उत्तेजित हो उठता कि वह पागल-सी बन जाती।

इस प्रकार की भयङ्कर कल्पना से मुक्ति पाने के लिए आना अपनी चिन्ता की धारा बदलने की चेष्टा करने लगती, और मन ही मन कहती—"नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। यह सब मेरा भ्रम है, मेरे उत्तेजित मस्तिष्क की कल्पना है। वह बहुत सच्चा और सहृदय है। वह मुझसे प्रेम करता है। मैं भी उससे प्रेम करती हूँ। कुछ ही दिनों बाद जब मुझे तलाक़ मिल जायगा, तब फिर हम दोनों बहुत सुखपूर्वक रहेंगे। मैं व्यर्थ ही बात-बात में अलेक्से से बिगड़ बैठती हूँ, यह मेरा ही दोष है। मैं इसके लिए उससे क्षमा माँग लूँगी।"

पर व्रान्सकी से बातें होते ही, उसकी रुखाई से परिचित होने पर आना का चित्त फिर उत्तेजित हो उठता और वह फिर उससे उलझने लगती। उस दिन व्रान्सकी दिन भर बाहर रहने के बाद जब रात को लौटा, तब आना ने उससे प्रस्ताव किया कि परसों देहात को वापस चला जाय। व्रान्सकी ने उस प्रस्ताव को टालना चाहा। उसने कहा—"परसों रविवार है, और उस दिन मुझे एक आवश्यक काम से मा से मिलना है।"

इतने दिनों तक व्रान्सकी अपनी मा के प्रति उदासीन था, यह बात आना खूब अच्छी तरह से जानती थी; इसलिए अकस्मात् उसके मन में मातृभक्ति का भाव उमड़ने का कारण क्या है, इस बात का अनुमान लगाने पर उसे तत्काल प्रिन्सेस सोरोकिना की याद आगई। वह व्रान्सकी की मा के साथ मास्को के निकट रहती थी। निश्चय ही व्रान्सकी उस नौजवान छोकरी के फेर में पड़ गया है! ईर्ष्या की धधकती हुई ज्वाला आना के हृदय को अत्यन्त निष्ठुरता के साथ जलाने लगी। फिर भी अपने को यथाशक्ति सँभालते हुए उसने कहा—"तुम वहाँ कल जाकर वापस आ सकते हो।"

"नहीं, यह असम्भव है। जिस काम के लिए मैं जाना चाहता हूँ वह परसों ही हो सकता है!"

"तुम झूठे हो!"

"आना, प्रत्येक बात की एक सीमा होती है!"

"तुम केवल झूठे ही नहीं, हृदयहीन भी हो!"

"नहीं! तुम्हारी इस प्रकार की बातें अब अधिक नहीं सही जा सकतीं!"

"ठीक है, ठीक है! मुझे त्याग दो! त्याग दो! मैं कल ही चली जाऊँगी। मैं तुम्हारी कौन होती हूँ! मैं एक व्यभिचारिणी स्त्री के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हूँ। मैं केवल तुम्हारी आँखों का काँटा और सिर का बोझ हूँ। मैं जानती हूँ, तुम अब किसी दूसरी स्त्री को चाहने लगे हो!" यह कहते हुए आना फफक-फफककर रोने लगी। वह सोचने लगी कि एनी के जन्म के समय जब वह बीमार पड़ी थी, उसी समय उसकी मृत्यु क्यों नहीं हो गई! यह सोचते हुए उसे सहसा केरेनिन की और सेरेज़ा की याद आगई। उसके कारण उन दोनों को समाज के आगे अत्यन्त लज्जित, संकुचित और अपमानित होना पड़ा है! यदि उसकी मृत्यु हो जाय तो वे दोनों अपना सिर ऊँचा करने में समर्थ हो सकेंगे। और व्रान्सकी भी उसके मरने के बाद उसके कारण दुःखित होगा, पछतावेगा और उसे याद करता रहेगा। इस प्रकार अपनी मृत्यु की कल्पना करते-करते वह एक दूसरे ही लोक में पहुँच गई।

इतने में व्रान्सकी ने उसके निकट आकर उसे चुमकारकर शान्त करने की चेष्टा की, और उसे यह विश्वास दिलाया कि वह उसे छोड़कर किसी दूसरी स्त्री के साथ न प्रेम करता है, और न करने की इच्छा रखता है। यह कहते हुए वास्तव में उसके मुख पर प्रेम की झलक दिखाई दी। आना उस झलक को देखकर सब कुछ भूल गई और पागल प्यार के साथ उससे लिपट गई।

३१

लेविन और किटी को मास्को आये दो मास हो गये थे। लेविन इस बात पर ध्यान दे रहा था कि किटी के स्वभाव से नवयौवन की चञ्चलता धीरे-धीरे हटती चली जाती थी, और उसके स्थान में एक सुन्दर सुमधुर और शान्त गंभीरता का आभास दिखाई देने लगा था। निकोलस की मृत्यु के पूर्व किटी ने उसकी जो सेवा की थी, छूत के घातक रोग के भयंकर वातावरण में तनिक भी विचलित न होकर उसने जिस धीरता के साथ अपना कर्त्तव्य निभाया था, उसे देखकर लेविन के मन में उसके प्रति दिन पर दिन श्रद्धा का भाव बढ़ता चला जाता था। मास्को में एक और विशेष बात पर लेविन ने ध्यान दिया। वह यह कि पहले जिन छोटी-छोटी बातों के लिए किटी के और उसके बीच में व्यर्थ का वाद-विवाद उठ खड़ा होता था, अब वैसा नहीं होता था। दोनों एक दूसरे की सलाह और सम्मति का आदर करने लगे थे।

केवल एक बात इस बीच ऐसी आ पड़ी जिससे दोनों, पति-पत्नी, के मन में क्षणिक असन्तोष का भाव जाग पड़ा। आना और व्रान्सकी मास्को आये हुए हैं, यह बात दोनों को मालूम हो चुकी थी। लेविन नहीं चाहता था कि व्रान्सकी से किटी की भेंट हो। किटी भी यही चाहती थी। पर एक दिन संयोग से किटी की धर्म-माता, प्रिन्सेस बोरिसोवना के यहाँ व्रान्सकी से किटी की भेंट हो गई। व्रान्सकी को देखते ही किटी के मन में क्षणकाल के लिए पूर्व वेदना जाग पड़ी और उसके मुख पर लालिमा छा गई। पर शीघ्र ही उसने अपने को सँभाल लिया, और उसके प्रति उसने न तो आक्रोश का भाव प्रकट होने दिया, न लज्जा का और न किसी प्रकार की वेदना का। व्रान्सकी जब प्रिन्सेस बोरिसोवना से बातें कर रहा था, तब वह सहजभाव से उसकी बातें सुन रही थी और परिहास की बातों पर शिष्टाचारपूर्वक मुसकरा भी देती थी। अन्त में जब व्रान्सकी ने जाते समय सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया, तब किटी ने सहज शान्त रूप से उसकी ओर देखा। देखा केवल इसलिए कि न देखने से अशिष्टता प्रकट होती।

किटी को व्रान्सकी के प्रति अपने सहज व्यवहार से यह विश्वास हो गया कि अब उसके स्वभाव में पहले का-सा तूफ़ानी आवेग न रहा, जो तनिक-सी बात से उसे हर्षाकुल कर देता था और तनिक-सी बात से वेदना-विह्वल। उसका स्वभाव अब बहुत-कुछ स्थिर, शान्त, संयत और सामञ्जस्यपूर्ण हो चला था। कुछ ही समय के भीतर उसे जीवन का ऐसा यथार्थ अनुभव हो चुका था कि अब वह किसी भी बात से सहज में विचलित नहीं हो सकती थी। उसे अपनी प्रकृति की इस नई विशेषता पर ऐसा निश्चय हो गया था कि उसने लेविन से व्रान्सकी के मिलने की बात विस्तारपूर्वक कह डाली। लेविन को उसे सुनकर बहुत कष्ट हुआ। व्रान्सकी से मिलने पर किटी विचलित नहीं हो सकती, इस बात पर पहले उसे विश्वास न हुआ। पर बाद को जब उसने किटी की सहज, स्निग्ध आँखों में सचाई और सहृदयता के अतिरिक्त और कुछ नहीं पाया, तो वह शान्त हो गया।

भाग्य की विडम्बना ऐसी हुई कि जिस प्रकार किटी की भेंट व्रान्सकी से हो गई थी, उसी प्रकार लेविन की भेंट आना से हो गई। एक दिन आब्लान्सकी के साथ एक क्लब में खान-पान होने के बाद आब्लान्सकी का प्रस्ताव मानकर लेविन आना से मिलने चला गया। किटी क्या सोचेगी, इस विचार से वह जाना नहीं चाहता था। पर आब्लान्सकी प्रायः हठपूर्वक उसे आना के पास ले गया। लेविन ने आना की सुन्दरता की प्रशंसा बहुत पहले से सुन रखी थी। फिर भी जब उसने प्रत्यक्ष रूप से आना को देखा, तब वह मुग्ध और चकित रह गया। आना का अनुपम सौन्दर्य और मनोमोहक व्यक्तित्व उसे एकदम अप्रत्याशित-सा लगा। आना ने अपने मुख पर सहज स्वाभाविक मुसकान झलकाकर बड़ी मधुरता से लेविन का स्वागत करते हुए कहा—"आपसे मिलकर मुझे इतनी अधिक प्रसन्नता हुई है कि मैं कह नहीं सकती। स्टीवा से आपकी मित्रता और किटी से आपका विवाहित संबंध होने के कारण मैं पहले से ही आपके सम्बन्ध में काफ़ी जानकारी रखती थी, और एक बार आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक थी। किटी से मेरा परिचय बहुत थोड़ा रहा है, पर उतने ही परिचय से उसके सुन्दर और सुकोमल फूल के समान मनोहर व्यक्तित्व ने मेरे मन पर स्थायी प्रभाव डाल दिया है।"

आना का एक-एक शब्द वीणा के झंकार के समान था, और ऐसी आश्चर्यमयी नारी के मुख से अपने और किटी के सम्बन्ध में इस प्रकार की बातें सुनकर लेविन अपने को सप्तम स्वर्ग में समझने

लगा। सामने दीवार पर आना का जीवनाकार चित्र, जो कि एक प्रसिद्ध कलाकार-द्वारा अंकित किया गया था, टँगा था। लेविन कभी उस चित्र को विस्मय-विमुग्ध दृष्टि से देखता था और कभी अपने सामने बैठी हुई उसकी सजीव प्रतिमूर्त्ति को। आना को उसके इस चकित भाव से बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। अपने चित्र में लेविन की दिलचस्पी देखकर आना ने चित्रकला की चर्चा चला दी। एक विशेष चित्रकार की कला को लेकर वाद-विवाद प्रारम्भ हुआ और उसके बाद चित्रकला और साहित्य के विभिन्न रूपों और विशेषताओं पर विचारों का आदान-प्रदान होने लगा। विभिन्न विषयों में आना की विशेषज्ञता का परिचय पाकर उसके सम्बन्ध में लेविन का आश्चर्य और अधिक बढ़ा। आना सब समय सहज, शान्त और मधुर स्वर में बातें करती रही। लेविन उससे मिलने के पहले उसे एक भ्रष्टा नारी के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझता था। पर आज उससे मिलने पर उसके शील-स्वभाव, रंग-ढंग और बात-व्यवहार का ऐसा प्रभाव उस पर पड़ा कि उसकी धारणा ही मूलतः बदल गई। उसके प्रति एक करुणा-मिश्रित श्रद्धा का भाव लेविन के मन में जाग पड़ा।

जब लेविन जाने लगा, तब आना ने बड़े स्नेह से उसका हाथ पकड़कर मोह-मधुर मुसकान से उसकी ओर देखते हुए कहा—"आपसे बातें करके मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। अपनी पत्नी से कह दीजिएगा कि मैं प्रारम्भ से ही उसे स्नेह-दृष्टि से देखती आई हूँ और देखती रहूँगी। यदि वह मेरी वर्त्तमान परिस्थिति में मुझे क्षमा नहीं कर सकती, तो मैं चाहती हूँ कि वह मुझे कभी क्षमा न करे। कारण यह है कि मुझे क्षमा करने के लिए उसे उन सब अनुभवों को पार करना होगा, जो मुझे पार करने पड़ रहे हैं। भगवान् उसे उन अनुभवों से बचाये, मैं केवल इतना ही कह सकती हूँ।" यह कहते हुए आना के मुख की मुसकान एक प्रगाढ़ विषाद की छाया में बदल गई थी।

लेविन से कुछ उत्तर देते न बना। उसने संकुचित भाव से कहा—"मैं अवश्य ही उससे कहूँगा।"

लौटते समय रास्ते में उसने आब्लान्सकी से कहा—"वास्तव में तुम्हारी बहन एक असाधारण नारी है। मैं केवल उसकी बुद्धि के लिए ही यह बात नहीं कह रहा हूँ, बल्कि उसकी सहृदयता में भी एक अपूर्व विशेषता मैंने पाई है। पर वह स्वयं भीतर ही भीतर बहुत भयङ्कर रूप से दुःख पा रही है, ऐसा जान पड़ता है!"

घर आकर जब लेविन ने आना से अपनी भेंट की बात किटी से कही, तब किटी ने यद्यपि बाहर से उदासीनता का भाव प्रकट करना चाहा, तथापि उसके मर्म में एक कटीली वेदना की लहर दौड़ गई। लेविन ने उसके हृदय के यथार्थ भाव के प्रति तनिक भी ध्यान न देते हुए कहा—"वह बहुत ही सुन्दर और सहृदय नारी है। उसका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक है; और वह क्रोध करने योग्य नहीं, बल्कि करुणा के योग्य है।" यह कहकर वह कपड़े बदलने के लिए दूसरे कमरे में चला गया।

जब वह वापस आया, तब उसने देखा कि किटी स्तब्ध अवस्था में बैठी है। जब वह किटी के एकदम निकट पहुँचा तब किटी ने एक बार ध्यानपूर्वक उसकी आँखों की ओर देखा, और सहसा वह सिसक-सिसककर रोने लगी।

"क्यों, क्यों, क्या बात हो गई ?"—लेविन ने घबराकर पूछा।

"तुम उस दुष्टा स्त्री के मोहजाल में फँस गये हो। तुम पर उसने जादू डाल दिया है। तुम्हारी आँखें इस बात की गवाही दे रही हैं। क्लब में जाकर तुम जुआ खेलते रहे, शराब पीते रहे, और उसके बाद उस कुलटा स्त्री के घर जा पहुँचे!"

लेविन को उसे समझाना और मनाना कठिन हो गया। बहुत देर के बाद किटी शान्त हुई। लेविन ने स्वीकार किया कि उसने थोड़ी-सी शराब पी थी, और उसके प्रभाव से आना के आकर्षक व्यक्तित्व ने उसे चलायमान कर दिया। उसने वचन दिया कि भविष्य में कभी वह इस प्रकार के चक्करों में नहीं पड़ेगा।

× × ×

इस घटना के कुछ ही समय बाद किटी ने एक लड़के को जन्म दिया। उसकी प्रसव-पीड़ा से लेविन इस क़दर घबरा उठा था कि उसका मस्तिष्क अपने ठिकाने पर न था। भगवान् का नाम लेते हुए उसने वह घोर संकट का समय किसी प्रकार बिताया। अन्त में जब किटी ने बच्चे को जन्म दिया और लेविन ने देखा कि उसकी जान बच गई है, तब उसने चैन की लंबी साँस ली।

लेविन ने जब उस नन्हे से बच्चे को देखा, तब अपने कुटुम्ब में उस अज्ञात, रहस्यमय लोक के निवासी नये प्राणी के आविर्भाव से उसके मन की भावना में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन होने लगा। एक हर्षपूर्ण विस्मय और सम्भ्रम के भाव से उसकी आत्मा हिल्लोलित हो उठी। किटी के मुख का भाव देखकर ऐसा जान पड़ता था, जैसे

उसके युगों की कठिन साधना आज साकार रूप से सफल हो उठी हो। वह वास्तव में ऐसा अनुभव कर रही थी कि उसके नारीत्व के चरम उद्देश्य की पूर्ति हो गई है। उसके पुलकप्रद आनन्द का घड़ा आकण्ठ भरा हुआ था, और उस घड़े के छलकने की कोई आशंका नहीं दिखाई देती थी।

लेविन के अन्तर में जो एक निराली अनुभूति जागरित हो रही थी, उसका ठीक-ठीक स्वरूप वह स्वय नहीं समझ पा रहा था। केवल इतना वह जान गया था कि अपने भाई, निकोलस, की मृत्यु के समय जिस प्रकार का आध्यात्मिक अनुभव उसे हुआ था, बच्चे के जन्म ने उसी से मिलती-जुलती अनुभूति को जगाया है। अन्तर केवल यह था कि पहली अनुभूति शोकमूलक थी और दूसरी हर्षोत्पादिनी। पर दोनों अनुभूतियाँ रात-दिन की साधारण अनुभूतियों से एकदम परे, बहुत ऊँची अथवा बहुत गहरी सतह से उत्थित हुई थीं।

पुत्र-जन्म का उत्सव मनाने में लेविन के सभी सगे-सम्बन्धियों तथा मित्रों ने सहयोग दिया। किटी एक ओर अपने नवजात शिशु के पालन-पोषण में रत रहकर और दूसरी ओर अपने प्रेम-परायण पति के सुन्दर और सुखद स्नेह-सम्बन्ध से जीवन की सरसता प्राप्त करते हुए स्निग्ध और सुमंगल शान्ति के साथ अपना जीवन बिताने लगी। लेविन दिन पर दिन जीवन के गहन मर्म को समझकर पारिवारिक जीवन की शान्ति और शृखला को निभाते हुए, विश्व-जीवन के मूल में निहित आध्यात्मिकता का महत्त्व समझने की चेष्टा करता चला गया।

३२

कटु वाद-विवाद के पश्चात् व्रान्सकी और आना में जब फिर से समझौता हो गया, तब दूसरे दिन प्रातःकाल आना मास्को से जाने की तैयारियाँ करने लगी। वह बक्सों में कपड़े तथा दूसरी चीजें सजाकर रखने लगी। इतने में व्रान्सकी ने आकर कहा—"मैं मा के पास जा रहा हूँ। रुपयों का प्रबन्ध करना है। वह कर देगी, मुझे इस बात की पूरी आशा है। आज प्रबन्ध हो जाने से हम लोग कल जाने में समर्थ हो सकेंगे।"

कुछ देर बाद दोनों भोजन करने बैठे। आना शान्त और स्थिर भाव से बातें करने की चेष्टा कर रही थी। इतने में एक नौकर ने आकर व्रान्सकी ने एक तार की रसीद माँगी जो पीटर्सबर्ग से आया था। व्रान्सकी ने नौकर से कह दिया कि रसीद उसके लिखन-पढ़ने के कमरे में रक्खी हुई है। स्पष्ट ही व्रान्सकी ने उस तार को आना से छिपाना चाहा था। आना ने पूछा—"किसने भेजा है वह तार ?"

"स्टीवा ने भेजा है। मैंने तुम्हें इसलिए नहीं दिखाया कि कोई विशेष महत्त्व की बात उसमें नहीं लिखी थी। फिर भी तुम पढ़ लो।" आना ने पढ़ा। उसमें लिखा था कि वह यद्यपि तलाक़ के लिए पूरी चेष्टा कर रहा है, पर केरेनिन के राज़ी होने की सम्भावना बहुत कम दिखाई देती है।

आना का हृदय उसे पढ़कर धड़कने लगा था। पर उसने शान्त-स्वर में कहा—"मैं तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ कि मैं तलाक़ के सम्बन्ध में उदासीन हूँ। इसलिए इस तार को मुझसे छिपाने की कोई आवश्यकता न थी।" वह अपने मन में सोचने लगी—"व्रान्सकी जिन दूसरी स्त्रियों को चाहने लगा है, उनके प्रेम-पत्रों को भी यह मुझसे इसी प्रकार छिपाता होगा!" इसके बाद उसने फिर कहा—"तुम इस विषय को इतना महत्त्व क्यों देते हो, यह मेरी समझ में नहीं आता!"

व्रान्सकी ने उत्तर दिया—"मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी वर्त्तमान अनिश्चित स्थिति निश्चित और व्यवस्थित हो जाय। यह तभी हो सकता है जब तुम्हारा पति तुम्हें तलाक़ दे।"

"जब तक हम दोनों के बीच में प्रेम बना रहेगा, तब तक मेरी स्थिति निश्चित और व्यवस्थित रहेगी।"

'प्रेम' का उल्लेख होते ही व्रान्सकी मन ही मन कुढ़ उठा। अब वह इस शब्द से घबराने लगा था। उसने कहा—"तुम्हारी बात मैं मानता हूँ, पर तुम्हारे और भविष्य में होनेवाले तुम्हारे बच्चों के स्वार्थ के लिए तलाक़ की आवश्यकता है।"

"इस सम्बन्ध में तुम निश्चिन्त रहो। भविष्य में मेरे कोई बच्चा उत्पन्न नहीं होगा। तुम्हें मेरे बच्चों का इतना ख़याल है, पर मेरे सम्बन्ध में तुम कुछ भी नहीं सोचते।" वह यह बात भूल गई कि व्रान्सकी ने "तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के लिए" कहा था।

"मुझे सबसे पहले तुम्हारे स्वार्थ का ख़याल है। यह बात मैं पहले ही कह चुका हूँ। तुम्हारे हित के लिए ही मैं कहता हूँ कि तुम्हारी वर्त्तमान अनिश्चित स्थिति किसी प्रकार भी ठीक नहीं है।"

"हुँह! मेरी 'अनिश्चित स्थिति!' अनिश्चित क्यों? जब तक मेरे प्रति तुम्हारा भाव निष्कपट और सहृदय है, तब तक मेरी स्थिति कभी अनिश्चित नहीं हो सकती।"

"तुम यह सोचती हो कि मैं स्वतन्त्र हूँ।"

"मैं समझी! तुम्हारे ऊपर तुम्हारी मा का बन्धन है, यही न! पर इस सम्बन्ध में भी तुम निश्चिन्त रहो। मुझे अब इस बात की तनिक भी परवा नहीं है कि तुम्हारी मा तुम्हारा विवाह किससे करना चाहती हैं और किससे नहीं। किसी हृदयहीन स्त्री से, चाहे वह तुम्हारी माता हो, चाहे कोई और, मैं किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहती।"

"देखो आना, मैं इस सम्बन्ध में तुमसे यह निवेदन कर देना चाहता हूँ कि मेरी मा के सम्बन्ध में तुम अनादरसूचक शब्दों को काम में न लाया करो!"

"जिस स्त्री को अपने पुत्र के सुख और मान-मर्यादा का कोई ख़याल नहीं है, उसे मैं हृदयहीन के अतिरिक्त और कुछ नहीं कह सकती।"

"मैं फिर तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरी मा के सम्बन्ध में इस तरह की बातें न किया करो!"

"मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम अपनी मा के प्रति कितनी श्रद्धा रखते हो! परन्तु तुम्हारी जो कुछ श्रद्धा या प्रेम है, वह केवल

तुम्हारे शब्दों में रहता है, अन्तःकरण में नहीं !" यह कहते हुए आना घृणा की दृष्टि से उसकी ओर देख रही थी।

व्रान्सकी अत्यन्त उत्तेजित हो उठा। उसने कहा—"यदि यही बात है तो हम दोनों—"

"निश्चय कर लें—मैं निश्चय कर चुकी हूँ।" यह कहकर वह बाहर जाने ही को थी कि इतने में व्रान्सकी का एक मित्र भीतर आ पहुँचा। आना कुछ समय बाद अपने कमरे में चली गई।

मित्र के चले जाने पर व्रान्सकी ने आना के कमरे में जाकर कुछ कहना चाहा। पर आना के मुख का भयङ्कर विषादपूर्ण गंभीर भाव देखकर उसे कुछ कहने का साहस न हुआ और वह चला गया। उसका हृदय क्षण काल के लिए करुणपीड़ित हो उठा। पर फिर आना की कड़ी बातों की याद आने से उसने भी अपना जी कड़ा कर लिया। दिन भर वह बाहर रहा। संध्या को जब लौटकर आया, तब नौकरानी ने उसे सूचित किया कि आना आर्केडेवना के सिर में दर्द है, और वह नहीं चाहती कि व्रान्सकी उसके कमरे में जावे।

आज प्रथम बार दोनों दिन भर के लिए एक-दूसरे से खिंचे रहे। इसके पहले कई बार दोनों में झगड़ा हो चुका था पर वह शीघ्र ही शान्त हो जाता था। पर आज के झगड़े ने कुछ गंभीर रूप धारण कर लिया था। आना ने सोचा था कि उसके मना करने पर भी व्रान्सकी रात में उसके कमरे में आकर उसे मनावेगा। पर व्रान्सकी नहीं आया। वह सोचने लगी—"स्पष्ट ही अब उसका मन मुझसे हट गया है! इस सम्बन्ध में अब सन्देह का लेश भी नहीं रह गया। अच्छी बात है! मैंने भी निश्चय कर लिया है कि अब क्या करना होगा! मैं मरूँगी, निश्चय मरूँगी! तभी उसे पता लगेगा कि उसने मुझे किस निष्ठुरता से सताया है! वह मेरी एक-एक बात को याद करके पछतावेगा, रोवेगा! मैं मरूँगी!" पर मृत्यु की कल्पना करते-करते वह ऐसी आतंकित हो उठी कि अँधेरे कमरे में बत्ती जलाने के लिए दियासलाई खोजने लगी। बत्ती जलाते ही मृत्यु की गहन अन्धकारमयी भावना के स्थान में जीवन की प्रकाश-मयी आशा उसके भीतर जगमगा उठी। "जीवन! जीवन! मैं नहीं मरना चाहती! मैं क्यों मरूँ? वास्तव में यह सब मेरा भ्रम है कि अलेक्से मुझे नहीं चाहता। वह मुझे चाहता है और मैं भी उसे चाहती हूँ। तब इतनी चिन्ता करने और मरने की नौबत क्यों आ पड़ी? आज हम दोनों में झगड़ा अवश्य हुआ है, पर बिना झगड़े

के प्रेम का सुख ही क्या है! कल हम दोनों में फिर मेल हो जावेगा और फिर हम दोनों सुख, शान्ति और प्रेम-पूर्वक रहेंगे।" सोचते-सोचते आना के मन में उसी क्षण व्रान्सकी से मिलने की प्रबल आकांक्षा जाग पड़ी।

वह व्रान्सकी के लिखने-पढ़ने के कमरे में गई। व्रान्सकी निश्चिन्त होकर सो रहा था। आना मोमबत्ती को उसके मुख के पास ले गई। कैसा सुन्दर और प्यारा उसका वह मुख था! वह गद्‌गद हो उठी और प्रेम के आँसू उसके गालों से होकर अविरल गति से नीचे को बहने लगे। कुछ समय तक वह स्थिर भाव से उसके मुख की ओर देखती रही। फिर उसे बिना जगाये चुपचाप अपने कमरे में वापस चली गई।

बहुत देर बाद आना की आँखें लगीं। पर एक भयंकर दुःस्वप्न देखकर वह कुछ ही समय बाद धड़कते हुए हृदय से जाग पड़ी। सवेरा हो गया था। आना ने निश्चय किया कि व्रान्सकी के पास जाकर उससे मिलकर झगड़ा समाप्त करे।

पर ज्यों ही वह उसके पास जाने लगी, त्यों ही एक शानदार गाड़ी दरवाज़े पर आकर ठहरी। एक सुन्दरी नवयुवती ने गाड़ी की खिड़की में से अपना मुख बाहर निकालकर अपने चोबदार को कुछ आदेश दिया। चोबदार ने सामने के दरवाज़े की घंटी बजाई। आना यह सब दृश्य देख रही थी। थोड़ी देर बाद उसने देखा कि व्रान्सकी नीचे उतरकर लड़की के पास गया। लड़की ने उसके हाथ में एक पार्सल दिया। व्रान्सकी ने उससे कुछ कहा और मुसकराने लगा। इसके बाद गाड़ी वापस चली गई। व्रान्सकी ऊपर चला आया।

यह दृश्य देखकर आना की आँखों के आगे से पर्दा साफ़ अलग हट गया। उसकी मानसिक उत्तेजना फिर एक बार तीव्र हो उठी। कल रात में व्रान्सकी के प्रति जो उत्कट ममता उसके मन में जाग पड़ी थी वह एकदम तिरोहित हो गई। उसे इस बात पर आश्चर्य होने लगा कि कल वह दिन भर ऐसे व्यक्ति के साथ एक ही घर में क्यों रही! उसी दम वह व्रान्सकी के कमरे में उसे अपने निश्चय की सूचना देने के लिए गई।

उसे देखते ही व्रान्सकी ने कहा—"वह प्रिन्सेस सोरोकिना थी। मा ने उसके हाथ कुछ ज़रूरी काग़ज़ और रुपये भेजे हैं। तुम्हारे सिर का दर्द कैसा है?"

आना स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखती हुई मौन खड़ी रही। व्रान्सकी ने कुछ क्षण बाद कहा—"हाँ तो, कल हम लोग निश्चित रूप से यहाँ से चल देंगे, क्यों ?"

"अकेले तुम; मैं नहीं।"

"आना, तुम फिर उसी तरह की बातें करने लगीं!"

"हाँ, मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी!"

"उफ़! इस प्रकार की बातें अब असहनीय हो उठी हैं!"

"तुम—तुम्हें पछताना होगा!" यह कहकर वह चली गई। क्रोध और निराशा से उसका हृदय ऊपर तक भरा होने के कारण उसके मुँह से पूरी बात नहीं निकल पाती थी।

व्रान्सकी उसके मुख का निपट हताशभाव देखकर घबरा उठा और कुर्सी के ऊपर उछलकर उसका हाथ पकड़ने की चेष्टा में उसने उसके पीछे दौड़ना चाहा। पर तत्काल वह सँभलकर रुक गया और दाँत पीसकर, जी मसोसकर रह गया। वह मन में सोचने लगा—"मैंने उसे समझाने-बुझाने में कोई बात उठा नहीं रखी है। इतने प्रयत्नों के बाद भी यदि वह खिची रहना चाहती है, तो मैं कुछ नहीं कर सकता।" यह सोचकर वह बाहर जाने की तैयारी करने लगा। थोड़ी देर बाद आना ने उसके पाँवों की आहट सुनी। वह सीढ़ियों से होकर नीचे जा रहा था। आना ने उसे गाड़ी पर बैठते हुए देखा। जब गाड़ी चली गई, तब आना ने अपने मन में कहा—"वह चला गया! तो क्या वास्तव में हम दोनों का संबंध सदा के लिए समाप्त हो गया?" वह खिड़की के पास स्तब्धभाव से खड़ी थी, और एक से एक भयंकर कल्पनायें उसे भूत के समान धर दबाती थीं।

३३

अपनी कल्पनाओं की भौतिक भयंकरता से आतंकित होकर उसने मन ही मन कहा--"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता! मैंने जो निश्चय किया है, वह ऐसा भयानक है कि उसे पूरा करना मेरे लिए असम्भव है।" यह सोचकर उसने बड़े जोर से घंटी बजाई। पर अकेलेपन से वह ऐसी भीत हो उठी थी कि नौकर के आने की प्रतीक्षा न करके स्वयं उसके पास चली गई। उसने कहा--"कौन्ट (ब्रान्सकी) को ढूँढो, वह जहाँ कहीं भी हों!"

नौकर ने उत्तर दिया कि कौन्ट घोड़ों के अड्डे में गया हुआ है। आना ने तत्काल एक 'नोट' लिखा, जो इस प्रकार था--"दोष मेरा ही था। शीघ्र वापस चले आओ--मैं बहुत घबराई हुई हूँ।" नौकर के हाथ में उसे देते हुए आना ने कहा--"शीघ्र किसी आदमी को कौन्ट के पास भेजकर यह 'नोट' उसे देने को कहो।"

जब आदमी चला गया, तब आना सोचने लगी--"मेरा पत्र पहुँचने पर वह दौड़ा चला आवेगा। पर उस छोकरी से बातें करते समय वह जो प्रेमपूर्वक मुसकराया था उसका क्या कारण वह बता सकता है? वह यदि कोई झूठमूठ की बात बनाकर भी मेरे मन को समझा दे, तो ठीक है; पर यदि वह मुझे विश्वास न दिला सके, अथवा स्पष्ट शब्दों में यह स्वीकार कर बैठे कि वह उस छोकरी को चाहता है, तो उस दशा में क्या होगा! उस दशा में मेरे लिए केवल एक ही बात करने को रह जायगी, जिससे मैं बहुत डरती हूँ।"

उसने घड़ी में समय देखा और देखकर अपने मन में कहने लगी--"वह अब आता ही होगा। पर यदि वह न आया? नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। रोने से मेरी आँखें सूज उठी हैं और लाल हो गई हैं, उन्हें धो लेना चाहिए, जिससे वह मुझे देखकर दुखित न होकर प्रसन्न हो उठे। मैंने आज अपने बाल सँवारे हैं या नहीं?" अपने सिर पर हाथ लगाकर उसने देखा। "हाँ, हाँ, मैंने कंघी-चोटी अवश्य की होगी। पर किस समय की? मुझे तो कुछ याद ही नहीं आता। जरा शीशे में देखूँ तो सही।"

अत्यन्त उत्तेजित, चञ्चल और भ्रान्त मानसिक अवस्था में वह एक बहुत बड़े शीशे के पास जा खड़ी हुई। "सामने वह कौन स्त्री खड़ी है?" उसने अपने आपसे कहा—"वह यहाँ कैसे आ गई? अरे, यह क्या? यह क्या सचमुच मैं हूँ? मेरी शक्ल क्या वास्तव में ऐसी भयानक हो गई है? मैं क्या पागल हो गई हूँ, जो अपने आपको नहीं पहचान पाती? नहीं, नहीं, मैं पागल नहीं होना चाहती।" यह सोचकर वह अपने सोने के कमरे में गई। वहाँ उसकी एक नौकरानी पलँग ठीक कर रही थी। आना ने उसे सम्बोधित करते हुए कहा—"अन्नुश्का!" उसने किसी काम के लिए नौकरानी को सम्बोधित नहीं किया था; वह अपने अकेलेपन और अपनी असाधारण रूप से उत्तेजित मानसिक अवस्था से इस क़दर घबरा उठी थी कि किसी भी मनुष्य से बोलकर अपने अन्तर की भौतिकता से छुटकारा पाने और जीवित जगत् के बीच में पहुँचने की उत्कट इच्छा उसके मन में जाग पड़ी थी।

अन्नुश्का ने कहा—"आप डार्या अलेग्ज़ेण्ड्रोवना के पास जाने को कहती थीं?"

"ओ! मैंने क्या यह कहा था? ठीक है, मैं अभी जाती हूँ। फिर उसने सोचा—"पर वह आता ही होगा। मुझे ठहरना होगा। पर वह क्यों मुझे इस दशा में छोड़कर चला गया?" वह खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई और बाहर सड़क की ओर टकटकी लगाये रही। कुछ ही देर बाद उसने गाड़ी को आते देखा। पर उसमें व्रान्सकी नहीं था। जो आदमी उसके पास गया था वह अकेले लौटकर आया और आना के पास आकर उसने कहा—"कौन्ट से मेरी भेंट नहीं हो पाई। वे निज़नी रेल्वे स्टेशन को चले गये थे।"

"तुमने क्या कहा? हाँ, हाँ, ठीक है! तुम्हें कौन्ट नहीं मिला। मैं समझी। अच्छा, जल्दी जाओ, कौन्टेस व्रान्सकाया के देहातवाले मकान में जाकर यह 'नोट' कौन्ट को दे आओ! जाओ अभी! और सुनो, मैं एक तार लिखकर देती हूँ, उसे भी तार-घर में जाकर दे आओ।" यह कहकर उसने इस आशय का तार लिखकर उसे दिया—"तुमसे बहुत आवश्यक बातें करनी हैं, शीघ्र चले आओ।"

जब नौकर 'नोट' और तार लेकर चला गया, तब वह सोचने लगी—"अब मुझे इस बीच क्या करना चाहिए? इस दशा में यहाँ बैठे रहना असम्भव है। मैं डाली के यहाँ जाऊँगी, नहीं तो मैं पागल हो जाऊँगी।"

कपड़े पहनकर जब वह जाने को तैयार हुई, तब उसने अपने सामने अपनी नौकरानी अन्नुश्का को खड़ी देखा। अन्नुश्का की आँखों में अत्यन्त करुणा और समवेदना छलक रही थी। आना रह न सकी। उसके हृदय का रुद्ध क्रन्दन उमड़ पड़ा और वह सिसकियाँ भरती हुई बोली—"अन्नुश्का! तुम्हीं बताओ, अब मैं क्या करूँ!" यह कहकर वह हताशभाव से एक आरामकुर्सी पर बैठ गई।

"आप क्यों इस क़दर घबराई हुई हैं आना आर्कडेवना, बहुत जल्दी सब बातें ठीक रास्ते पर आ जावेंगी।"

"ठीक है, ठीक है, तुम ठीक कहती हो। मैं जाती हूँ, डाली से मिलने।" यह कहकर वह बाहर चली गई और गाड़ी में सवार होकर, उसने कोचवान से आब्लान्सकी के यहाँ चलने को कहा।

मौसम बहुत सुहावना था। सुबह कुछ बूँदाबाँदी होने के बाद धूप निकल आई थी। गाड़ी में बैठे-बैठे आना का हृदय कुछ हलका हो गया। मृत्यु की भयंकर कल्पना, जो इस समय तक उसकी आत्मा को प्रेत की तरह जकड़े थी, अब उसे उतनी विकट नहीं मालूम हो रही थी। वह अब कुछ शान्ति के साथ अपनी परिस्थिति पर विचार करने लगी। वह सोचने लगी—"मैंने उसे लिख दिया है कि दोष मेरा ही है, और वह मुझे क्षमा कर दे। क्यों? मैंने अपने आत्म-सम्मान को क्यों इस हद तक गिरा दिया? क्या मैं सचमुच उसके बिना जी नहीं सकती?" यह सोचते हुए वह दूकानों के 'साइनबोर्डों' को पढ़ने लगी—"आफ़िस और स्टोर्स.... दाँत का सर्जन। ठीक है, मैं डाली से सब बातें साफ़-साफ़ कह दूँगी। वह ब्रान्सकी से घृणा करती है। मैं उससे परामर्श करूँगी कि मुझे क्या करना चाहिए। 'फिलिपोव—रोटीवाला।' मास्को में केक अच्छे बनते हैं।" उसे अपने बचपन की याद आई जब वह 'केक' बहुत पसन्द करती थी। "तब मेरा जीवन कितना सुन्दर, सुखद और चिन्ताहीन था! और अब? मुझे तब क्या पता था कि एक दिन मुझे इस हद तक पतित होना पड़ेगा! वार्निश की दुर्गंध आ रही है। ये लोग क्यों सब समय मकानों में रंग पोतते रहते हैं? 'इस दूकान में बढ़िया सिलाई होती है।' वह एक बहुत बढ़िया कपड़ा मेरे गाउन के लिए लाया था। उसे सिलाना था। पर उसके लाये कपड़े से मुझे क्या वास्ता?" इतने में एक आदमी ने उसे देखकर सिर झुकाकर उसके प्रति सम्मान किया। वह अन्नुश्का का पति था। वह सोचने लगी—"ब्रान्सकी उसे 'हमारा उपग्रह' कहा करता है। पर 'हमारा' क्यों? मैं अब उसकी क्या होती हूँ! पर डाली अपने मन

में क्या सोचेगी? वह सोचेगी कि मैं एक पति को छोड़कर दूसरे के पास गई और दूसरे से भी मेरी नहीं बनी--निश्चय ही मैं एक व्यभिचारिणी स्त्री थी!" दो लड़कियाँ परम आनन्द से मुसकराती और बातें करती चली जा रही थीं। "निश्चय ही ये प्रेम की चर्चा कर रही हैं और प्रेम की कल्पना से प्रसन्न हैं। उन्हें क्या पता कि प्रेम का कैसा भीषण परिणाम हो सकता है! और ये तीन लड़के कितने उल्लास के साथ किलकारियाँ भरते हुए खेल रहे हैं। सेरेज़ा! क्या वह भी खेल रहा होगा? पर वह तो अपने पिता के कड़े शासन में क़ैद है। मैं अपना सब कुछ गँवाने पर भी उसे नहीं पा सकी। यह सब व्रान्सकी के कारण हुआ। यदि वह वापस न आया, तो सब समाप्त हो जायगा! पर क्यों? नहीं, मुझे उसकी कोई परवाह नहीं है। मैं डाली के पास जाऊँगी और उससे कहूँगी--'प्यारी डाली, मैं अपराधिनी अवश्य हूँ, पर साथ ही मैं बहुत दुःखिनी भी हूँ; क्या तुम मेरी सहायता नहीं करोगी?"

कुछ देर बाद जब वह आब्लान्सकी के मकान के पास पहुँची, तब गाड़ी से उतरकर भीतर गई। बाहर के कमरे में एक नौकर से पूछने पर मालूम हुआ कि डाली किटी के साथ बैठी बातें कर रही है। आना जब भीतर गई, तब किटी उसके आने का संवाद पाकर वहाँ से उठकर चली गई थी। डाली ने कहा--"तुम अभी यहीं हो! मैं स्वयं तुमसे मिलने का विचार कर रही थी। स्टीवा का एक पत्र मुझे मिला है।"

"हाँ, उसका एक तार भी आया था। पर नौकर ने मुझसे कहा था कि तुमसे मिलने कोई स्त्री आई हुई थी!"

"हाँ, हाँ, किटी आई है। वह भीतर बच्चों के कमरे में है।"

आना सोचने लगी--"किटी मुझसे नहीं मिलना चाहती; क्यों? इसलिए कि वह व्रान्सकी से प्रेम करती थी, और मेरे कारण व्रान्सकी उससे अलग हो गया। पर उसे क्या पता था कि जिस व्यक्ति से वह प्रेम करती थी वह इतना नीच और ओछा निकलेगा! मैं भी नहीं जानती थी। उसके खातिर सर्वस्व खोये बैठी हूँ, पर वह--कुछ भी हो, मैं यहाँ आई किसलिए हूँ!" इतने में डाली भीतर जाकर स्टीवा का पत्र ले आई और आना के हाथ में उसने वह पत्र दे दिया। आना ने उसे पढ़ा। वह तलाक़ के सम्बन्ध में था। स्टीवा ने लिखा था कि केरेनिन तलाक़ के लिए राज़ी नहीं होता, फिर भी वह (स्टीवा) अभी निराश नहीं हुआ, और पूरी चेष्टा कर रहा है। पत्र पढ़कर आना ने कहा--"मैं पहले से ही यह बात जानती थी। पर मैं इन सब बातों के सम्बन्ध में अब एकदम उदासीन हो गई हूँ।"

डाली ने कहा--"क्यों? अभी से निराश होने का कोई कारण नहीं है।"

"पर मेरे लिए आशा और निराशा सब समान हैं। कुछ भी हो; अच्छा, यह तो बताओ, किटी मुझे देखकर क्यों छिप गई है?"

"नहीं, नहीं, यह बात नहीं है। उसका बच्चा भी उसके साथ है, इसलिए वह अभी आती ही होगी। यह देखो वह आ पहुँची है।"

डाली भीतर जाकर किटी को समझा-बुझाकर आना से मिलने के लिए राज़ी कर आई थी। किटी अत्यन्त संकुचित भाव से आना के पास गई, और उसकी ओर उसने अपना हाथ बढ़ाया। उसने लजाते हुए कहा--"मुझे बहुत प्रसन्नता हुई--" वास्तव में आना का सुन्दर, गंभीर और विषाद-म्लान मुख देखकर किटी उसके प्रति अपना सारा विद्वेष भूल गई।

आना बोली--"तुम मुझसे मिलना नहीं चाहती थीं, मैं जानती हूँ। इस बात से मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। अब किसी भी बात से बुरा मानने की आदत मेरी नहीं रही। पर तुम सुस्त जान पड़ती हो। तुम्हारा स्वास्थ्य शायद इस बीच अच्छा नहीं रहा।" इस पर डाली ने किटी की बीमारी और उसके बच्चे की चर्चा चला दी। पर आना इन सब बातों में किसी प्रकार की दिलचस्पी नहीं ले रही थी। रास्ते में उसने सोचा था कि वह डाली से हृदय की सब बातें खोलकर कहेगी, पर अब एक भी बात कहने की इच्छा उसके मन में नहीं रह गई थी। उसे ध्रुव विश्वास हो गया था कि उसके भीतर की दशा की यथार्थता को कोई समझ नहीं सकता, इसलिए इस सम्बन्ध में कोई भी बात मुँह से निकालना व्यर्थ है।

जब वह लौट चलने के विचार से उठ खड़ी हुई, तो उसने किटी की ओर देखकर कहा--"तुमसे मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। तुम्हारे विषय में मैं बहुत-से व्यक्तियों से बहुत कुछ सुन चुकी हूँ। तुम्हारे पति ने भी मुझसे तुम्हारी चर्चा की थी। वे मुझसे मिलने आये थे। मैं उनके व्यक्तित्व से बहुत प्रसन्न हुई। वे आजकल हैं कहाँ?"

किटी को यह ताड़ने में देर न लगी कि आना उसके हृदय को चोट पहुँचाने के उद्देश्य से ही इस प्रकार की बातें कर रही है। फिर भी उसने शान्त भाव से उत्तर दिया--"वे आजकल देहात गये हुए हैं।"

"उन्हें मेरी याद दिलाना। अवश्य! भूलना मत!"

किटी ने अत्यन्त करुणा-भरी दृष्टि से आना की ओर देखते हुए कहा––"मैं नहीं भूलूँगी।"

आना के चले जाने पर किटी ने डाली से कहा––"आना अभी तक वैसी ही सुन्दरी है, उसके व्यक्तित्व का आकर्षण अभी तक वैसा ही सम्मोहक है! पर आज उसके मुख के हाव-भाव और उसकी प्रत्येक बात और व्यवहार से, न जाने क्यों, मुझे ऐसा जान पड़ा है कि वह किसी कारण से बहुत ही दुःखी, बहुत ही विकल, निराश और उदास है। मुझे ऐसा लग रहा था कि वह रोने ही को है।"

३४

आना गाड़ी में बैठकर जब वापस जाने लगी, तब उसका चित्त पहले से अधिक उदास हो गया था। डाली के यहाँ आने पर किटी ने उससे मुँह चुराना चाहा था, इस बात से उसके हृदय में अपमान का काँटा नये सिरे से चुभने लगा था। वह सोचने लगी—"डाली और किटी, दोनों मुझे इस तरह देख रही थीं जैसे मैं कोई घृणित कीट होऊँ! ....और यह आदमी दूसरे आदमी से इस प्रकार घुलकर बातें करने में क्या सुख पा रहा है? अपने मन की बात दूसरे को समझा सकना क्या सम्भव है? अच्छा हुआ जो डाली से मैंने अपने विषय की कोई बात नहीं कही। सब व्यर्थ है! मेरी दुर्गति से परिचित होकर वह मन ही मन प्रसन्न होती और मेरी हँसी उड़ाती। किटी और भी अधिक आनन्दित होती। वह मुझसे ईर्ष्या करती है और घृणा भी। मुझे वह एक बाजारू स्त्री समझने लगी है। यदि मैं ऐसी होती, तो उसके पति को फाँसने में मुझे देर न लगती। मैं अभी चाहूँ तो ऐसा कर सकती हूँ, और वह टापती रह जायगी। पर वास्तव में मैं इस हद तक पतित नहीं हूँ; फिर भी व्रान्सकी के कारण मेरा घोर नैतिक पतन हो चुका है। ....यह कौन है जो मुझे देखकर सिर पर से टोपी उतार रहा है? वह मुझे कोई दूसरी स्त्री समझकर भ्रम में पड़ गया है। उसने सोचा था कि वह मुझे जानता है। सच बात तो यह है कि मुझे संसार में कोई भी नहीं जानता। मैं स्वयं अपने को नहीं जान पाई हूँ! और ये दो लड़के इस गन्दे 'आइस-क्रीम' को खाते हुए इतने प्रसन्न क्यों हो रहे हैं? ठीक है, संसार में प्रत्येक व्यक्ति कुछ मीठी या चटपटी चीज चाहता है। चाकलेट की मिठाई न मिले, तो गन्दा 'आइस-क्रीम' ही सही! किटी का भी यही हाल रहा। उसे व्रान्सकी न मिल सका, तो लेविन से ही संतोष करना पड़ा। संसार के सब लोग एक-दूसरे से घृणा करते हैं, दूसरे की दुर्दशा या विनाश देखकर प्रसन्न होते हैं। यह देखा, ये गाड़ीवाले किस तरह एक दूसरे को गालियाँ दे रहे हैं! यही दशा हम सबकी है। गिर्जे की घंटी बज रही है। क्यों? लोग प्रार्थना के लिए गिर्जे में जावेंगे? प्रार्थना के लिए! हुँ:! सब झूठे और

ढोंगी हैं। सब जानते हैं कि हम एक-दूसरे से घृणा करते हैं, पर इस बात को छिपाने की भरपूर चेष्टा करते रहते हैं।....'टचूटकिन बाल सँवारनेवाला!' 'टचूटकिन!' यह कैसा विचित्र नाम है! मैं घर जाकर उससे कहूँगी कि आज मैंने टचूटकिन के यहाँ जाकर बाल ठीक कराये हैं। यह सोचकर वह मुसकराई। पर तत्काल उसे स्मरण हो आया कि अब संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं रह गया जिससे वह हास-परिहास अथवा स्नेह की कोई बात कर सके। "पर मेरे पास अब हास-परिहास की कोई बात ही कहाँ रह गई है! सच तो यह है कि संसार में कहीं भी हास-आनन्द और राग-रंग नहीं है। जो लोग हँसी की बातें सुनाते हैं और जो उनकी बातों पर हँसते हैं, वे सब झूठे हैं; वे अपने आपको और एक-दूसरे को ठगते हैं।"

इस तरह की बातें सोचने में वह ऐसी तन्मय हो गई थी कि व्रान्सकी को भेजे हुए 'नोट' और तार की बात ही एकदम भूल गई थी। घर पहुँचने पर जब चौकीदार उसके पास दौड़ा हुआ आया, तब उसे उस बात की याद आई। उसने पूछा—"कोई उत्तर आया है क्या?"

चौकीदार ने उसके हाथ में एक तार दिया। उसमें लिखा था—"मैं दस बजे रात के पहले नहीं लौट सकूंगा—व्रान्सकी।"

"और जो आदमी चिट्ठी लेकर गया था, क्या वह अभी तक नहीं लौटा?"

"जी नहीं।"

"अच्छी बात है"—उसने अपने मन में कहा—"ऐसी दशा में मुझे स्वयं उसके पास जाना होगा। मेरे वहाँ जाने से वह जल उठेगा, यह मैं जानती हूँ, और मैं यही चाहती भी हूँ। उससे सदा के लिए अलग होने से पहले मैं अपने मन की बातें एक बार साफ़-साफ़ कह देना चाहती हूँ। उसके प्रति जैसी घृणा मेरे भीतर जाग पड़ी है, वैसी कभी किसी के प्रति नहीं जगी। इस समय निश्चय ही वह सोरोकिना के साथ राग-रंग की बातें कर रहा होगा! पापी, नीच कहीं का! अच्छी बात है। मैं अभी रेलवे स्टेशन जाती हूँ। यदि वह वहाँ नहीं मिला, तो मैं सीधे उसकी मा के यहाँ जाऊँगी जहाँ वह प्रेमालाप में अपने आपको भूला हुआ होगा, और उसकी सारी बातों का भण्डाफोड़ कर दूँगी। सोरोकिना को अभी निश्चय ही इस

बात की ख़बर नहीं है कि इस व्यक्ति ने किटी को किस प्रकार धोखा दिया, और—और—मेरे साथ कैसा व्यवहार किया।"

रेलगाड़ी का समय हो चला था। भोजन तैयार था, पर उसने उसे अच्छी तरह से सूँघा तक नहीं। हड़बड़ी के साथ उसने अपने 'हैण्डबैग' में यात्रा के लिए आवश्यक कुछ चीज़ें रख लीं। उसके मन में अस्पष्ट रूप से यह विश्वास जम गया था कि अब वह मास्को लौटकर नहीं आवेगी। व्रान्सकी की मा के यहाँ जाकर व्रान्सकी की सब बातों की पोल खोलने के बाद वह कहाँ जावेगी, यह वह स्वयं नहीं जानती थी।

बाहर गाड़ी तैयार थी। आना उस पर सवार हुई। उसके मना करने पर भी पीटर नाम का एक नौकर भी गाड़ी के 'बाक्स' में बैठकर उसके साथ हो लिया। कोचवान गाड़ी को तेज़ चाल से हाँकता हुआ ले चला। रास्ते में एक शराबी को पकड़कर पुलिस के दो सिपाही लिये चले जा रहे थे। शराबी धक्के खा रहा था और ठीक तरह से खड़ा नहीं हो पाता था। आना सोचने लगी—"इस शराबी ने शराब पीने के पहले अवश्य ही यह सोचा होगा कि वह सब दुःखों को भूलकर एक अपूर्व मधुमय सुख का अनुभव करेगा। यही भूल व्रान्सकी ने और मैंने की थी जब हम दोनों एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होकर प्रेम-रस पान करने के लिए अत्यन्त अधीर और उतावले हो उठे थे। वह क्यों मुझ पर आसक्त हुआ था? क्यों मेरे नियमित जीवन से घसीटकर उसने मुझे इस दलदल में फँसाया? सच बात यह थी कि वह प्रेम से उतना प्रेरित नहीं हुआ था, जितना अपने अहंभाव की तृप्ति के लिए उत्सुक हुआ था। वह एक अच्छे कुल-शील और मान-मर्यादावाली विवाहिता नारी को अपने वश में करके विजयी बनने के लिए इच्छुक था, और उसकी इस इच्छा में उसे पूरी सफलता मिल गई। उसके हृदय में प्रेम का भाव अवश्य था, नहीं तो मैं क्यों आकर्षित होती! पर प्रेम की पिपासा की अपेक्षा अपने अहंभाव की तृप्ति की आकांक्षा उसके मन में अधिक प्रबल थी। वह इस बात के लि: गर्व का अनुभव किया करता था और लोगों के आगे शेखी बघारता था कि मेरे समान नारी पूर्णरूप से उसके वश में हो गई है। अब यह भूतकाल की बात हो गई है। अब उसका वह गर्व समाप्त हो चला है। अब वह मुझसे उकता गया है। अब भी मेरे प्रति उसके हृदय में प्रेम का भाव अवशिष्ट अवश्य है, पर जैसा कि अँगरेज़ लोग कहा करते हैं, The zest is gone! प्रेम का सारा मज़ा

अब जाता रहा! मैं ज्यों-ज्यों उसे अपने प्रेम के बन्धन में सघन रूप से जकड़ने की चेष्टा करती जाती हूँ, त्यों-त्यों वह मुझसे मुक्त होने के लिए अधिक छटपटाने लगता है। वह मुझसे कहता है कि मैं अकारण ईर्ष्यालु हो उठी हूँ। वह यह नहीं जानता कि मैं ईर्ष्यालु नहीं, बल्कि असन्तुष्ट हूँ। और अब मेरे असन्तोष का कोई भी उपचार नहीं हो सकता। मान लिया जाय कि अलेक्से अलेक्जेण्ड्रोविच ने मुझे तलाक़ दे दिया, और सेरेज़ा को भी मैंने पा लिया, और व्रान्सकी से मेरा विवाह हो गया, तो ऐसा होने से क्या मेरा असन्तोष दूर हो जायगा? तब क्या किटी मुझसे घृणा करना छोड़ देगी? क्या सेरेज़ा के मन से यह प्रश्न दूर हो जायगा कि मैंने दो व्यक्तियों से क्यों पति-पत्नी का सम्बन्ध रखा? और तब क्या व्रान्सकी के मन का भाव मेरे प्रति बदल जायगा? क्या प्रेमरस का कोई नया सुख उसे प्राप्त होने लगेगा? नहीं! नहीं! यह असम्भव है। हम दोनों जीवन के जिस ग़लत रास्ते पर पग बढ़ा चुके हैं, अब किसी भी उपाय से वहाँ से लौट चलने की सम्भावना नहीं है। कोई अज्ञात प्राकृतिक नियम हम दोनों को एक दूसरे से छिन्न-भिन्न कर रहा है। मैं उसके असन्तोष और दुःख का कारण बन गई हूँ, और वह मेरे असन्तोष का कारण बन गया है। हम दोनों के प्रेम का बाहरी आवरण फट चुका है, और उसके भीतर घृणा नग्न रूप में व्यक्त हो पड़ी है। हम सब संसार में केवल एक-दूसरे से घृणा करने और स्वयं अपने आपको पीड़ित करने के लिए उत्पन्न हुए हैं! हम सब स्वार्थ के जाल में स्वयं भी जकड़े रहते हैं और दूसरों को जकड़ने की चेष्टा करते रहते हैं। पहले मैं समझती थी कि सेरेज़ा से अलग होने पर मैं जी नहीं सकूँगी, पर अपने स्वार्थसुख के लिए, गन्दे प्रेम की प्यास को बुझाने के लिए, मैं उसे छोड़कर व्रान्सकी के साथ कुछ दिनों तक बड़े आराम से रही और सेरेज़ा की बात ही एकदम भूल गई! संसार के सभी मनुष्यों का यही हाल है—संसार में सर्वत्र स्वार्थ और घृणा का राज्य छाया हुआ है!"

गाड़ी निज़नी स्टेशन पर पहुँच गई। कुलियों ने आकर उसे घेर लिया। वह इस बीच भूल गई थी कि उसे कहाँ जाना है, और वह स्टेशन पर क्यों आई है। पीटर ने कहा—"क्या मैं टिकट ख़रीद लाऊँ?" आना ने अन्यमनस्क होकर उत्तर दिया—"हाँ।"

पीटर टिकट ख़रीदने चला गया। आना गाड़ी से उतरकर भीड़ के बीच से होकर फ़र्स्ट क्लास वेटिंग-रूम की ओर अत्यन्त अनमने

भाव से चलने लगी। भीतर जाकर वह एक कौच पर बैठ गई। तरह-तरह की चिन्तायें उसके मस्तिष्क में छाया चित्रों के समान मँड़रा रही थीं। वेटिंग-रूम के भीतर आने-जानेवाले व्यक्तियों को देखकर वह मन ही मन खीझ उठती थी। स्टेशन का प्रत्येक व्यक्ति उसे छाया-मूर्त्ति के समान लगता था।

बीच-बीच में गहन मानसिक अन्धकार में भी उसे आशा की झलक दिखाई देती थी। अब भी जीवन नये रूप में, सुन्दर ढंग से चल सकता है, व्रान्सकी अपनी पिछली भूलें स्वीकार करके उसे नये सिरे से प्यार कर सकता है, इस कल्पना पर विश्वास करने की इच्छा उसके मन में अस्पष्ट रूप से जाग पड़ती थी। टिमटिमाते हुए दीये की तरह कभी उसकी आशा का प्रदीप एकदम मन्द पड़ जाता था और कभी पूर्ण ज्योति से जल उठता था। पर उसका अन्तर्मन कह रहा था कि दीये का तेल अब समाप्ति पर है, और समय रहते नया तेल मिलने की संभावना नहीं के बराबर है।

कहा—"हे भगवान् ! मैं कहाँ जा रही हूँ ?" बहुत दूर जाकर जब प्लेटफ़ार्म की सीमा समाप्त हुई, तब वह ठहर गई।

अकस्मात् प्लेटफ़ार्म में जैसे भूकम्प आगया। सामने से एक मालगाड़ी आ रही थी। उसी क्षण आना को सहसा स्मरण हो आया कि जिस दिन वह व्रान्सकी से पहले-पहल मास्को के स्टेशन में मिली थी, उसी दिन एक आदमी गाड़ी से कटकर मर गया था। उसने मन ही मन कहा—"ठीक है ! यही उपाय सबसे अच्छा है ! मेरे मन के भीतर यह बात थी, फिर भी न जाने क्यों इतनी देर तक उसे मैं भूली हुई-सी थी।" यह सोचकर वह पानी की टंकी की बग़लवाली सीढ़ियों से होकर शीघ्रता से नीचे पटरियों पर उतरी।

गाड़ी चली आ रही थी। उसके सबसे आगेवाले 'ट्रक' के अगले और पिछले पहियों के बीच का भाग उसका लक्ष्य बना हुआ था। वह मन ही मन कह रही थी—"ठीक बीच में ! फिर बस ! इस उपाय से मैं उसकी अवज्ञा के लिए दण्ड दूँगी, और सबसे—स्वयं अपने से मुक्ति पा जाऊँगी !" पहला 'ट्रक' उसके सामने आते ही वह पहियों के बीच में गिर पड़ने को तैयार हुई, पर उसके कन्धे से जो छोटा-सा लाल 'बैग' झूल रहा था, उसे फेंकने की चेष्टा में देर हो गई। इसलिए उसे दूसरे 'ट्रक' की प्रतीक्षा करने के लिए बाध्य होना पड़ा। अब वह पूर्णतया तैयार होकर स्थिरतापूर्वक खड़ी हो गई। उसने दाहने हाथ की तर्जनी से अपने हृदय के सामने 'क्रास' का सांकेतिक चिह्न अंकित किया। बचपन में उसे नियमित रूप से ईसा मसीह की यादगार में ऐसा करना सिखाया गया था। इसलिए इस समय भी उक्त चिह्न अंकित करते हुए उसकी मानसिक आँखों के आगे अपने शैशवकालीन जीवन की सब सुन्दर और सुखकर स्मृतियाँ मनोमोहक कल्पना-चित्रों के रूप में अत्यन्त शीघ्र गति से उद्घाटित होती चली गईं। पर उसकी आँखें एक पल के लिए भी दूसरे 'ट्रक' के पहियों पर से नहीं हटीं। ज्यों ही दूसरा 'ट्रक' सामने आया, त्यों ही वह 'बैग' को फेंककर अपने दोनों हाथों को फैलाकर उसके पहियों के बीच में इस प्रकार कूद पड़ी जैसे कोई तैराक पानी में कूदता है। इसके बाद उठ खड़े होने की चेष्टा में उसने अपने दोनों घुटने टेके। पर अकस्मात् वह आतंकित हो उठी। "यह क्या ! मैं कहाँ हूँ ? क्या कर रही हूँ ? क्यों ?" यह सोचकर वह पीछे को हटकर उठना ही चाहती थी कि इतने में एक विराट् और विष्करुण जड़ पदार्थ उसके सिर पर भयंकर रूप से टकराया और

کتب خانہ

جامعہ عثمانیہ

[illegible]

۱- اراکین مجلس اعلیٰ، مجلس [illegible] ایک وقت میں [illegible] کتابیں [illegible]

مجلس تعلیمات و نصاب [illegible] کتابیں [illegible] لے سکیں گے۔

۲- اساتذہ جامعہ عثمانیہ [illegible] ایک وقت میں [illegible] کتابیں [illegible] لے سکیں گے۔

اور اراکین [illegible] کتابیں [illegible]

۳- طلبائے ایم اے، ایل ایل بی [illegible] ایک وقت میں دو کتابیں لے سکیں گے۔

طلبائے [illegible] ایک کتاب [illegible]

[illegible] کتابیں [illegible] واپس [illegible]

۴- مدت مقررہ پر کتابیں واپس نہ کی جائیں [illegible]

ایک آنہ یومیہ فی کتاب [illegible]

۵- [illegible] کتابیں [illegible]

[illegible]

۶- کتابیں [illegible]

[illegible]